दक्ष®



2023

(RSSB)
राजस्थान
कर्मचारी
चयन
बोर्ड

2021,
2018
एवं 2015
के प्रश्न-पत्र
सम्पूर्ण हल एवं
व्याख्या सहित

A Complete
Book on

# कृषि पर्यवेक्षक

## सामान्य हिन्दी
## राजस्थान का सामान्य ज्ञान, इतिहास एवं संस्कृति

Part I & II


- एम. के. यादव
- आचार्य संदीप मालाकार


Buy Online at : WWW.DAKSHBOOKS.COM

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड द्वारा आयोजित

# कृषि पर्यवेक्षक सीधी भर्ती परीक्षा हेतु

# पाठ्यक्रम

## भाग I : सामान्य हिन्दी

**प्रश्नों की संख्या : 15** **पूर्णांक : 45**

1. दिये गये शब्दों की संधि एवं शब्दों का संधि-विच्छेद।
2. उपसर्ग एवं प्रत्यय-इनके संयोग से शब्द - संरचना तथा शब्दों से उपसर्ग एवं प्रत्यय को पृथक् करना, इनकी पहचान।
3. समस्त (सामासिक) पद की रचना करना, समस्त (सामासिक) पद का विग्रह करना।
4. शब्द युग्मों का अर्थ भेद।
5. पर्यायवाची शब्द और विलोम शब्द।
6. शब्द शुद्धि - दिये गये अशुद्ध शब्दों को शुद्ध लिखना।
7. वाक्य शुद्धि - वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को छोड़कर वाक्य संबंधी अन्य व्याकरणिक अशुद्धियों का शुद्धिकरण।
8. वाक्यांश के लिये एक उपयुक्त शब्द।
9. पारिभाषिक शब्दावली - प्रशासन से सम्बन्धित अंग्रेजी शब्दों के समकक्ष हिन्दी शब्द।
10. मुहावरे - वाक्यों में केवल सार्थक प्रयोग अपेक्षित है।
11. लोकोक्ति - वाक्यों में केवल सार्थक प्रयोग अपेक्षित है।

## भाग II : राजस्थान का सामान्य ज्ञान, इतिहास एवं संस्कृति

**प्रश्नों की संख्या : 25** **पूर्णांक : 75**

1. राजस्थान की भौगोलिक संरचना - भौगोलिक विभाजन, जलवायु, प्रमुख पर्वत, नदियाँ, मरुस्थल एवं फसलें।
2. राजस्थान का इतिहास

   **सभ्यताएँ** - कालीबंगा एवं आहड़।

   **प्रमुख व्यक्तित्व** - महाराणा कुंभा, महाराणा सांगा, महाराणा प्रताप, राव जोधा, राव मालदेव, महाराजा जसवंतसिंह, वीर दुर्गादास, जयपुर के महाराजा मानसिंह-प्रथम, सवाई जयसिंह, बीकानेर के महाराजा गंगासिंह इत्यादि।

   राजस्थान के प्रमुख साहित्यकार, लोक कलाकार, संगीतकार, गायक कलाकार, खेल एवं खिलाड़ी इत्यादि।
3. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में राजस्थान का योगदान एवं राजस्थान का एकीकरण।
4. विभिन्न राजस्थानी बोलियाँ, कृषि, पशुपालन क्रियाओं की राजस्थानी शब्दावली।
5. कृषि, पशुपालन एवं व्यावसायिक शब्दावली।
6. लोक देवी-देवता - प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय।
7. प्रमुख लोक पर्व, त्योहार, मेले - पशुमेले।
8. राजस्थानी लोक कथा, लोक गीत एवं नृत्य, मुहावरे, कहावतें, फड, लोक नाट्य, लोक वाद्य एवं कठपुतली कला।
9. विभिन्न जातियाँ - जन जातियाँ।
10. स्त्री-पुरुषों के वस्त्र एवं आभूषण।
11. चित्रकारी एवं हस्तशिल्पकला - चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ, भित्ति चित्र, प्रस्तर शिल्प, काष्ठ कला, मृदभाण्ड (मिट्टी) कला, उस्ता कला, हस्त औजार, नमदे-गलीचे आदि।
12. स्थापत्य - दुर्ग, महल, हवेलियाँ, छतरियाँ, बावड़ियाँ, तालाब, मंदिर-मस्जिद आदि।
13. संस्कार एवं रीति रिवाज।
14. धार्मिक, ऐतिहासिक एवं पर्यटन स्थल।

## प्रश्न पत्र का पैटर्न

1. वैकल्पिक प्रकार का एक प्रश्न पत्र होगा।
2. अधिकतम पूर्णांक 300 अंक होगा।
3. प्रश्न पत्र में प्रश्नों की संख्या 100 होगी।
4. प्रश्न पत्र की अवधि 2 घन्टे होगी।
5. प्रत्येक प्रश्न के 3 अंक होंगे।
6. प्रत्येक गलत उत्तर के लिए 1/3 अंक काटा जायेगा।

पाठ्यक्रम के प्रकाशन में हालांकि पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी अभ्यर्थी 'राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड' द्वारा प्रकाशित मूल पाठ्यक्रम से मिलान अवश्य कर लें, अन्यथा किसी गलती के लिए प्रकाशन जिम्मेदार नहीं होगा।

# अनुक्रमणिका


अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

**Part-I : सामान्य हिन्दी 1–140**

**1** शब्दों की संधि एवं शब्दों का संधि-विच्छेद ..... 1
- ❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 18

**2** उपसर्ग के संयोग से शब्द-संरचना तथा शब्दों से उपसर्ग को पृथक करना और उनकी पहचान करना ..... 23
- ❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 29

**3** प्रत्यय के संयोग से शब्द-संरचना तथा शब्दों से प्रत्यय को पृथक करना और उनकी पहचान करना ..... 33
- ❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 41

**4** समस्त (सामासिक) पद की रचना करना, समस्त (सामासिक) पद का विग्रह करना ..... 44
- ❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 56

**5** शब्द-युग्मों का अर्थ भेद ..... 60
- ❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 63
- ❖ महत्त्वपूर्ण पर्यायवाची शब्दों के परीक्षोपयोगी उदाहरण ..... 66

**6** पर्यायवाची शब्द ..... 66
- ❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 72

**7** विलोम शब्द ..... 75
- ❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 79

**8** शब्द-शुद्धि - दिये गये अशुद्ध शब्दों को शुद्ध लिखना ..... 82
- ❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 88

**9** वाक्य-शुद्धि ..... 91
- ❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 101

**10** वाक्यांश के लिए एक उपयुक्त शब्द ..... 104
- ❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 111

**11** पारिभाषिक शब्दावली - प्रशासन से संबंधित अंग्रेजी शब्दों के समकक्ष हिन्दी शब्द ..... 115
- ❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 123

**12** मुहावरे वाक्य में केवल सार्थक प्रयोग अपेक्षित है ..... 126
- ❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 130

**13** लोकोक्तियाँ वाक्य में केवल सार्थक प्रयोग अपेक्षित है ..... 133
- ❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 139

**Part-II : राजस्थान का सामान्य ज्ञान, इतिहास एवं संस्कृति 141–408**

**1** राजस्थान का भौगोलिक विभाजन, प्रमुख पर्वत
[Geographical Division of Rajasthan, Major Mountains] ..... 141
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 151

**2** राजस्थान की जलवायु [Rajasthan's Climate] ..... 153
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 158

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर


**3** राजस्थान की प्रमुख नदियाँ एवं अन्य जल संसाधन [Major rivers and other Water Resources of Rajasthan] ..... 160
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 172

**4** राजस्थान में सूखा, अकाल एवं मरुस्थलीकरण [Drought, Famine and Desertification in Rajasthan] ..... 173
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 175

**5** राजस्थान में कृषि एवं प्रमुख फसलें [Agriculture and Major Crops in Rajasthan] ..... 176
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 186

**6** राजस्थान के इतिहास के महत्त्वपूर्ण स्रोत [Important Sources of History of Rajasthan] ..... 187
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 192

**7** राजस्थान की प्रमुख सभ्यताएँ [Major Civilizations of Rajasthan] ..... 193
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 198

**8** राजस्थान के राजवंशों के प्रमुख राजनीतिक व्यक्तित्व [Prominent Political Personalities of the Dynasties of Rajasthan] ..... 200
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 202,204,213,219,225,229,232

**9** राजस्थानी साहित्य एवं प्रमुख साहित्यकार [Rajasthani Literature and Prominent Writers] ..... 233
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 239

**10** राजस्थान के लोक कलाकार, संगीतकार, गायक कलाकार, खेल एवं खिलाड़ी इत्यादि [Folk Artist, Musician, Singer, Sports & Sports Person of Rajasthan] ..... 240
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 253

**11** 1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान [Contribution of Rajasthan in the Revolution of 1857] ..... 256
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 259

**12** राजस्थान में सामाजिक एवं राजनीतिक जागरण [Social and Political awakening in Rajasthan] ..... 261
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 265

**13** राजस्थान के किसान व जनजातीय आंदोलनों का योगदान [Contribution of Peasant and Tribal Movements of Rajasthan] ..... 266
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 273

**14** राज्य के प्रजामण्डल आंदोलनों का योगदान [Contribution of State's Prajamandal Movements] ..... 274
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 278

**15** राजस्थान का एकीकरण [Integration of Rajasthan] ..... 279
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 283

**16** विभिन्न राजस्थानी बोलियाँ [Different Rajasthani Languages] ..... 284
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 288

अध्याय नं. अध्याय का नाम ..... पृष्ठ नम्बर

**17** कृषि व पशुपालन की राजस्थानी एवं व्यावसायिक शब्दावली [Rajasthani & Professional Vocabulary of Agriculture & Animal Husbandry] ..... 289
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 296

**18** राजस्थान के प्रमुख लोक-देवता एवं देवियाँ [Major Folk Gods and Goddesses of Rajasthan] ..... 298
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 301,304

**19** राजस्थान के प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय [Major Saints and Sects of Rajasthan] .... 305
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 309

**20** राजस्थान के प्रमुख लोकपर्व, त्योहार एवं मेले (पशुमेले) [Major Folk Festivals, Festivals and Fairs (Animal Fairs) of Rajasthan] ..... 310
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 315

**21** राजस्थानी लोक कथाएँ [Rajasthani Folk Tales] ..... 316
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 318

**22** राजस्थानी लोकगीत, वाद्य, नृत्य, नाट्य, फड़ एवं कठपुतली कला [Rajasthani Folklore, Instrumental, Dance, Drama, Phad and Puppet Art] ..... 319
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 322,326,332

**23** राजस्थानी मुहावरे एवं कहावतें [Rajasthani Idioms and Proverbs] ..... 333
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 341

**24** राजस्थान की विभिन्न जनजातियाँ [Different Tribes of Rajasthan] ..... 342
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 348

**25** राजस्थान में स्त्री-पुरुषों के वस्त्र एवं आभूषण [Clothing and Jewelery of Men and Women in Rajasthan] ..... 349
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 352

**26** राजस्थान चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ [Various Styles of Painting in Rajasthan] ..... 354
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 360

**27** राजस्थानी हस्तशिल्पकला [Rajasthani Handicraft] ..... 361
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 365

**28** राजस्थान में स्थापत्य कला [Architecture in Rajasthan] ..... 366
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 379

**29** राजस्थानी संस्कार एवं रीति-रिवाज [Rajasthani Rituals and Customs] .. 380
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 382

**30** राजस्थान में पर्यटन का विकास एवं प्रमुख धार्मिक पर्यटन केन्द्र [Development of Tourism in Rajasthan and Major religious Tourism Centers] ..... 384
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 400

**31** राजस्थान के ऐतिहासिक पर्यटन स्थल [Historical Tourist Places of Rajasthan] ..... 402
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर ..... 408

कृषि निदेशालय, राजस्थान, जयपुर द्वारा आयोजित

**Exam Date : 18-09-2021**

# कृषि पर्यवेक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2021

# सॉल्वड पेपर

**1. किस विकल्प के शब्द-युग्म का अर्थ असंगत है?**

(A) चाष-चास = नीलकंठ, खेती (जुताई)
(B) आपात-आपाद् = आकस्मिक, संकट
(C) कपिश-कपीश = मटमैला, हनुमान
(D) त्वाष्टी-त्वाष्ट्री = संतुष्ट, नौकर [*]

**व्याख्या**—इन शब्दों का स्पष्टीकरण निम्न प्रकार से है—

| शब्द | | अर्थ |
|---|---|---|
| चाष | = | नीलकंठ |
| चास | = | खेत की जुताई |
| आपाद् | = | चरण से |
| आपात | = | पतन |
| कपिश | = | बादल |
| कपीश | = | वानर |
| त्वाष्टी | = | दुर्गा |
| त्वाष्ट्री | = | वह काल जब चन्द्रमा चित्रा नक्षत्र में होता है या विश्वामित्र की पुत्री संज्ञा का नाम। |

**2. किस विकल्प के समस्तपद का समास-विग्रह असंगत है?**

(A) तिरसठ – तीन और साठ
(B) मुनिश्रेष्ठ – श्रेष्ठ है जो मुनि
(C) पंचपात्र – पंच (पाँच) पात्रों का समूह
(D) देशभक्ति – देश की भक्ति [B]

**व्याख्या**—उपरोक्त में से मुनिश्रेष्ठ—'श्रेष्ठ है जो मुनि' विकल्प समस्त पद का समास विग्रह असंगत है।
मुनिश्रेष्ठ का सही समास विग्रह है—मुनियों में श्रेष्ठ
यहाँ 'अधिकरण तत्पुरुष' समास प्रयुक्त हुआ है।

**3. किस विकल्प का प्रशासनिक शब्द अपने अर्थ से सुमेलित नहीं है?**

(A) Autonomous – स्वायत्त (B) Cantonment – छावनी
(C) Insight – तटस्थता (D) Approval – अनुमोदन [C]

**व्याख्या**—उपरोक्त में से विकल्प (A), (B) एवं (D) के प्रशासनिक शब्द अपने अर्थों से सुमेलित हैं एवं विकल्प (C) Insight का अर्थ – अंतर्दृष्टि है।

**4. निम्न में से शुद्ध शब्द का चयन कीजिए—**

(A) मातृभुमि (C) अर्थछटा
(B) शेषशाई (D) रीत्यनुसार [D]

**व्याख्या**—उपरोक्त में से विकल्प (D) में शुद्ध शब्द 'रीत्यनुसार' का समास विग्रह है—रीति के अनुसार
अन्य शुद्ध शब्द हैं—मातृभूमि, शेषशायी, अर्थछटा।

**5. निम्न में से अशुद्ध वाक्य का चयन कीजिए—**

(A) मैंने राधा को एक पुस्तक समर्पित की।
(B) प्रत्येक व्यक्ति को सात्विक जीवन जीना चाहिए।
(C) कृपया दरवाजा बंद करने का कष्ट करें।
(D) यह काम कोई वकील से ही हो सकता है। [D]

**व्याख्या**—उपरोक्त में से विकल्प (D) अशुद्ध वाक्य है। ''यह काम कोई वकील से ही हो सकता है।'' यह वाक्य शुद्ध नहीं है।
इसका शुद्ध रूप है—यह काम कोई वकील ही कर सकता है।

**6. वाक्यांश के लिए एक शब्द के संदर्भ में असंगत विकल्प चुनिए—**

(A) कोई काम करने की इच्छा – चिकीर्षा
(B) बार-बार युद्ध करने की इच्छा – युयुत्सा
(C) विजय प्राप्ति की तीव्र इच्छा – चरिष्णु
(D) रचना करने की इच्छा – सिसृक्षा [C]

**व्याख्या**—वाक्यांश के लिए एक शब्द के संदर्भ में निम्न में से असंगत विकल्प (C) है।
विजय प्राप्त करने की इच्छा—'चरिष्णु' सही युग्म नहीं है।
चरिष्णु = चलने वाला (गतिमान)
अन्य विकल्प उपयुक्त हैं।

**7. असंगत सामासिक-युग्म का चयन कीजिए—**

(A) नवयुवक – कर्मधारय समास
(B) रुद्रप्रिया – बहुव्रीहि समास
(C) यथाविधि – तत्पुरुष समास
(D) भक्ष्याभक्ष्य – द्वन्द्व समास [C]

**व्याख्या**—उपरोक्त में से असंगत सामासिक युग्म विकल्प (C) है।
यथाविधि—में तत्पुरुष समास नहीं है।
'रुद्रप्रिया' शब्द में बहुव्रीहि समास है।
इसका समास विग्रह है—रुद्र की प्रिया (पार्वती)
'यथाविधि' का समास विग्रह है—विधि के अनुसार
इसमें 'यथा' अव्यय का प्रयोग किया गया है एवं इसमें अव्ययीभाव समास है।
'नवयुवक' में कर्मधारय समास है। इसका विग्रह है—'नव है जो युवक'।

**8. प्रत्यय से निर्मित शब्द के संदर्भ में असंगत विकल्प चुनिए—**

(A) ममेरा – संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय से निर्मित
(B) मुरेला – विशेषणवाचक तद्धित प्रत्यय से निर्मित
(C) मेधावी – कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय से निर्मित
(D) माननीय – विशेषणवाचक कृत् प्रत्यय से निर्मित [C]

**व्याख्या**—प्रत्यय से निर्मित शब्द के संदर्भ में असंगत विकल्प (C) है।
मेधा + वी = मेधावी
'वी' प्रत्यय 'क्रियावाचक कृत' प्रत्यय है—क्रिया का द्योतन करने वाले शब्द क्रियावाचक कृत प्रत्यय कहलाते हैं।

**9. अर्थ की दृष्टि से कौन-सी लोकोक्ति असंगत है?**

# कृषि पर्यवेक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2018

**Pattern of Question Paper :** [Date of Exam. 03.03.2019]

1. **कुल प्रश्नों की संख्या : 100 एवं पूर्णांक : 300**
2. **समय : 120 मिनट**
3. **प्रत्येक प्रश्न के चार वैकल्पिक उत्तर दिये गये हैं, जिन्हें क्रमशः (A), (B), (C), (D) अंकित किया गया है। अभ्यर्थी को सही उत्तर निर्दिष्ट करते हुए उनमें से केवल एक गोले अथवा बबल को उत्तर-पत्रक पर नीले बॉल प्वाइंट पेन से गहरा करना है।**
4. **प्रत्येक गलत उत्तर का प्रश्न अंक का 1/3 भाग काटा जायेगा। गलत उत्तर से तात्पर्य अशुद्ध उत्तर या किसी प्रश्न के एक से अधिक उत्तर से है।**

**1. भारत में किस फल का सबसे ज्यादा उत्पादन होता है—**

(A) अमरूद (B) केला
(C) अनार (D) आँवला **[B]**

**व्याख्या**— प्रश्नगत दिये गये विकल्पों के अनुसार भारत में केले का सर्वाधिक उत्पादन होता है। भारत में केले का सबसे अधिक उत्पादन तमिलनाडु में होता है। केले के अन्य प्रमुख उत्पादक राज्य गुजरात एवं महाराष्ट्र है। उल्लेखनीय है कि भारत में फलों के उत्पादन में आम का प्रथम स्थान है।

**2. गरीब आदमी का सन्तरा किसे कहा जाता है—**

(A) आलू (B) काशीफल
(C) टमाटर (D) मटर **[C]**

**व्याख्या**—'टमाटर' को गरीब आदमी का संतरा कहा जाता है। टमाटर सोलेनेसी कुल का पादप है। इसका वानस्पतिक नाम लाइकोपर्सिकोन एस्कुलेन्टम है। इसके फलों को सलाद, सब्जी, सूप, जूस, अचार आदि के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। उल्लेखनीय है कि टमाटर में जल, प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, कैल्शियम, फॉस्फोरस एवं विटामिन 'C' होता है।

**3. वीन्टर चेरी के नाम से कौन-सा औषधीय पौधा जाना जाता है—**

(A) अश्वगन्धा (B) गुलाब
(C) लीली (D) चान्दनी **[A]**

**व्याख्या**—औषधीय पौधा अश्वगंधा 'पीन्टर चेरी' के नाम से जाना जाता है। यह सोलेनी कुल का पौधा है। इसका वानस्पतिक नाम 'विथानिया सोमनीफैरा' है। घोड़े के मूत्र के समान गंध आने से इसका नाम अश्वगंधा पड़ा है। इस पौधे का उपयोग आयुर्वेदिक एवं यूनानी औषधियाँ बनाने में किया जाता है। इसकी खेती राजस्थान के नागौर, कोटा एवं झालावाड़ जिलों में की जाती है।

**4. ग्लेडियोलस फूल को क्या कहते हैं—**

(A) स्पाईक (B) गुच्छा
(C) स्थूल मंजरी (D) कैपिटुलस **[A]**

**व्याख्या**—ग्लेडियोलस फूल आइरिस परिवार में बारहमासी शंकुधारी (स्पाईक) फूलों के पौधों का एक जिन्स है। इसे कभी-कभी तलवार लिलि भी कहा जाता है। यह जीन एशिया, दक्षिण अफ्रीका, भूमध्यसागरीय यूरोप एवं उष्णकटिबंधीय अफ्रीका में होता है।

**5. हैड किस फसल का आर्थिक भाग है—**

(A) फूलगोभी (B) पत्तागोभी
(C) गाँठगोभी (D) अंकुरित ब्राकली **(*)**

**व्याख्या**—फूलगोभी बीज द्वारा प्रजणित एक वार्षिक पौधा है जिसके केवल ऊपरी भाग जिसे 'हेड' कहा जाता है को खाया जाता है। फूलगोभी की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण विकार एक खोखले तने, सिर में वृद्धि या बटन लगाना, छीलना, भूरा होना और पत्ती-टिप जलना है। फूलगोभी को प्रभावित करने वाले प्रमुख रोग- ब्लैक रोट, ब्लैक लेग, क्लब रूट, ब्लैक लीफ स्पॉट और डाउनी फफूंदी आदि रोग होते हैं।

**6. खीरावर्गी फसलों में पादप हार्मोन का सेक्स फोर्म बदलने के लिए कब छिड़काव करते हैं—**

(A) 2-4 सच्ची पत्ती अवस्था (B) 4-6 पत्ती अवस्था
(C) 6-8 पत्ती अवस्था (D) 9-11 पत्ती अवस्था **[A]**

**व्याख्या**—खीरावर्गी फसलों में पादप हॉर्मोन का सेक्स फॉर्म बदलने के लिये 2-4 सच्ची-पत्ती अवस्था में छिड़काव करते हैं। खीरावर्गी फसलों में लौकी, तोरई, खरबूज, खीरा, करैला, टिण्डा, कद्दू आदि मुख्य है। ये फसलें कम कैलोरी एवं सरलता से पचने वाली होने के साथ-साथ विटामिन्स, अमीनो अम्ल तथा खनिज लवणों का अच्छा स्रोत है।

**7. ''दुर्गापुरा मधु'' किस फसल से सम्बन्धित किस्म है—**

(A) तरबूज (B) खरबूजा
(C) गुलाब (D) खीरा **[B]**

**व्याख्या**—खरबूजा कुकुरबिटेसी कुल का पादप है। इसका वानस्पतिक नाम 'कुकुमिस मेलो' है। इसके फलों का उपयोग सलाद, सूप एवं अचार के रूप में किया जाता है। खरबूजे की उन्नत किस्में हैं-दुर्गापुरा मधु, पंजाब सुनहरी, पंजाब हाइब्रिड, अर्काजीत, हरा मधु, पूसा मधुरस, आर एम-43, आर एम-50, एम एच वाई-3, एम एच वाई-5 आदि।

**8. अंगूर में संघाई की कौन-सी विधि से सर्वाधिक उत्पादन प्राप्त होता है—**

(A) पंडाल (B) निफिन
(C) शीर्ष (D) टेलीफोन **[A]**

**व्याख्या**—अंगूर (वानस्पतिक नाम- वाइटिस विनिफेरा) वाईटेसी कुल का पादप है। इसके उत्पादन में शीर्ष, निफिन, टेलीफोन एवं पंडाल

# कृषि पर्यवेक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2015

**1. भूतानाड़ी राजस्थान के किस जिले में स्थित है—**
(A) बीकानेर (B) बाड़मेर
(C) जोधपुर (D) उदयपुर **[C]**
**व्याख्या**—भूतानाड़ी राजस्थान के जोधपुर जिले में स्थित है।

**2. राजस्थान में 'सुनहरी क्रांति' का संबंध है—**
(A) बागवानी उत्पादन (B) मसाला उत्पादन
(C) सरसों उत्पादन (D) मत्स्य उत्पादन **[A]**
**व्याख्या**—राजस्थान में सुनहरी क्रांति का सम्बन्ध बागवानी उत्पादन से है। अन्य क्रान्तियाँ निम्नलिखित हैं—
मसाला उत्पादन — बादामी क्रान्ति
सरसो उत्पादन — पीली क्रान्ति
मत्स्य उत्पादन — नीली क्रान्ति

**3. अरावली प्रदेश का विस्तार राजस्थान के किस जिले में नहीं है—**
(A) सिरोही (B) उदयपुर
(C) झालावाड़ (D) अजमेर **[C]**
**व्याख्या**—अरावली पर्वतमाला विश्व की प्राचीनतम पर्वत श्रेणियों में से एक है। यह उदयपुर, चित्तौड़गढ़, राजसमंद, डूँगरपुर, प्रतापगढ़, भीलवाड़ा, सीकर, झुँझुनूँ, अजमेर, सिरोही, अलवर, पाली व जयपुर (कुल 13 जिलों) से होकर गुजरती है। अरावली प्रदेश का विस्तार राजस्थान के झालावाड़ जिले में नहीं है।

**4. 'मारवाड़ रा परगना री विगत' नामक ग्रंथ के रचनाकार हैं—**
(A) सूर्यमल्ल मीसण (B) मुहणौत नैणसी
(C) दयालदास (D) दुरसा आढ़ा **[B]**
**व्याख्या**—'मारवाड़ रा परगना री विगत' मुहणोत नैणसी द्वारा रचित ग्रंथ है जिसमें मारवाड़ के राठौड़ वंश के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

**5. राजस्थान निर्माण की प्रक्रिया में गठित 'मत्स्य संघ' में सम्मिलित था—**
(A) डूँगरपुर (B) शाहपुरा
(C) धौलपुर (D) जैसलमेर **[C]**
**व्याख्या**— मत्स्य संघ का निर्माण 18 मार्च 1948 को अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली व नीमराणा (ठीकाना) को मिलाकर किया गया था। इसकी राजधानी अलवर, राज प्रमुख उदयभानसिंह (धौलपुर महाराजा) तथा प्रधानमंत्री शोभाराम कुमावत को बनाया गया।

**6. निम्नलिखित में से किस राजस्थानी बोली को ग्रियर्सन ने भीली बोली कहा है—**
(A) हाड़ौती (B) ढूँढ़ाड़ी
(C) बागड़ी (D) मालवी **[C]**
**व्याख्या**—बागड़ी बोली बाँसवाड़ा, डूँगरपुर जिलों तथा उदयपुर जिले के कुछ भागों में बोली जाती है। भीली इसकी सहायक बोली है।

**7. सीताबाड़ी का मेला लगता है—**
(A) अलवर (B) बारां
(C) डूँगरपुर (D) सवाई माधोपुर **[B]**
**व्याख्या**— सीताबाड़ी का मेला सीताबाड़ी केलवाड़ा (बारां) में भरता है। यह मेला प्रतिवर्ष जून माह में आयोजित होता है एवं भक्त दूर-दूर से आकर माता सीता व भगवान राम के मंदिर में दर्शन करते हैं।

**8. राजस्थान के लोक देवता हरभूजी का जन्म हुआ—**
(A) चित्तौड़गढ़ (B) जोधपुर
(C) जयपुर (D) नागौर **[D]**
**व्याख्या**—हरभूजी का जन्म मूंडेल गाँव नागौर में हुआ था। यह मेहाजी सांखला के पुत्र थे। बेंजटी गाँव (फलौदी, जोधपुर) में इनका स्थान है। यहाँ 'हडबूजी की गाड़ी' की पूजा होती है।

**9. 'मोकल जी के मंदिर' के नाम से प्रसिद्ध है—**
(A) समिद्धेश्वर प्रासाद (B) नगरी
(C) सतबीस देवरी (D) फतहप्रकाश महल **[A]**
**व्याख्या**—विजय स्तम्भ के निकट ही समिद्धेश्वर महादेव का भव्य प्राचीन मन्दिर है। मालवा के शासक परमारभोज ने इस मन्दिर का निर्माण करवाया था। इस मन्दिर को 'त्रिभुवननारायण एवं भोजजगती' भी कहते हैं।

**10. धातु की अर्द्ध अंडाकार कुंडी को भैंसे की खाल से मढ़कर चमड़े की डोरियों से कसकर लकड़ी के डंडों से बजाया जाने वाला लोकवाद्य कहलाता है—**
(A) नौबत (B) अलगोजा
(C) भपंग (D) मोरचंग **[A]**
**व्याख्या**—खाल से मढ़े हुए वाद्यों को अवनद्व वाद्य कहा जाता है। मृदंग, मादल, ढोलक, नौबत, नगाड़ा आदि अवनद्व वाद्य है।

**11. विवाह निश्चित होने पर लड़के वालों की तरफ से लड़की को भेजे जाने वाले उपहार कहलाते हैं—**
(A) पहरावणी (B) बरी-पड़ला
(C) टीका (D) रीत **[D]**
**व्याख्या**—विवाह निश्चित होने पर वर पक्ष की ओर से वधू को भेजे जाने वाले उपहार को 'रीत' कहा जाता है।

**12. बूँदी की चित्रकला शैली किस महाराजा के काल में चरम पर थी—**
(A) अजीत सिंह (B) किशन सिंह
(C) उम्मेद सिंह (D) मालदेव **[C]**
**व्याख्या**—बूँदी चित्रकला शैली हाड़ौती स्कूल की मूल शैली मानी जाती है। राव भावसिंह का काल बूँदी चित्रकला शैली का स्वर्णकाल माना जाता है। राव उम्मेदसिंह ने बूँदी दुर्ग के समीप ही 'चित्रशाला का निर्माण' करवाया।

# Part-I : सामान्य हिन्दी

# 1 शब्दों की संधि एवं शब्दों का संधि-विच्छेद

❖ 'संधि का अर्थ होता है—जुड़ना। वर्णों के परस्पर मेल (जुड़ने) पर उत्पन्न ध्वनि विकार को **संधि** कहते हैं।

❖ **संधि के भेद**—(1) स्वर (2) व्यंजन (3) विसर्ग

## 1. स्वर संधि

❖ स्वरों के परस्पर मेल से उत्पन्न ध्वनि विकार स्वर संधि कहलाता है।

### ओष्ठाकृति के आधार पर स्वरों के भेद

(1) **वृत्तामुखी स्वर**—ऑ, उ, ऊ, ओ, औ

(2) **अवृत्तामुखी स्वर**—अ, आ, इ, ई, ए, ऐ

❖ स्वर संधि को स्पष्ट करने के लिए हिन्दी व्याकरण में प्रयुक्त स्वरों के बारे में जानना आवश्यक है।

❖ हिन्दी में मूलतः 11 स्वर होते हैं। जैसे—
अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

### रचना या उत्पत्ति के आधार पर स्वरों के भेद

(1) मूल स्वर (2) संधि स्वर

**1. मूल स्वर**—जिन स्वरों की उत्पत्ति किन्हीं दूसरे स्वरों से नहीं हुई है, उन्हें 'मूल स्वर' कहते हैं। हिन्दी में इनकी संख्या चार है—
(1) अ (2) इ (3) उ (4) ऋ

**2. संधि स्वर**—मूल स्वरों के मेल से बने स्वरों को संधि स्वर कहा जाता है। इनमें रचना की दृष्टि से 2 भेद हैं—
(i) दीर्घ स्वर (ii) संयुक्त स्वर

**(i) दीर्घ स्वर**—जब दो समान स्वर मिलते हैं तो वे दीर्घ हो जाते हैं।
हिन्दी में 3 दीर्घ स्वर हैं—आ, ई, ऊ
इनकी रचना निम्न प्रकार हुई है—
✧ अ + अ = आ ✧ इ + इ = ई ✧ उ + उ = ऊ

**(ii) संयुक्त स्वर**—जब दो भिन्न-भिन्न स्वर मिलते हैं तो एक नया स्वर बनता है, उसे संयुक्त स्वर कहा जाता है।
हिन्दी में ए, ऐ, ओ, औ संयुक्त स्वर हैं।

❖ मात्रा की दृष्टि से इन्हें भी दीर्घ स्वरों की भाँति माना जाता है। इनकी रचना निम्न प्रकार से हुई है—
✧ अ/आ + इ = ए ✧ अ/आ + ए = ऐ
✧ अ/आ + उ = ओ ✧ अ/आ + ओ = औ

### संध्यक्षर (संधि अक्षर)

❖ संयुक्त स्वरों को 'संध्यक्षर' भी कहते हैं। मूल स्वरों के उच्चारण में जिह्वा अचल रहती है, जबकि संयुक्त स्वरों के उच्चारण में जिह्वा चलायमान अवस्था में रहती है।

❖ संयुक्त स्वर के उच्चारण में जिह्वा भी 'सरकती' रहती है इसलिए संयुक्त स्वर को **विसर्प (Glide)** भी कहते हैं।

### जिह्वा के आधार पर स्वरों के भेद

❖ स्वर के उच्चारण में जिह्वा का जो भाग अधिक क्रियाशील रहता है, इस आधार पर स्वरों के निम्न भेद होते हैं—
✧ **अग्र स्वर**—इ, ई, ए, ऐ, ऋ
✧ **मध्य स्वर**—अ
✧ **पश्च स्वर**—आ, उ, ऊ, ओ, औ

### स्वर तंत्रियों या कम्पन के आधार पर स्वरों के भेद

❖ मुँह में स्थित स्वर तंत्रियाँ जब कम्पन्न करती हैं तो उनके आधार पर निम्न भेद होते हैं—
✧ **घोष स्वर**—जब उच्चारण के समय स्वर तंत्रियों में कंपन/तनाव उत्पन्न हो तो घोष स्वर उच्चारित होता है।
**नोट—हिन्दी में सभी स्वर घोष माने जाते हैं।**
✧ **अघोष स्वर**—जब उच्चारण के समय स्वर तंत्रियों में कंपन/तनाव उत्पन्न नहीं हो तो अघोष स्वर उच्चारित होता है।
✧ **मर्मर स्वर**—घोष व अघोष स्वर के मध्य की स्थिति हो तो वह मर्मर स्वर होता है।

### स्वर संधि के प्रमुख भेद

(1) दीर्घ संधि (2) गुण संधि
(3) वृद्धि संधि (4) यण् संधि
(5) अयादि संधि (6) पूर्वरूप संधि
(7) पररूप संधि

**1. दीर्घ संधि**

**नियम**—जब दो समान स्वर अथवा एक ही स्वर के दो रूप मिलते हैं तो दीर्घ स्वर बनता है।

❖ हिन्दी भाषा में अ, इ, उ ह्रस्व तथा आ, ई, ऊ दीर्घ स्वर माने जाते हैं। इस संधि में दो समान या ह्रस्व एवं दीर्घ स्वर परस्पर मिलकर हमेशा दीर्घ स्वर का निर्माण करते हैं।

❖ जब ह्रस्व स्वर (अ, इ, उ) और दीर्घ स्वर (आ, ई, ऊ) एक-दूसरे के बाद आ जाएँ तो दोनों को मिलाकर उसी स्वर का दीर्घ स्वर (स्वरूप) (आ, ई, ऊ) हो जाता है।

❖ इस संधि में निम्नानुसार ध्वनि परिवर्तन होता है—

| | |
|---|---|
| ✧ अ + अ = आ | ✧ अ + आ = आ |
| ✧ आ + अ = आ | ✧ आ + आ = आ |
| ✧ इ + इ = ई | ✧ इ + ई = ई |
| ✧ ई + इ = ई | ✧ ई + ई = ई |
| ✧ उ + उ = ऊ | ✧ उ + ऊ = ऊ |
| ✧ ऊ + उ = ऊ | ✧ ऊ + ऊ = ऊ |

### 1. अ + अ = आ

| संधि पद | संधि-विच्छेद |
|---|---|
| अंत्याक्षरी | अंत्य + अक्षरी |
| अभयारण्य | अभय + अरण्य |
| सूर्यास्त | सूर्य + अस्त |
| रामावतार | राम + अवतार |
| वचनामृत | वचन + अमृत |
| नियमानुसार | नियम + अनुसार |
| मतानुसार | मत + अनुसार |
| सावधान | स + अवधान |
| स्वार्थ | स्व + अर्थ |
| रुद्राक्ष | रुद्र + अक्ष |

### 2. अ + आ = आ

| संधि पद | संधि-विच्छेद |
|---|---|
| अल्पाहार | अल्प + आहार |
| अल्पायु | अल्प + आयु |
| रत्नाकर | रत्न + आकर |
| पुस्तकालय | पुस्तक + आलय |
| शिवालय | शिव + आलय |
| सत्याग्रह | सत्य + आग्रह |
| शुभारम्भ | शुभ + आरम्भ |
| कुशासन | कुश + आसन |
| स्नेहाविष्ट | स्नेह + आविष्ट |
| शीताकुल | शीत + आकुल |

### 3. आ + अ = आ

| संधि पद | संधि-विच्छेद |
|---|---|
| आत्मावलोकन | आत्मा + अवलोकन |
| विद्यार्थी | विद्या + अर्थी |
| शिक्षार्थी | शिक्षा + अर्थी |
| वर्षान्त | वर्षा + अन्त |
| मायाधीन | माया + अधीन |
| दीक्षान्त | दीक्षा + अन्त |
| विद्याभ्यास | विद्या + अभ्यास |
| द्वारिकाधीश | द्वारिका + अधीश |
| जिह्वाग्र | जिह्वा + अग्र |
| सेनाध्यक्ष | सेना + अध्यक्ष |

### 4. आ + आ = आ

| संधि पद | संधि-विच्छेद |
|---|---|
| दयानंद | दया + आनंद |
| कृपाकांक्षी | कृपा + आकांक्षी |
| मिथ्याचार | मिथ्या + आचार |
| लीलागार | लीला + आगार |
| लोपामुद्रा | लोपा + आमुद्रा |
| वार्तालाप | वार्ता + आलाप |
| आशातीत | आशा + अतीत |
| झंझानिल | झंझा + अनिल |

### 5. इ + इ = ई

| संधि पद | संधि-विच्छेद |
|---|---|
| अतीव | अति + इव |
| कवीन्द्र | कवि + इन्द्र |
| प्रतीति | प्रति + इति |
| गिरीन्द्र | गिरि + इन्द्र |
| अभीष्ट | अभि + इष्ट |
| अधीन | अधि + इन |
| अतीन्द्रिय | अति + इन्द्रिय |
| मुनीन्द्र | मुनि + इन्द्र |

### 6. इ + ई = ई

| संधि पद | संधि-विच्छेद |
|---|---|
| गिरीश | गिरि + ईश |
| कवीश्वर | कवि + ईश्वर |
| परीक्षा | परि + ईक्षा |
| वारीश | वारि + ईश |
| हरीश | हरि + ईश |
| अधीक्षक | अधि + ईक्षक |
| कपीश | कपि + ईश |
| अधीश्वर | अधि + ईश्वर |

### 7. ई + इ = ई

| संधि पद | संधि-विच्छेद |
|---|---|
| शचीन्द्र | शची + इन्द्र |
| सुधीन्द्र | सुधी + इन्द्र |
| देवीच्छा | देवी + इच्छा |
| यतीन्द्र | यती + इन्द्र |
| महींद्र | मही + इंद्र |
| महतीच्छा | महती + इच्छा |

### 8. ई + ई = ई

| संधि पद | संधि-विच्छेद |
|---|---|
| रजनीश | रजनी + ईश |
| श्रीश | श्री + ईश |
| नदीश | नदी + ईश |
| गौरीश | गौरी + ईश |
| महीन्द्र | मही + इन्द्र |
| फणीश्वर | फणी + ईश्वर |

### 9. उ + उ = ऊ

| संधि पद | संधि-विच्छेद |
|---|---|
| लघूत्तम | लघु + उत्तम |
| लघूत्तर | लघु + उत्तर |
| अनूत्तर | अनु + उत्तर |
| भानूदय | भानु + उदय |
| कटूक्ति | कटु + उक्ति |
| गुरूपदेश | गुरु + उपदेश |

### 10. उ + ऊ = ऊ

| संधि पद | संधि-विच्छेद |
|---|---|
| बहूर्ज | बहु + ऊर्जा |
| धातूष्मा | धातु + ऊष्मा |
| लघूर्मि | लघु + ऊर्मि |
| सिन्धूर्मि | सिन्धु + ऊर्मि |
| साधूर्जा | साधु + ऊर्जा |
| मधूष्मा | मधु + ऊष्मा |
| अम्बूर्मि | अम्बु + ऊर्मि |
| बहूर्ध्व | बहु + ऊर्ध्व |

### 11. ऊ + उ = ऊ

| संधि पद | संधि-विच्छेद |
|---|---|
| स्वयंभूदय | स्वयंभू + उदय |
| भूपरि | भू + उपरि |
| वधूल्लास | वधू + उल्लास |
| वधूत्सव | वधू + उत्सव |
| भूपरि | भू + उपरि |
| भूत्सर्ग | भू + उत्सर्ग |
| वधूपकार | वधू + उपकार |
| भूद्धार | भू + उद्धार |

### 12. ऊ + ऊ = ऊ

| संधि पद | संधि-विच्छेद |
|---|---|
| चमूर्मि | चमू + ऊर्मि |
| चमूर्ज | चमू + ऊर्ज |
| वधूर्जा | वधू + ऊर्जा |
| भूर्ध्व | भू + ऊर्ध्व |
| भूष्मा | भू + ऊष्मा |
| सरयूर्मि | सरयू + ऊर्मि |
| वधूर्मि | वधू + ऊर्मि |
| भूर्जा | भू + ऊर्जा |

'य्', 'र्', 'ल्', 'व्', ह् आदि हों तो क्, च्, ट्, त्, प् अपने वर्ग के तीसरे वर्ण (ग्, ज्, ड्, द्, ब्) में परिवर्तित हो जाते हैं। जैसे–

| संधि–विच्छेद | | संधि पद | संधि–विच्छेद | | संधि पद |
|---|---|---|---|---|---|
| दिक् + अम्बर | = | दिगम्बर | सम्यक् + ज्ञान | = | सम्यग्ज्ञान |
| वाक् + दत्ता | = | वाग्दत्ता | षट् + दर्शन | = | षड्दर्शन |
| षट् + यंत्र | = | षड्यंत्र | दिक् + अन्तर | = | दिगन्तर |
| वाक् + ईश्वर | = | वागीश्वर | अच् + अन्त | = | अजन्त |
| सत् + व्यवहार | = | सद्व्यवहार | सत् + गति | = | सद्गति |
| जगत् + गुरु | = | जगद्गुरु | जगत् + अम्बा | = | जगदम्बा |
| सत + आशय | = | सदाशय | सत् + उपयोग | = | सदुपयोग |
| कृत् + अन्त | = | कृदन्त | उत् + योग | = | उद्योग |
| दिक् + दर्शन | = | दिग्दर्शन | अच् + अन्त | = | अजन्त |
| वणिक् + वर्ग | = | वणिग्वर्ग | अच् + आदि | = | अजादि |
| दिक् + गज | = | दिग्गज | ऋक् + वेद | = | ऋग्वेद |
| सत् + भावना | = | सद्भावना | उत् + घाटन | = | उद्घाटन |
| सत् + बुद्धि | = | सद्बुद्धि | षट् + गुण | = | षड्गुण |
| उत् + घोष | = | उद्घोष | भवत् + ईय | = | भवदीय |
| सत् + धर्म | = | सद्धर्म | भगवत् + गीता | = | भगवद्गीता |
| चित् + आनन्द | = | चिदानन्द | षट् + रस | = | षड्रस |
| उत् + दंड | = | उद्दंड | चित् + आकाश | = | चिदाकाश |

❖ **नियम (3)**—यदि **'स'** एवं 'त्', 'थ्', 'द्', 'ध्', 'न्', के पश्चात् **'श'** एवं 'च्', 'छ्', 'ज्', 'झ्', 'ञ्' में से कोई एक वर्ण हो तो **'स'** एवं 'त्', 'थ्', 'द्', 'ध्', 'न्' वर्णों के स्थान पर **'श'** एवं 'च्', 'छ्', 'ज्', 'झ्', 'ञ्' वर्ण हो जायेंगे। जैसे–

| क्र. | नियम | उदाहरण |
|---|---|---|
| 1. | त् + च = 'त्' के स्थान पर 'च्' | उत् + चारण = उच्चारण, शरत् + चन्द्र = शरच्चन्द्र, सत् + चित् + आनन्द = सच्चिदानन्द |
| 2. | त् + ज् = 'त्' के स्थान पर 'ज्' | सत् + जन = सज्जन, उत् + ज्वल = उज्ज्वल, जगत् + जननी = जगज्जननी, विपत् + जाल = विपज्जाल, उत् + जयिनी = उज्जयिनी, यावत् + जीवन = यावज्जीवन |
| 3. | त् + ट् = 'त्' के स्थान पर 'ट्' | तत् + टीका = तट्टीका |
| 4. | त् + ल् = 'त्' के स्थान पर 'ल्' | उत् + लेख = उल्लेख, तत् + लीन = तल्लीन, उत् + लंघन = उल्लंघन, पत् + लव = पल्लव |
| 5. | त् + ड् = 'त्' के स्थान पर 'ड्' | उत् + डयन = उड्डयन, उत् + डीन = उड्डीन |

**अन्य परीक्षोपयोगी उदाहरण**

| संधि पद | संधि–विच्छेद | संधि पद | संधि–विच्छेद |
|---|---|---|---|
| भगवच्चिंतन | = भगवत् + चिंतन | जगज्जननी | = जगत् + जननी |
| विपज्जाल | = विपद् + जाल | यावज्जीवन | = यावत् + जीवन |
| उच्छेद | = उत् + छेद | बृहज्जन | = बृहत् + जन |

❖ **नियम (4a)**—यदि **'त्/द्'** के बाद **'ह्'** हो तो **'त्/द्'** के स्थान पर **'द्'** तथा **'ह'** के स्थान पर **'ध'** हो जाता है। जैसे—

| क्र. | नियम | उदाहरण |
|---|---|---|
| 1. | त् + ह् = त्, ह् के स्थान पर द्,ध् | उत् + हार = उद्धार, उत् + हरण = उद्हरण, तत् + हित = तद्धित, पत् + हति = पद्धति, उत् + हृत = उद्धृत। |
| 2. | त् + श् = त्, श् के स्थान पर च, छ | तत् + शिव = तच्छिव, उत् + शृंखल = उच्छृंखल, उत् + श्वसन = उच्छ्वसन, उत् + श्वास = उच्छ्वास, मृत् + शकटिका = मृच्छकटिका। |

❖ **नियम (4b)**—यदि **'त्'** के बाद **'श्'** हो तो **'त्'** के स्थान पर **'च्'** होगा एवं **'श्'** के स्थान पर **'छ्'** हो जाएगा। जैसे—

| संधि पद | संधि–विच्छेद | संधि पद | संधि–विच्छेद |
|---|---|---|---|
| तच्छिव | = तत् + शिव | उच्छृंखल | = उत् + शृंखल |
| उच्छ्वास | = उत् + श्वास | मृच्छकटिका | = मृत् + शकटिका |
| उच्छिष्ट | = उद् + शिष्ट | जगच्छान्ति | = जगत् + शान्ति |
| सच्छास्त्र | = सत् + शास्त्र | श्रीमच्छंकराचार्य | = श्रीमत् + शंकराचार्य |

❖ **नियम (5a)**—**'छ'** से पूर्व कोई स्वर तो **'छ'** का **'च्छ'** हो जाता है। जैसे—

| संधि पद | संधि–विच्छेद | संधि पद | संधि–विच्छेद |
|---|---|---|---|
| आच्छादन | = आ + छादन | स्वच्छन्द | = स्व + छन्द |
| अनुच्छेद | = अनु + छेद | परिच्छेद | = परि + छेद |
| वृक्षच्छाया | = वृक्ष + छाया | विच्छेद | = वि + छेद |
| शिवच्छाया | = शिव + छाया | प्रतिच्छाया | = प्रति + छाया |
| लक्ष्मीच्छाया | = लक्ष्मी + छाया | विच्छिन्न | = वि + छिन्न |

❖ **नियम (5b)**—यदि **'म्'** से परे **'म'** वर्ण आए तो **'म्'** को **'द्वित्व'** हो जाता है। जैसे—

| संधि पद | संधि–विच्छेद | संधि पद | संधि–विच्छेद |
|---|---|---|---|
| सम्मान | = सम् + मान | सम्मुख | = सम् + मुख |
| सम्मोहन | = सम् + मोहन | सम्मिश्रण | = सम् + मिश्रण |
| सम्मति | = सम् + मति | सम्मानित | = सम् + मानित |

❖ **6(a)** **'अ'** या **'आ'** के अतिरिक्त किसी अन्य स्वर के पश्चात् **'स'** होने पर **'स्'** का **'ष्'** हो जाता है। जैसे—

अभि + सेक = अभिषेक　　नि + सेध = निषेध
नि + षाद = निषाद　　वि + षाद = विषाद

**अपवाद के उदाहरण**—

| संधि पद | संधि–विच्छेद | संधि पद | संधि–विच्छेद |
|---|---|---|---|
| विसर्ग | = वि + सर्ग | अनुसार | = अनु + सार |
| विसर्जन | = वि + सर्जन | विस्मरणीय | = वि + स्मरणीय |

❖ **नियम 6(b)**—यदि पदान्त **'त्'** के परे **'न्'** हो तो पदान्त **'त्'** के स्थान पर **'न्'** हो जायेगा। जैसे—

| संधि पद | संधि–विच्छेद | संधि पद | संधि–विच्छेद |
|---|---|---|---|
| जगन्नाथ | = जगत् + नाथ | उन्नाव | = उत् + नाव |
| उन्नति | = उत् + नति | उन्नयन | = उत् + नयन |

❖ **नियम (7)**—यदि **'दुर्'** और **'निर्'** के बाद **'र'** आए तो **'दुर्'** का **'दू'** तथा **'निर्'** का **'नी'** हो जाता है। जैसे—

Correction done 31-7-23

# 2 उपसर्ग के संयोग से शब्द-संरचना तथा शब्दों से उपसर्ग को पृथक करना और उनकी पहचान करना

❖ वे शब्दांश जो किसी शब्द के प्रारम्भ में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं **'उपसर्ग'** कहलाते हैं। इनका अपना स्वतंत्र अर्थ नहीं होता बल्कि ये किसी मूल शब्द में जुड़कर उसके अर्थ को नया रूप देते हैं।

❖ मूल शब्द के साथ उपसर्गों के जुड़ने से यहाँ ध्वनि विकार पैदा होता है तथा वहाँ संधि हो जाती है, इसलिये उपसर्गों के प्रयोग के समय संधि आदि के नियमों का भी विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। हिन्दी में उपसर्गों द्वारा अनेक नये शब्दों का निर्माण होता है।

| 1. तत्सम् उपसर्ग | 2. तद्भव उपसर्ग | 3. विदेशी उपसर्ग |
|---|---|---|

1. **तत्सम् उपसर्ग**—हिन्दी में संस्कृत के उपसर्ग ज्यों के त्यों प्रचलित हैं। इन्हें 'तत्सम्' उपसर्ग कहा जाता है। इनकी कुल संख्या 22 है—
**अति, अधि, अनु, अप, अभि, अव, आ, उत्, उप, दुर्, दुस्, नि, निर्, निस्, प्र, परा, परि, प्रति, वि, सु, सम्, अन्** आदि तत्सम उपसर्ग के रूप में प्रयुक्त किये जाते हैं।
2. **तद्भव उपसर्ग**—ये उपसर्ग हिन्दी के अपने उपसर्ग हैं तथा संस्कृत से परिवर्तित होकर हिन्दी में आये हैं। जैसे—
**अन, अध, उ, उन, औ, कु, चौ, पच, पर, भर, बिन, ति, दु, का, स, चिर, न, बहु, आप, नाना, क, सम**
3. **विदेशी उपसर्ग**—हिन्दी में बड़ी संख्या में अरबी, फारसी तथा अंग्रेजी भाषा के उपसर्गों का प्रचलन है। इन्हें विदेशी उपसर्ग कहा जाता है। जैसे—
**बे, दर, बा, कम, ला, ना, हर, खुश, बद, सर, ब, बिला, देश, नेक, ऐन, हम, अल, गैर, हैड, हाफ, सब, कु**

**उपसर्गों के महत्वपूर्ण नियम**

1. अघोष, तालव्य व्यंजन ('श' एवं 'च') से पहले **'निश्'** तथा **'क', 'प', 'फ' से पहले 'निष्' तथा दंत्य अघोष व्यंजनों (त, स) से पूर्व 'निस्'** हो जाता है।
2. **'दुस्' उपसर्ग का नियम**—इसमें नियम यह है कि—
**दुस्** = (दुस् + त, स)
**दुश्** = दुस् + तालव्य व्यंजन (च, छ, श)
**दुष्** = (दुस् + क, प, फ)
3. **'उत्' एवं 'उद्' उपसर्ग का नियम**—संस्कृत के मूल ग्रंथों में **'उद्'** उपसर्ग है **'उत्'** नहीं है। **'उत्'** तो **'उद्'** का ही संधि रूप है। संस्कृत की व्यंजन संधि में **'उद्'** उपसर्ग का घोष **'द'** इसके पश्चात् अघोष व्यंजन आने पर अघोष **'त'** के रूप में बदल जाता है अतः यह 'उत्' बन जाता है जबकि मूल उपसर्ग **'उद्'** ही है **'उत्'** नहीं है।

## उपसर्ग तालिका - तत्सम (संस्कृत) उपसर्ग

| उपसर्ग | संबंधित अर्थ | महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी उदाहरण |
|---|---|---|
| 1. **प्र** | अधिक, आगे, विशेष | प्रकाश, प्रभु, प्रसिद्ध, प्रकोप, प्रपंच, प्राध्यापक, प्रताप, प्रोन्नति, प्रबल, प्रदर्शन, प्रयोग, प्रसिद्ध, प्रख्यात, प्रलाप, प्रमोद, प्रगति, प्रकृष्ट, प्रगल्भ, प्रवीण (प्र + वीन), प्रार्थी (प्र + अर्थी), प्राचार्य (प्र + आचार्य), प्रारब्ध (प्र + आरब्ध), प्राध्यापक (प्र + अध्यापक), प्रेक्षक (प्र + ईक्षक), प्रोज्ज्वल (प्र + उज्ज्वल), प्रोन्नत (प्र + उन्नत), प्रोत्साहन (प्र + उत्साहन), प्रणीत (प्र + नीत), प्रमाण (प्र + मान), प्रादेशिक (प्र + आदेशिक) |
| 2. **परा** | उलटा, नाश (विरुद्ध), अनादर, हीनता | पराजय, पराक्रम, पराभव, पराजित, परावर्तन, पराकाष्ठा, परागमन, पराधीन, पराविद्या, परास्त (परा + अस्त) |
| 3. **अप** | लघुता, हीनता | अपमान, अपशब्द, अपहरण, अपयश, अपव्यय, अपकर्ष, अपंग, अपेक्षा, अपकीर्ति, अपभ्रंश, अपशकुन,अपवाद, अपचार, अपवर्तन (अप + वर्तन), **स्वर संधि के अपवाद**— अपांग (अप + अंग), अपेक्षित (अप + ईक्षित) |
| 4. **सम्** | पूर्णता, संयोग, समान रूप से | संकल्प, संगम, सम्मेलन, संस्कृत, संयोग, संवाद, सम्प्रेषण, संचार, संतोष, सम्पर्क, संचय, संयम, संगति, सम्बोधन, संधि, संवेदना, समर्पण, समागम, समाधान, समादर, समापन, समायोजन, समारोह, समारम्भ, समास, समग्र (सम् + अग्र), समन्वय (सम् + अन्वय), समर्थ (सम् + अर्थ), समाचार (सम् + आ + चार), समृद्ध (सम् + ऋद्ध), समुच्चय (सम् + उत् + चय), संकीर्ण (सम् + कीर्ण), संक्षेपण (सम् + क्षेपण), संहार (सम् + हार) |

# 3 प्रत्यय के संयोग से शब्द-संरचना तथा शब्दों से प्रत्यय को पृथक करना और उनकी पहचान करना

❖ शब्द के अन्त में जुड़ने वाले अक्षर या शब्दांश जिनसे शब्द का अर्थ निश्चित या विशेषता से युक्त हो जाता है, वह **प्रत्यय** कहलाता है। जैसे— दूधिया और सफ़ाई। दूधिया में दूध पर इया (दूध + इया) प्रत्यय और सफ़ाई में सफ़ा में 'ई' (सफ़ा + ई) प्रत्यय लगा हुआ है।

❖ इन प्रत्ययों का स्वतन्त्र रूप से कोई अर्थ नहीं होता है। इनकी सार्थकता शब्दों के अन्त में जुड़ने से ही होती है।

❖ **प्रत्यय के भेद—1.** कृत् प्रत्यय **2.** तद्धित प्रत्यय

## कृत् प्रत्यय

❖ धातु के अन्त में जुड़कर उनके अर्थों में परिवर्तन करने वाले प्रत्यय **कृत् प्रत्यय** कहलाते हैं। कृत् प्रत्ययों के योग से बनने वाले शब्द **कृदन्त** कहलाते हैं। **''कृत् प्रत्यय है अन्त में जिनके''** वे कृदन्त कहलाते हैं।

### कृत् प्रत्यय के भेद

✧ कर्तृ वाचक कृत् प्रत्यय ✧ कर्म वाचक कृत् प्रत्यय
✧ करण वाचक कृत् प्रत्यय ✧ भाव वाचक कृत् प्रत्यय
✧ क्रिया-वाचक या क्रिया द्योतक कृत् प्रत्यय

**1. कर्तृ वाचक कृत् प्रत्यय**—जिस प्रत्यय के धातु के अन्त में जुड़ने से शब्द का अर्थ कर्ता या क्रिया का करने वाला व्यक्त होता है, वह **कर्तृ वाचक कृदन्त** (कृत् प्रत्यय) कहलाता है। जैसे—

| धातु या मूल शब्द | प्रत्यय | कृदन्त शब्द |
|---|---|---|
| **'अक' प्रत्यय के उदाहरण** | | |
| लिख् | अक | लेखक |
| पठ् | अक | पाठक |
| कृ (कार्) | अक | कारक |
| गै (गाय्) | अक | गायक |
| घात् | अक | घातक |
| चाल् | अक | चालक |
| आ+छाद् | अक | आच्छादक (ढकने वाला) |
| जात् | अक | जातक (पैदा होने वाला) |
| तार् (तृ) | अक | तारक |
| (धृ) धर् | अक | धारक |
| नाश् | अक | नाशक |
| धाव् | अक | धावक |
| (नौ) नाव् | अक | नाविक |
| (पौ) पाव् | अक | पावक |
| **'आक' प्रत्यय के उदाहरण** | | |
| तैर | आक | तैराक |
| चाल | आक | चालक |
| **'आकू' प्रत्यय के उदाहरण** | | |
| लड़ | आकू | लड़ाकू |
| भिड़ | आकू | भिड़ाकू |
| पढ़ | आकू | पढ़ाकू |
| **'आका' प्रत्यय के उदाहरण** | | |
| धम | आका | धमाका |
| धड़ | आका | धड़ाका |
| लड़ | आका | लड़ाका |

| धातु या मूल शब्द | प्रत्यय | कृदन्त शब्द |
|---|---|---|
| **'आड़ी' प्रत्यय के उदाहरण** | | |
| अन् | आड़ी | अनाड़ी |
| अग् (आगे) | आड़ी | अगाड़ी |
| खिल् (खेल) | आड़ी | खिलाड़ी |
| कब् | आड़ी | कबाड़ी |
| **'ऐत' प्रत्यय के उदाहरण** | | |
| लठ | ऐत | लठैत |
| भड़ | ऐत | भड़ैत |
| **'अक्कड़' प्रत्यय के उदाहरण** | | |
| घूम | अक्कड़ | घुमक्कड़ |
| बुझ | अक्कड़ | बुझक्कड़ |
| भूल | अक्कड़ | भुलक्कड़ |
| **'एया' प्रत्यय के उदाहरण** | | |
| रख | एया | रखैया |
| खिव | एया | खिवैया |
| (गै) गव | एया | गवैया |
| **'हार' प्रत्यय के उदाहरण** | | |
| राखन | हार | राखनहार |
| चाखन | हार | चाखनहार |

❖ 'वाला' प्रत्यय भी हिन्दी भाषा का कर्तृवाचक कृत् प्रत्यय ही है और अधिकांश क्रियावाचक पदों पर यह प्रत्यय जुड़ जाता है।
जैसे—पढ़ने वाला, लिखने वाला, दिखने वाला, उठने वाला, दौड़ने वाला, रुकने वाला, हँसने वाला, देने वाला, बोलने वाला आदि।

**2. कर्मवाचक कृत् प्रत्यय**—जो कृत् प्रत्यय धातु के अन्त में जुड़कर कर्म का अर्थ प्रकट करते हैं वे प्रत्यय **कर्मवाचक कृत् प्रत्यय** कहलाते हैं।

# 4 समस्त (सामासिक) पद की रचना करना, समस्त (सामासिक) पद का विग्रह करना

❖ दो पदों के परस्पर मेल को समास कहते हैं। भाषा में **संक्षिप्तता, सारगर्भिता** और **सौन्दर्य की वृद्धि** के लिए समास का काफी महत्व है।

❖ पदों के मेल से जो नया पद बनता है उसे सामासिक पद कहते हैं।

❖ पदों की प्रधानता की दृष्टि से समास के मुख्य भेद—

**(1)** **जिस सामासिक पद का पूर्व पद प्रधान हो**—जैसे—अव्ययीभाव

**(2)** **जिस सामासिक पद का उत्तर पद प्रधान हो**—जैसे तत्पुरुष, कर्मधारय व द्विगु

**(3)** **जिस सामासिक पद के दोनों पद प्रधान हों**—जैसे—द्वंद्व

**(4)** **जिस सामासिक पद का अन्य पद प्रधान हो**—जैसे—बहुव्रीहि

**समास के भेद**

✧ अव्ययीभाव समास
✧ तत्पुरुष समास
✧ कर्मधारय समास
✧ द्विगु समास
✧ द्वंद्व समास
✧ बहुव्रीहि समास

## 1. अव्ययीभाव समास

❖ जब नया सामासिक पद अव्यय हो तो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। अव्ययीभाव समास निम्न तीन प्रकार से बनता है—

✧ **जब प्रथम पद अव्यय हो**—जैसे—यथाशक्ति, प्रतिदिन, यथाक्रम, भरपेट, अनुरूप, अकारण, निर्विरोध, प्रतिबिम्ब, सकुशल, सपरिवार, भरसक, अभूतपूर्व, यथा समय आदि।

✧ **जब प्रथम पद नाम पद हो**—जैसे-विनयपूर्वक, आवश्यकतानुसार, विवेकपूर्वक, विश्वासपूर्वक, कथनानुसार, कुशलतापूर्वक, नित्यप्रति आदि।

✧ **जब संज्ञा या अव्यय पद के दोहराने से**—जैसे—लातोंलात, बातोंबात, द्वार-द्वार, पल-पल, घड़ी-घड़ी, बार-बार, साफ-साफ, धीरे-धीरे, बीचों-बीच, धड़ाधड़, भागमभाग, एकाएक, पहले पहल, बराबर, मन ही मन, आप ही आप, सरासर आदि।

❖ **नियम—(1) अव्यय शब्द 'यथा' से प्रारम्भ होने वाले सामासिक पदों का विग्रह उनके उत्तर पद के बाद 'के अनुसार' लिख कर किया जाता है।** जैसे—

| समस्त पद | समास विग्रह | समस्त पद | समास विग्रह |
|---|---|---|---|
| यथाविधि | विधि के अनुसार | यथाक्रम | क्रम के अनुसार |
| यथागति | गति के अनुसार | यथार्थ | अर्थ के अनुसार |
| यथास्थिति | स्थिति के अनुसार | यथाशक्ति | शक्ति के अनुसार |
| यथेच्छा | इच्छा के अनुसार | यथायोग्य | योग्यता के अनुसार |
| यथा स्थान | स्थान के अनुसार | यथा गुण | गुण के अनुसार |

❖ **नियम—(2) अव्यय शब्द 'यथा' से बने पदों के विग्रह में जैसी है, शब्द लिखकर भी विग्रह किया जाता है।** जैसे—

| समस्त पद | समास विग्रह | समस्त पद | समास विग्रह |
|---|---|---|---|
| यथा सम्भव | जैसा सम्भव हो | यथोचित | जैसा उचित हो |
| यथास्थिति | जैसी स्थिति हो | यथागति | जैसी गति हो |
| यथानुकूल | जैसा अनुकूल हो | यथामति | जैसी मति है |

❖ **नियम—(3) जिस सामासिक पद में पहला पद 'बे', 'निर्', 'निस्', 'ना', 'नि' आदि हों उनका विग्रह करते समय उनके अन्त में 'रहित' एवं प्रारम्भ में 'बिना' शब्द लिखा जाता है।** जैसे—

| समस्त पद | समास विग्रह | समस्त पद | समास विग्रह |
|---|---|---|---|
| बेखटके | बिना खटके के | बेचैन | बिना चैन के |
| बेफायदा | बिना फायदे के | बेधड़क | बिना धड़के के |
| बेवजह | बिना वजह के | बेदाग | बिना दाग के |
| निर्विवाद | बिना विवाद के | निर्विकार | बिना विकार के |
| बेकार | बिना कार्य के | निर्विरोध | बिना विरोध के |
| नीरोग | बिना रोग के | नीरस | बिना रस के |
| बेशर्म | बिना शर्म के | निश्चिन्त | बिना चिन्ता के |

❖ **नियम—(4) 'प्रति' उपसर्ग से बने 'समस्त पद' के विग्रह करते समय प्रायः 'उत्तर पद' को दो बार लिख देते हैं अथवा एक शब्द से पहले 'हर' शब्द जोड़ देते हैं।** जैसे—

| समस्त पद | समास विग्रह | समस्त पद | समास विग्रह |
|---|---|---|---|
| प्रति माह | हर माह | प्रतिदिन | हर दिन |
| प्रति व्यक्ति | हर व्यक्ति | प्रति छात्र | हर छात्र |
| प्रति पल | हर पल | प्रत्येक | हर एक |
| प्रत्यंग | हर अंग | प्रतिशत | हर शत |
| प्रतिक्षण | हर क्षण | प्रतिवर्ष | हर वर्ष |

❖ **नियम—(5) 'पूर्व पद' 'आ' उपसर्ग से बना हो तो उसके विग्रह करने पर 'उत्तर पद' के अन्त में 'तक' लिखा जाता है।** जैसे—

| समस्त पद | समास विग्रह | समस्त पद | समास विग्रह |
|---|---|---|---|
| आमरण | मरण तक | आजीवन | जीवन तक |
| आजन्म | जन्म तक (जन्म से) | आकण्ठ | कंठ तक |

✧ आजानुबाहु—जानु (घुटने) से बाहु तक
✧ आपादमस्तक—पाद से मस्तक तक

| समस्त पद | समास विग्रह | समस्त पद | समास विग्रह | समस्त पद | समास विग्रह | समस्त पद | समास विग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| यथासंख्य | संख्या के अनुसार | सरासर | एकदम से | यथासमय | समय के अनुसार | आजानु | घुटना तक |
| आमरण | मरण तक | अध्यात्म | आत्मा से संबंधित | यथास्थान | स्थान के अनुसार | यावज्जीवन | जीवन पर्यन्त |

## तत्पुरुष समास के महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी उदाहरण

| समस्त पद | समास विग्रह |
|---|---|
| गगनचुंबी | गगन (को) चूमने वाला |
| चिड़ीमार | चिड़ियों को मारने वाला |
| कठखोदवा | काठ (को) खोदने वाला |
| मुँहतोड़ | मुँह (को) तोड़ने वाला |
| अग्निभक्षी | अग्नि (को) भक्षण करने वाला |
| जलधर | जल (को) धारण करने वाला |
| सुखप्राप्त | सुख (को) प्राप्त |
| जलपिपासु | जल को पीने की इच्छा वाला |
| शत्रुघ्न | शत्रु को मारने वाला |
| दुःखद | दुःख को देने वाला |
| यशोदा | यश को देने वाली |
| आशातीत | जिसकी आशा नहीं की जाती है। |
| इन्द्रियातीत | जहाँ तक इन्द्रियों की पहुँच नहीं है |
| कष्टसहिष्णु | कष्ट को सह लेने वाला |
| वचनातीत | जो कहा नहीं जा सकता |
| वर्णनातीत | जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता |
| संकटापन्न | संकट को आपन्न (प्राप्त) |
| शोकदग्ध | शोक से दग्ध (जला) |
| कालिदासकृत | कालिदास द्वारा कृत |
| ज्ञानयुक्त | ज्ञान से युक्त |
| मनमाना | मन से माना |
| गुरुदत्त | गुरु से दत्त |
| गुणयुक्त | गुण से युक्त |
| सूरकृत | सूर द्वारा कृत |
| पॉकेटमार | पॉकेट (को) मारने वाला |
| गृहागत | गृह को आगत |
| गिरहकट | गिरह (को) काटने वाला |
| स्वर्गप्राप्त | स्वर्ग को प्राप्त |
| दुःखापन्न | दुःख (को) आपन्न |
| शरणागत | शरण को आगत |
| गठकटा | गाँठ को काटने वाला |
| संगीतज्ञ | संगीत को जानने वाला |
| मनोहर | मन को हरने वाला |
| सर्वभक्षी | सबको भक्षण करने वाला |
| त्रिगुणातीत | जो तीनों गुणों से परे हो |
| स्थानापन्न | स्थान को आपन्न |
| अनलदग्ध | अनल से दग्ध |
| कंटकाकीर्ण | कांटों से भरा |
| क्षुधातुर | क्षुधा से आतुर |
| मनः पूत | मन से पूत (पवित्र) |

| समस्त पद | समास विग्रह |
|---|---|
| रक्तारक्त | रक्त से आरक्त |
| विचारगम्य | जहाँ तक विचार जा सकता है |
| प्रकृतिप्रदत्त | प्रकृति द्वारा प्रदत्त |
| शिरोधार्य | जो सिर से धारण करने योग्य हो |
| अंधकारयुक्त | अंधकार से युक्त |
| कलंकयुक्त | कलंक से युक्त |
| वाग्दत्त | वाक् से दत्त |
| आतपजीवी | आतप (धूप) से जीने वाला |
| कामचोर | काम से चोर |
| जलसिक्त | जल से सिक्त |
| देहचोर | देह से चोर |
| नियमाबद्ध | नियम से आबद्ध |
| प्रेमसिक्त | प्रेम से सिक्त |
| मदान्ध | मद से अन्धा |
| मुँहचोर | मुँह से चोर |
| रोगग्रस्त | रोग से ग्रस्त |
| मेघाच्छन्न | मेघ से आच्छन्न (घिरा) |
| दुःखसंतप्त | दुःख से संतप्त |
| शोकार्त | शोक के आर्त |
| आचारपूत | आचार से पूत |
| कष्टसाध्य | कष्ट से साध्य |
| तर्कसंगत | तर्क से संगत |
| रक्तरंजित | रक्त से रंगा |
| विधिप्रदत्त | विधि द्वारा प्रदत्त |
| पददलित | पद से दलित |
| फलावेष्टित | फल से आवेष्टित |
| मदमाता | मद से माता |
| रसभरा | रस से भरा |
| शोकाकुल | शोक से आकुल |
| दुःखार्त | दुःख से आर्त |
| श्रमजीवी | श्रम से जीनेवाला |
| शिवार्पण | शिव के लिए अर्पण |
| सभाभवन | सभा के लिए भवन |
| मार्गव्यय | मार्ग के लिए व्यय |
| मालगोदाम | माल के लिए गोदाम |
| साधुदक्षिणा | साधु के लिए दक्षिणा |
| पुत्रशोक | पुत्र के लिए शोक |
| राहखर्च | राह के लिए खर्च |
| देवालय | देव के लिए आलय |

## मध्यमपदलोपी समास के महत्त्वपूर्ण उदाहरण

| समस्त पद | समास विग्रह |
|---|---|
| कीर्तिमंदिर | कीर्ति से बना मंदिर |
| जेबघड़ी | जेब में रहने वाली घड़ी |
| दहीबड़ा | दही में डूबा बड़ा |
| पर्णशाला | पर्ण (पत्ता) से निर्मित शाला |
| फलौड़ी | फूली हुई बड़ी |
| स्वर्णहार | स्वर्ण से निर्मित हार |
| छायातरु | छाया प्रद तरु |
| घोड़ागाड़ी | घोड़े से चलने वाली गाड़ी |
| डाकगाड़ी | डाक ले जाने वाली गाड़ी |
| पकौड़ी | पकी हुई बड़ी |
| स्वर्णकंकण | स्वर्ण निर्मित कंकण |
| मर्यादापुरुष | मर्यादा रक्षक पुरुष |
| जटाशंकर | जटा युक्त शंकर |
| शाकपार्थिव | शाकप्रिय पार्थिव |

## प्रादि तत्पुरुष समास के महत्त्वपूर्ण उदाहरण

| समस्त पद | समास विग्रह |
|---|---|
| अधमरा | आधा है जो मरा हुआ |
| प्राचार्य | प्रकृष्ट आचार्य |
| अतिवृष्टि | बहुत अधिक वृष्टि |
| अनुकरणीय | अनुकरण करने योग्य |
| अनुमित | जिसका अनुमान किया है |
| आपान | इकट्ठा होकर पीना |
| निगीर्ण | निगला हुआ |
| परित्यक्त | छोड़ दिया गया |
| प्रातराश | प्रातःकाल का जलपान |
| प्रपर्ण | जिसके सभी पत्ते झड़ चुके हैं |
| विक्रेता | विक्रय करने वाला |
| सुप्राप्य | सरलता से पाने योग्य |
| अत्युक्ति | बढ़ा-चढ़ाकर कहने वाली उक्ति |
| मधुरफल | मधुर है जो फल |

## नञ् तत्पुरुष के महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी उदाहरण

| समस्त पद | समास विग्रह | समस्त पद | समास विग्रह |
|---|---|---|---|
| अकर्म | न कर्म | अगोचर | न गोचर |
| अचिंत्य | न चिंत्य | अछूत | न छूत |
| अजात | न जात | अधर्म | न धर्म |
| अकाल | न काल | अचल | न चल |
| अचेतन | न चेतन | अज्ञान | न ज्ञान |
| अदृश्य | न दृश्य | अधीर | न धीर |
| अनजान | न जान | अनादि | न आदि |
| अनावश्यक | न आवश्यक | अनिच्छुक | न इच्छुक |

| समस्त पद | समास विग्रह | समस्त पद | समास विग्रह |
|---|---|---|---|
| अव्यय | न व्यय | अस्थिर | न स्थिर |
| अविद्या | न विद्या | अखाद्य | न खाद्य |
| अजीत | न जीत | अलक्ष्य | न लक्ष्य |
| अप्रमेय | न प्रमेय | अपरिमेय | न परिमेय |
| अमोघ | न मोघ | अवैध | न वैध |
| नामुमकिन | न मुमकिन | गैरकानूनी | न (बिना) कानूनी |
| अनदेखा | न देखा | अनाचार | न आचार (व्यवहार) |
| अनिष्ट | न इष्ट | अपवित्र | न पवित्र |

## द्वन्द्व समास के महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी उदाहरण

| समस्त पद | समास विग्रह | समस्त पद | समास विग्रह |
|---|---|---|---|
| एड़ी-चोटी | एड़ी और चोटी | आग-पानी | आग और पानी |
| गौरी शंकर | गौरी और शंकर | राधाकृष्ण | राधा और कृष्ण |
| फलफूल | फल और फूल | भात-दाल | भात और दाल |
| लेन-देन | लेन और देन | शीतोष्ण | शीत और उष्ण |
| आगापीछा | आगा और पीछा | देवासुर | देव और असुर |
| भला-बुरा | भला और बुरा | भाई-बहन | भाई और बहन |
| शिव-पार्वती | शिव और पार्वती | धर्माधर्म | धर्म और अधर्म |
| धनुर्बाण | धनुष और बाण | रात-दिन | रात और दिन |
| जन्म-मरण | जन्म और मरण | तिल-चावल | तिल और चावल |
| नदी-नाले | नदी और नाले | नौन-तेल | नौन और तेल |
| पाप-पुण्य | पाप और पुण्य | हरि शंकर | हरि और शंकर |
| कपड़ालत्ता | कपड़ा-लत्ता वगैरह | जीव-जन्तु | जीव-जन्तु वगैरह |
| नाक-कान | नाक-कान वगैरह | अन्नजल | अन्न और जल |
| आवागमन | आना-जाना वगैरह | लाभालाभ | लाभ या अलाभ |

## बहुव्रीहि समास के महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी उदाहरण

| समस्त पद | समास विग्रह |
|---|---|
| चतुरानन | चार हैं आनन जिसके वह |
| जितेन्द्रिय | जीती हैं इन्द्रियाँ जिसने वह |
| दशानन | दश हैं आनन जिसके वह (रावण) |
| निर्धन | निर्गत है धन जिसके वह |
| नीलाम्बर | नीला है अंबर (कपड़ा) जिसके वह |
| पीताम्बर | पीत (पीला) है अम्बर जिसके वह |
| पवनाशन | पवन है अशन (भोजन) जिसका वह |
| वज्रदेह | वज्र है देह जिसकी वह |
| शांतिप्रिय | शांति है प्रिय जिसे वह |
| सहस्राक्ष | सहस्र हैं अक्ष जिसके वह |
| प्राप्तोदक | प्राप्त है उदक जिसे वह |
| नेकनाम | नेक है नाम जिसका वह |
| सतखंडा | सात हैं खंड जिसमें वह महल |
| चतुर्भुज | चार हैं भुजाएँ जिसकी वह |
| दिगम्बर | दिक् ही है अम्बर (वस्त्र) जिसका वह |

# 5 शब्द-युग्मों का अर्थ भेद

- ❖ भाषा में कुछ शब्द ऐसे होते हैं, जिनका उच्चारण कुछ मिलता-जुलता होता है और धीरे-धीरे उनका उच्चारण एक जैसा होने लगता है।
- ❖ ये शब्द अर्थ की दृष्टि से सर्वथा भिन्न होते हैं। अत: इनका शुद्ध प्रयोग जानना आवश्यक है अन्यथा समझने में या लेखन में त्रुटि हो सकती है।
- ❖ वे शब्द जिनका उच्चारण प्राय: समान होता है; परन्तु उनके अर्थ में भिन्नता होती है उन्हें **'शब्द-युग्म'** कहते हैं।
- ❖ युग्म-शब्दों के सम्बन्ध में विशेष बात यह है कि ये उच्चारण में लगभग एक जैसे प्रतीत होते हैं, किन्तु लिपि रूप में जब इनको पढ़ा जाता है तो भिन्नता दृष्टिगोचर होने लगती है।
- ❖ उदाहरण के लिए **'आदि'** और **'आदी'** शब्द हैं। यदि इनको केवल सुना जाएगा तो लगेगा कि दोनों का अर्थ एक ही है; किन्तु यदि इन्हें पढ़ा जाएगा तो भिन्न अर्थ की प्रतीति अपने आप हो जाएगी। अतः 'आदि' का अर्थ 'वगैरह' और 'आदी' का अर्थ 'आदत वाला' उभरकर सामने आ जाता है।

| शब्द | अर्थ | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|---|
| **'अ', 'आ' से निर्मित शब्द-युग्मों के उदाहरण** | | | |
| अगम | – दुर्लभ | अचर | – स्थावर |
| आगम | – शास्त्र | अचिर | – नवीन |
| अपेक्षा | – स्थावरन | अशक्त | – शक्तिहीन |
| उपेक्षा | – आवश्यकता | आसक्त | – मोहित |
| अक्ष | – धुरी | अनु | – पश्चात् |
| अक्षि | – आँख | अणु | – कण |
| अयश | – अपकीर्ति | अंतर | – फर्क, भेद |
| अवश | – लाचार | अनंतर | – बाद में |
| असित | – काला | अजर | – देवता |
| अशित | – खाया हुआ | अजिर | – आँगन |
| अनल | – आग | अथक | – बिना थक |
| अनिल | – हवा | अकथ | – न कहने योग्य |
| अभिहित | – कहा हुआ | अगद | – निरोग |
| अविहित | – अनुचित | अंगद | – बालि का पुत्र |
| अवंद्य | – निंदनीय | आसक्त | – विरक्त |
| अवध्य | – नहीं वध करने योग्य | अशक्त | – शक्तिहीन |
| अगत | – न गया हुआ | अगर | – धूपबत्ती, यदि |
| आगत | – आने वाला | अग्र | – आगे |
| अनावर्त | – न दोहराया हुआ | अनाचार | – अयोग्य आचरण |
| अनावृत्त | – न ढका हुआ | अत्याचार | – बुरा आचरण |
| अर्जन | – जन रहित, नुकसान | अपलक | – टकटकी लगाकर |
| अंजन | – काजल | अपलोक | – अपवाद, बदनामी |
| अवयव | – अंग | अवधूत | – साधु, संन्यासी |
| अव्यय | – अविकारी शब्द | अधूत | – निडर |
| अस्व | – धनहीन | अस्ति | – है (अस्तित्वमान) |
| अश्म | – पत्थर | अस्थि | – हड्डी |
| असाध | – कठिन | अशौच | – अशुद्ध |
| असाधु | – दुष्ट | अशोच | – बिना सोच के |
| अभिमान | – घमंड | अभार | – भारहीन |
| अभियान | – सन्नद्ध होना, पढ़ाई | आभार | – कृतज्ञता |
| आधि | – मानसिक कष्ट | आहुत | – यज्ञ |
| आधी | – आधा का स्त्रीलिंग | आहूत | – आमंत्रित |
| आभरण | – आभूषण | आश्रय | – सहारा |
| आवरण | – पर्दा | आश्रम | – तपोवन कुटिया |
| **'इ', 'ई', 'उ', 'ऊ' से निर्मित शब्द-युग्मों के उदाहरण** | | | |
| इड़ा | – पृथ्वी/नाड़ी | इतर | – भिन्न |
| ईडा | – स्तुति | इत्र | – सुगंधित द्रव्य |
| इंदिरा | – लक्ष्मी | ईति | – दैवी प्रकोप |
| इंद्रा | – इंद्र की पत्नी | इति | – समाप्त |
| उद्यत | – तैयार | उपकार | – भलाई |
| उद्धत | – शैतान/उद्दण्ड | अपकार | – बुराई |
| उर | – हृदय | इंदु | – चंद्रमा |
| उरु | – जाँघ | इंदुर | – चूहा |
| उत्पात | – उपद्रव | उपल | – पत्थर |
| उत्पाद | – उत्पन्न किया हुआ | उत्पल | – कमल |
| **'ए', 'ऐ', 'ओ', 'औ', 'अं' से निर्मित शब्द-युग्मों के उदाहरण** | | | |
| एकदा | – एक बार | ओटना | – बिनौले अलग करना |
| एकधा | – एक प्रकार | औटना | – खौलना |
| ओर | – तरफ | अंश | – भाग |
| और | – तथा | अंस | – कंधा |
| **'क', 'कं', 'कृ' से निर्मित शब्द-युग्मों के उदाहरण** | | | |
| किला | – गढ़ | कुच | – स्तन |
| कीला | – खूँटा | कूच | – प्रस्थान |
| कृपण | – कंजूस | कंच | – काँच |
| कृपाण | – तलवार | कंचन | – सुवर्ण |
| कलश | – घड़ा | कल्प | – अनेक युगों का समय |
| कुलिश | – हीरा/वज्र | कल्पित | – कल्पना किया गया |

# 6 पर्यायवाची शब्द

❖ किसी भी भाषा में एक भाव को व्यक्त करने के लिए एक ही शब्द होता है, फिर भी भाव के बहुत ही निकट तक पहुँचने वाले कई शब्द हो सकते हैं।
जैसे—
✧ **वृक्ष** कबहु नहिं फल भखै, नदी न संचै नीर।
✧ बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे **पेड़** खजूर।
✧ अति विशाल **तरु** एक उपारा।
✧ खाएसि फल अरु **विटप** उपारे।

❖ इन पंक्तियों में **वृक्ष, पेड़, तरु** और **विटप** शब्द पेड़ के अर्थ में प्रयुक्त हुए हैं।

❖ यद्यपि व्युत्पत्ति और रचना की दृष्टि से इन विभिन्न शब्दों का अलग-अलग महत्त्व है, परन्तु मोटे तौर पर ये शब्द समान अर्थ प्रकट करते हैं। इनके अलावा भी भाषा में अनेक शब्द ऐसे पाये जाते हैं, जो एक ही अर्थ देते हैं।

❖ ऐसे शब्द जो परस्पर समान अर्थ का बोध कराते हैं, **पर्यायवाची शब्द** कहलाते हैं।

## महत्त्वपूर्ण पर्यायवाची शब्दों के परीक्षोपयोगी उदाहरण

| पर्यायशब्द | पर्यायवाची |
|---|---|
| | **'अ' से बनने वाले पर्यायवाची** |
| **अकथनीय** | अनभिव्यंजनीय, अनिर्वचनीय, अपरिभाष्य, गोपनीय, चमत्कारपूर्ण, वर्णनातीत। |
| **अकर्मण्य** | आलसी, निकम्मा, निखट्टू, निठल्ला, निरुत्साही, निष्क्रिय, प्रयासहीन। |
| **अकस्मात** | अचानक, एकाएक, सहसा। |
| **अकाल** | काळ (राजस्थानी) दुर्भिक्ष, सूखा। |
| **अकिंचन** | अगतिक, अनुपाय, असहाय, कंगाल, गरीब, गुमनाम, दरिद्र, निर्धन, परावलंबी, साधनहीन। |
| **अक्षत** | अनुल्लंघित, अभंजित, अविभक्त, कौमार्यवान। |
| **अगाध** | अकूत, अगणनीय, अतुल, अत्यधिक, अनुमानातीत, अमित, असीम, निस्सीम, बेशुमार, भावपूर्ण। |
| **अग्नि** | अनल, अरुण, अशनि, आँच, आग, कृशानु, जातवेद, ज्वाला, दहन, धनंजय, पवि |
| **अचल** | अजंगम, अटल, अडिग, अवहनीय, अविचल, दृढ़, निश्चल, स्थावर, स्थिर। |
| **अचिर** | अल्पजीवी, क्षणभंगुर, क्षणिक। |
| **अचेत** | चेतनाशून्य, चेतनाहीन, बेखबर, बेहोश, मूर्च्छित, संज्ञाशून्य, संज्ञाहीन। |
| **अच्युत** | अटल, अनष्ट, अमर, ईश्वर, कृष्ण, परिवर्तनहीन, विष्णु। |
| **अचे** | चेतनाहीन, संज्ञाहीन, बेहोश, मूर्च्छित |
| **अज्ञानी** | मूर्ख, अनभिज्ञ, मूढ़, अनजान |
| **अती** | गत, विगत, भूत, व्यतीत |
| **अद्‌भु** | अनूठा, विचित्र, विलक्षण, अनोखा, अजीब |
| **अतिरिक्त** | अलग, जुदा, न्यारा, पृथक, भिन्न। |
| **अत्याचार** | अन्याय, अपकार, अनाचार, नृशंसता, उत्पात, जुल्म। |
| **अदृश्य** | अगोचर, अचाक्षुष, अप्रकट, अप्रत्यक्ष, अन्तर्धान, इंद्रियातीत, कुहरित, रहस्यपूर्ण, पर्देदार। |

| पर्यायशब्द | पर्यायवाची |
|---|---|
| **अनुचित** | अयुत, अनुपयुक्त, नाजायज, बेजा, गैरमाकूल, गैरवाजिब। |
| **अनुपम** | अद्‌भुत, अद्वितीय, अनूठा, अनूप, अनोखा, निराला, अतुल। |
| **अनुरूप** | मिलता-जुलता, सदृश, समान, समरूप, तुल्यरूप। |
| **अनूठा** | निराला, बेजोड़, विलक्षण, विचित्र, अनोखा। |
| **अन्वेषक** | अनुसंधानकर्ता, आविष्कर्ता, पुरातत्ववेत्ता, वैज्ञानिक। |
| **अभिजात** | कुलीन, योग्य, विशिष्ट, श्रेष्ठ, संभ्रांत। |
| **अशिष्ट** | अपमानजनक, अश्लील, असंस्कृत, असभ्य, अहंकारी, धृष्ट, निर्लज्ज। |
| **असुर** | तमचर, दनुज, दानव, दैत्य, निशाचर, रजनीचर, राक्षस, सुरारि। |
| **अर्जुन** | पार्थ, धनंजय, भारत, गुडाकेश, गांडीवधारी |
| **अधिकार** | हक, स्वत्व, दावा, शक्ति, सामर्थ्य, क्षमता |
| **अध्ययन** | अनुशीलन, पढ़ाई, परिशीलन, |
| **अदृश्य** | तिरोहित, लुप्त, गायब, ओझल, अंतर्धान, अस्त |
| **अनुपम** | अपूर्व, अनोखा, अद्भुत, अनूठा, अद्वितीय |
| **अशुद्ध** | अपवित्र, मलिन, गंदा, दूषित, अशुचि |
| **अवनति** | अपकर्ष, ह्रास, गिरावट, घटाव |
| **असीम** | बेहद, अपरिमित, नि:सीम, बेहिसाब |
| **अमीर** | धनी, धनाढ्य, धनवान, सम्पन्न |
| **अभिप्राय** | आशय, तात्पर्य, मंशा, उद्देश्य, प्रयोजन |
| **अभिमान** | अहंकार, गर्व, मद, दर्प, गरूर, घमंड, दंभ |
| **अप्सरा** | देवबाला, देवांगना, सुरबाला, सुरसुंदरी |
| **अभिजात** | श्रेष्ठ, उच्च, कुलीन, |
| **अरण्य** | जंगल, विपिन, कानन, वन |
| **अपमान** | अनादर, तिरस्कार, निरादर, बेइज्जती, अवमान, उपेक्षा |
| **अपयश** | बदनामी, अपकीर्ति, निन्दा, अकीर्ति |

# 7 विलोम शब्द

- जो शब्द एक-दूसरे के विपरीत अर्थ प्रकट करते हैं, उनको **विलोम शब्द** कहा जाता है।
  जैसे—गुण-अवगुण, धर्म-अधर्म। यहाँ **'गुण'** और **'धर्म'** के विलोम अर्थ देने वाले शब्द क्रमश: **'अवगुण'** व **'अधर्म'** हैं। विलोम शब्द को ही **विपरीतार्थक शब्द** भी कहते हैं।
- भाषा जीवन की अभिव्यक्ति है और जीवन द्वंद्वात्मक है, इसलिए प्रत्येक भाषा में दो विपरीत अर्थों, मंतव्यों को व्यक्त करने के लिए अलग-अलग शब्दों का अस्तित्व रहता है।
- विपरीत भाव को व्यक्त करने के लिए ही **विलोम** (उल्टा) **शब्दों** की जानकारी आवश्यक है।
- हिन्दी में ऐसे विलोम शब्द या तो मूल शब्द के रूप में पहले से ही विद्यमान हैं। जैसे – **दिन-रात, सुख-दु:ख, छोटा-बड़ा** उपसर्ग जोड़कर बनने वाले शब्द -
  जैसे- **ज्ञानी-अज्ञानी, अर्थ-अनर्थ** या उपसर्ग बदलकर जैसे–**सक्षम-अक्षम, अनुकूल-प्रतिकूल** बनाए जाते हैं।

### उपसर्ग जोड़कर बनने वाले विलोम शब्द

- **कई शब्द उपसर्ग जोड़कर भी बनाए जा सकते हैं** जैसे—आदान-प्रदान, सुलभ-दुर्लभ, आयात-निर्यात, संयाग-वियोग।
- **'अ' उपसर्ग जोड़कर**—सभ्य-असभ्य, न्याय-अन्याय, लौकिक-अलौकिक, हिंसा-अहिंसा, सामान्य-असामान्य।
- **'अप' उपसर्ग जोड़कर**—यश-अपयश, उत्कर्ष-अपकर्ष, मान-अपमान, कीर्ति-अपकीर्ति।
- **'अन्' उपसर्ग जोड़कर**—अंगीकार-अनंगीकार, उत्तरित-अनुत्तरित, अस्तित्व-अनस्तित्व, अभिज्ञ-अनभिज्ञ।
- **'निस्', 'निश्', 'निष्' उपसर्ग जोड़कर**—पाप-निष्पाप, सक्रिय-निष्क्रिय, सशुल्क-नि:शुल्क, सचेष्ट-निश्चेष्ट, तेज-निस्तेज।
- **'निर्' उपसर्ग जोड़कर**—अभिमान-निरभिमान, सापेक्ष-निरपेक्ष, आदर-निरादर, सामिष-निरामिष, सलज्ज-निर्लज्ज।
- **'वि' उपसर्ग जोड़कर**—सम्मुख-विमुख, राग-विराग, देश-विदेश, योजन-वियोजन।
- **'प्रति' उपसर्ग जोड़कर**—आगामी-प्रतिगामी, वादी-प्रतिवादी, घात-प्रतिघात, रूप-प्रतिरूप, आगमन-प्रत्यागमन।
- **'दुर' उपसर्ग जोड़कर**—सुबोध-दुर्बोध, सुव्यवस्थित-दुर्व्यवस्थित, सज्जन-दुर्जन।
- **'दुस्' उपसर्ग जोड़कर**—सत्कर्म-दुष्कर्म, सच्चरित्र-दुश्चरित्र।
- **'कु' उपसर्ग जोड़कर**—सुपात्र-कुपात्र, सुपुत्र-कुपुत्र, सुपाच्य-कुपाच्य, सन्मार्ग-कुमार्ग।
  - ✧ **लिंग परिवर्तन द्वारा**—राजा-रानी, भाई-बहन, वर-कन्या, माता-पिता, नर-नारी, लड़का-लड़की।
  - ✧ **प्रत्ययवत् प्रयुक्त शब्द-परिवर्तन द्वारा**—केन्द्राभिगामी-केंद्रापसारी, गतिवान-गतिहीन।
  - ✧ **नञ् समास द्वारा**—सभ्य-असभ्य, संभव-असंभव, लौकिक-अलौकिक, आदि-अनादि।
  - ✧ **भिन्न शब्द द्वारा**—लाभ-हानि, कटु-मधु, गुरु-लघु, मूक-वाचाल।

## विलोम शब्द तालिका

### 'अ', 'अं' से बनने वाले विलोम शब्दों के उदाहरण

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| **अचल** | सचल | **अथ** | इति |
| **अनुकूल** | प्रतिकूल | **अनंत** | सान्त |
| **अनर्थ** | अर्थ (मंगल) | **अचेतन** | सचेतन |
| **अनुराग** | विराग | **अनादि** | आदि |
| **अतिवृष्टि** | अनावृष्टि | **अग्रज** | अनुज |
| **अनुगामी** | प्रतिगामी | **अलभ्य** | लभ्य |
| **अर्वाचीन** | प्राचीन | **अबला** | सबला |
| **अमृत** | विष | **असीम** | ससीम |
| **अस्थिर** | स्थिर | **अपना** | पराया |
| **अपरिचित** | परिचित | **अणु** | परमाणु |
| **अर्थी** | प्रत्यर्थी | **अध:** | उपरि |
| **अन्विति** | अनन्विति | **अकंटक** | कंटकाकीर्ण |

| शब्द | विलोम | शब्द | विलोम |
|---|---|---|---|
| **अगाड़ी** | पिछाड़ी | **अग्रगामी** | पश्चगामी |
| **अच्युत** | च्युत | **अदृश्य** | दृश्य |
| **अवलंबित** | अनवलंबित | **असुविधा** | सुविधा |
| **अनिंदनीय** | निन्दनीय | **अभिलषित** | अनभिलषित |
| **अर्हता** | अनर्हता | **अतुकांत** | तुकांत |
| **अधिकांश** | अल्पांश | **अधिकार** | अनधिकार |
| **अभिमुख** | पराङ्मुख | **अधूरा** | पूरा |
| **अनहोनी** | होनी | **अभिशाप** | वरदान |
| **अनाहूत** | आहूत | **अभ्यंतर** | बाह्य |
| **अभ्यस्त** | अनभ्यस्त | **अनित्य** | नित्य |
| **अनुकूल** | प्रतिकूल | **अमावस्या** | पूर्णिमा |
| **अमीर** | गरीब | **अनुनासिक** | निरनुनासिक |

# 8 शब्द-शुद्धि - दिये गये अशुद्ध शब्दों को शुद्ध लिखना

❖ हिन्दी भाषा एक समृद्ध, परिपूर्ण और वैज्ञानिक भाषा है तथापि व्याकरण की दृष्टि से इसे अपनी मूल भाषा संस्कृत पर आश्रित रहना पड़ता है। संस्कृत व्याकरण का हिन्दी में पर्याप्त प्रयोग होता है और जहाँ व्याकरण के नियमों में थोड़ी भी शिथिलता बरती जाती है वहाँ अशुद्धियाँ शुरू हो जाना स्वाभाविक है।

❖ भौगोलिक, शैक्षणिक और भाषान्तर सम्पर्क से भाषा में उच्चारण तथा लेखन सम्बन्धी अशुद्धियाँ हो जाती हैं।

❖ व्याकरण से सम्बन्धित प्रमुख अशुद्धियाँ **स्वर, व्यंजन, वचन, लिङ्ग, अनुस्वार, विभक्ति** आदि के अनुचित प्रयोग से हो जाती हैं। इन त्रुटियों के कारण भाषा की प्रभावशीलता नष्ट हो जाती है और तब ही भाषा अपनी सम्प्रेषणीयता के महत्त्व को खोने लगती है। फिर वह भाषा साहित्यिक उपयोग के लिए अनुपयुक्त मानी जाती है।

❖ किसी भी स्थायी साहित्य के लिए शुद्ध भाषा अनिवार्य है। अत: भाषाविदों को सर्वप्रथम भाषा सम्बन्धी दोष दूर करना चाहिए।

❖ भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों से बचना ज़रूरी है। ऐसे शब्द अथवा पद जिनमें अशुद्धियों की अधिक सम्भावना रहती है।

**1. दीर्घ वर्ण को लघु वर्ण की तरह उच्चारित करने पर होने वाली अशुद्धि के उदाहरण—**

| अशुद्ध | शुद्ध | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| पत्नि | पत्नी | कौशल्या | कौशल्या |
| श्रीमति | श्रीमती | गोतम | गौतम |
| प्रोढ़ | प्रौढ़ | गोरव | गौरव |
| अक्षोहिणी | अक्षौहिणी | दिपावली | दीपावली |
| अनसुया | अनसूया | दिया | दीया |
| सुई | सूई | नुपुर | नूपुर |
| अहार | आहार | वधु | वधू |
| इंदोर | इंदौर | जरुरत | जरूरत |
| एश्वर्य | ऐश्वर्य | कोतुक | कौतुक |
| शुश्रुषा | शुश्रूषा | निरोग | नीरोग |
| कोमुदी | कौमुदी | शताब्दि | शताब्दी |

**2. अनावश्यक रूप से 'इ' का स्वर जोड़ने पर होने वाली अशुद्धि के उदाहरण—**

| अशुद्ध | शुद्ध | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| कवियित्री | कवयित्री | तिरिस्कार | तिरस्कार |
| रचियता | रचयिता | द्वारिका | द्वारका |
| अहिल्या | अहल्या | फिजूल | फजूल |
| छिपकिली | छिपकली | वापिस | वापस |
| प्रदर्शिनी | प्रदर्शनी | शिखिर | शिखर |
| सिंहिनी | सिंहनी | परिणित | परिणत |

**3. 'इ', 'उ' का स्वर आवश्यक होते हुए भी उसे विलोपित करने पर होने वाली अशुद्धि के उदाहरण—**

| अशुद्ध | शुद्ध | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| पड़ोसन | पड़ोसिन | साँपन | साँपिन |
| बंजारन | बंजारिन | सरोजनी | सरोजिनी |
| भगनी | भगिनी | हिरण्यकश्यप | हिरण्यकशिपु |
| मैथलीकरण | मैथिलीकरण | इंदरा | इंदिरा |
| युधिष्ठर | युधिष्ठिर | उज्जयनी | उज्जयिनी |

**4. हिन्दी में कुछ शब्द दोनों रूपों में प्रचलित हैं एवं दोनों ही रूपों में हमेशा शुद्ध रहते हैं।**

**विशेष नियम के उदाहरण**

| शुद्ध | शुद्ध | शुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| मनोरंजन | मनरंजन | मुसकान | मुस्कान |
| अँगरेजी | अंग्रेजी | आधिक्य | अधिकता |
| क्रोधित | क्रुद्ध | एकता | ऐक्य |
| वर्दी | वरदी | समता | साम्य |
| हलवा | हलुआ | बसंत | वसंत |
| एकत्रित | एकत्र | कुंवर | कुँवर |
| मध्यान्ह | मध्याह्न | सोसायटी | सोयाइटी |

**5.** ✧ **वर्गोत्तर व्यंजन ('य', 'र','ल', 'व', 'श', 'ष', 'स', 'ह') के लिए केवल अनुस्वार का प्रयोग होता है।**
जैसे—किंवदन्ती, संयम, हंस, संशय, संवाद, संरक्षण।

✧ वर्गोत्तर में अनुस्वार के स्थान पर पंचम वर्ण का प्रयोग करने से शुद्ध अशुद्ध हो जाता है। जैसे—सन्सार (अशुद्ध), हन्स (अशुद्ध)

✧ **निम्न शब्दों में वर्गीय व्यंजन होने पर भी पंचम वर्ण का प्रयोग ही शुद्ध होगा, उनके स्थान पर अनुस्वार स्वीकार्य नहीं है।**
जैसे—अम्मा, उन्नति, गन्ना, वाङ्मय, सम्मुख, सम्मति व धन्वन्तरि (धन्वंतरी)

✧ **संधि करते समय मूर्धन्य ध्वनि पर 'न' वर्ण 'ण' वर्ण में बदल जाता है।**
जैसे—राम+अयन = रामायण (यहाँ 'र' मूर्धन्य ध्वनि है।)
ऋ+न = ऋण (यहाँ 'ऋ' मूर्धन्य ध्वनि है।)

✧ **निम्न शब्दों में 'ण' वर्ण का ही प्रयोग होता है, इसके स्थान पर 'न' लिखने से शब्द अशुद्ध हो जाता है।**
जैसे—शरण, मरण, चरण, रण, हरण, हरिण, भीषण, फण, रमण, भ्रमण, अनुकरण, लक्ष्मण, संचरण, संस्करण, विकिरण, प्रसारण, आभूषण, दर्पण, आकर्षण, विकर्षण, प्रणाम, प्रमाण, कृपाण

**6. संधि नियमों की उपेक्षा से होने वाली अशुद्धियाँ।**
जैसे— अभि+अर्थी=अभ्यर्थी। परन्तु कुछ लोग इसे अभ्यार्थी उच्चारित करते हैं, जो गलत है।

# 9 वाक्य-शुद्धि

## वर्तनी संबंधी अशुद्धियों को छोड़कर वाक्य संबंधी अन्य व्याकरणिक अशुद्धियों का शुद्धिकरण

❖ विचारों की परस्पर भावाभिव्यक्ति का सबसे बड़ा साधन भाषा है। जिसमें वाक्य का स्थान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होता है।

❖ किसी विचार अथवा भाव को स्पष्ट एवं पूर्णतः के साथ व्यक्त करने वाला पद समूह वाक्य कहा जाता है।

❖ प्रसिद्ध वैयाकरण पण्डित कामता प्रसाद गुरु के अनुसार **''एक पूर्ण विचार व्यक्त करने वाला शब्द समूह वाक्य कहलाता है।''**

❖ भाषा में अशुद्धियाँ प्रायः वर्तनी और व्याकरण की ही अधिक होती हैं तथा वर्तनी की अशुद्धियाँ भी मात्रा और वर्णों से सम्बन्धित होती हैं।

❖ भाषा में अशुद्धियाँ कहाँ-कहाँ और किस प्रकार की होती हैं उसके कतिपय उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं।

❖ पहले संज्ञा सर्वनामादि शब्द भेदों से सम्बन्धित और बाद में कारक आदि तथा व्याकरणांशों से सम्बन्धित कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं। वाक्य अशुद्धि कई प्रकार से हो सकती है। जैसे—

### वाक्यगत अशुद्धि के प्रमुख कारण व भेद

1. **पद क्रम सम्बन्धी अशुद्धियाँ**
2. **संज्ञा पद के गलत प्रयोग से होने वाली अशुद्धियाँ**
3. **सर्वनाम से सम्बन्धित अशुद्धियाँ**
4. **क्रिया सम्बन्धी अशुद्धियाँ**
5. **लिंग सम्बन्धी अशुद्धियाँ**
6. **वचन सम्बन्धी अशुद्धियाँ**
7. **आवश्यक पद के लोप या अभाव के कारण उत्पन्न अशुद्धियाँ**
8. **किसी अनावश्यक पद के प्रयोग या पद की पुनरुक्ति से उत्पन्न अशुद्धियाँ**
9. **कारक सम्बन्धी अशुद्धियाँ**
10. **विशेषण सम्बन्धी अशुद्धियाँ**
11. **अव्यय सम्बन्धी अशुद्धियाँ**
12. **विराम चिह्न सम्बन्धी अशुद्धियाँ**

### 1. पदक्रम-संबंधी अशुद्धियाँ

❖ वाक्य रचना में पद क्रम का व्याकरणिक महत्त्व है। हिन्दी में सामान्य पद रचना में सर्वप्रथम कर्ता एवं उसके बाद कर्म तथा अन्त में क्रिया का प्रयोग किया जाता हैं।

जैसे—सुमित्रा महाजन लोकसभाध्यक्ष चुनी गई।

इस वाक्य में सुमित्रा महाजन (कर्ता), लोकसभाध्यक्ष (कर्म) चुनी गई (क्रिया) पद है।

✧ मुझको उसने बुलाया। **(अशुद्ध वाक्य)**

✧ उसने मुझको बुलाया। **(शुद्ध वाक्य)**

### पदक्रम सम्बन्धी अशुद्धियों के महत्त्वपूर्ण नियम

❖ वाक्य में जब कर्ता, कर्म व क्रिया के अलावा अन्य पद यथा इनके विस्तार आदि हो तो उनका प्रयोग करते समय निम्न नियमों का ध्यान रखना चाहिए—

**नियम (1)**—जहाँ एकाधिक कर्म हों वहाँ प्रधान कर्म व गौण कर्म की पहचान कर गौण कर्म पहले तथा प्रधान कर्म बाद में लिखना चाहिए।

❖ ऐसे वाक्यों में अप्राणीवाचक कर्म मुख्य कर्म होता है तथा क्रिया का रूप उसी के अनुसार प्रयुक्त करना चाहिए।

जैसे—सुनील ने मोहन को एक किताब दी।

यहाँ मोहन (गौण कर्म) व किताब (मुख्य कर्म) है।

इसलिए गौण कर्म पहले तथा मुख्य कर्म बाद में प्रयुक्त हुआ है।

**अशुद्ध**— सुनीता ने एक भूखण्ड नीता को दिया।

**शुद्ध** — सुनीता ने नीता को एक भूखण्ड दिया।

**अशुद्ध**— तीन बजे परसों स्टेशन जाऊँगा मैं।

**शुद्ध** — मैं परसों तीन बजे स्टेशन जाऊँगा।

**नियम (2)**—किसी वाक्य में एकाधिक कारक एक साथ हों तो उन्हें क्रमशः कर्ता कारक, अधिकरण कारक, अपादान कारक, सम्प्रदान कारक, करण कारक व अन्त में कर्म कारक के रूप में लिखा जाना चाहिए। जैसे—

✧ मैंने दफ्तर के लिए बाजार में एक कुर्सी खरीदी। **(अशुद्ध)**

✧ मैंने बाजार से दफ्तर के लिए एक कुर्सी खरीदी। **(शुद्ध)**

**अशुद्ध**— लंका में अयोध्या के राजा राम ने राजपद विभीषण को प्रदान किया।

**शुद्ध** — अयोध्या के राजा राम ने लंका में विभीषण को राजपद प्रदान किया।

**अशुद्ध**— देश को भगतसिंह जैसे सपूतों ने गुलामी से मुक्त कराया

**शुद्ध** — भगतसिंह जैसे सपूतों ने देश को गुलामी से मुक्त कराया।

**नियम (3)**—हिन्दी में सामान्यतः विशेषण संज्ञा से पूर्व तथा क्रिया विशेषण क्रिया से पूर्व प्रयुक्त होते हैं।

जैसे—वह लड़का शहर में रहता है। (सार्वनामिक विशेषण 'वह' का प्रयोग संज्ञा शब्द 'लड़का' से पूर्व हुआ है।)।

✧ धीरे-धीरे लिखो।

✧ जल्दी-जल्दी चलो।

✧ साफ-साफ कहो।

❖ इन वाक्यों में क्रमशः धीरे-धीरे, जल्दी-जल्दी व साफ-साफ क्रिया विशेषण हैं जो क्रिया (लिखो, चलो व कहो से पूर्व प्रयुक्त हैं।) प्रश्नवाचक शब्द 'क्या' का प्रयोग भी हिन्दी में प्रायः वाक्य के पहले किया जाता है। जैसे—क्या काम करते हो?

❖ लेकिन भाषा में पदों की निश्चितता के ये नियम निरपवाद नहीं हैं। किसी पद विशेष पर बल देने के लिए इनके क्रम में भी परिवर्तन हो सकता है। जैसे—पाठ पूरा कर लिया क्या?

**अशुद्ध**— अपने ठीक रास्ते पर है।
**शुद्ध** — आप ठीक रास्ते पर हैं।
**अशुद्ध**— जो लोग चुनाव लड़ना चाहते हैं वह लड़ सकते हैं।
**शुद्ध** — जो लोग चुनाव लड़ना चाहते हैं, वे चुनाव लड़ सकते हैं।
**अशुद्ध**— मैंने अयोध्या जाना है।
**शुद्ध** — मुझे अयोध्या जाना है।
**अशुद्ध**— वह तो गया किन्तु वह उसकी पुस्तक नहीं ले गया।
**शुद्ध** — वह तो गया किन्तु अपनी पुस्तक नहीं ले गया।
**अशुद्ध**— मेरे को आज किताबें और कापियाँ चाहिए।
**शुद्ध** — आज मुझे भी पुस्तकें और कापियाँ चाहिए।
**अशुद्ध**— वह उसके गाँव से आज ही आया।
**शुद्ध** — वह अपने गाँव से आज ही आया।
**अशुद्ध**— यह पुष्प इसकी सुगन्ध से महक रहा है।
**शुद्ध** — यह पुष्प अपनी सुगन्ध से महक रहा है।
**अशुद्ध**— उसने जल्दी घर जाना था।
**शुद्ध** — उसे जल्दी घर जाना था।
**अशुद्ध**— जिन्होंने करना है, वे पाप भी करके रहेंगे।
**शुद्ध** — जिन्हें करना है, वे पाप भी करके रहेंगे।

**सर्वनाम सम्बन्धी परिवर्तन की तालिका**

| क्र. सं. | कारक–पुरुष व वचन | कर्ता कारक | कर्म कारक | करण कारक | सम्प्रदान कारक | अपादान कारक | सम्बन्ध कारक | अधिकरण कारक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | उत्तम पुरुष एकवचन | मैं | मुझे | मुझ से, मेरे द्वारा | मुझे, मुझ को, मेरे लिए | मुझ से | मेरा, मेरे, मेरी | मुझ में, मुझ पर |
| 2. | उत्तम पुरुष बहुवचन | हम, हमने | हमें | हम से, हमारे द्वारा | हमें, हम को, हमारे लिए | हम से | हमारा, हमारे | हम में, हम पर |
| 3. | मध्यम पुरुष एकवचन | तू | तुझे | तुम से, तेरे द्वारा | तुझे, तुझ को | तुझ से | तेरा | तुझ में, तुम पर |
| 4. | मध्यम पुरुष बहुवचन | तुम | तुम्हें | तुम से, तुम्हारे द्वारा | तुम्हें, तुम को | तुम से | तुम्हारा | तुम में, तुम पर |
| 5. | अन्य पुरुष एकवचन | वह | उसे, उसको | उससे, उसके द्वारा | उसे, उसको | उससे | उसका | उसमें, उस पर |
| 6. | अन्य पुरुष बहुवचन | वे | उन्हें, उनको | उनसे, उनके द्वारा | उन्हें, उनको | उनसे | उनका | उनमें, उन पर |

## 4. क्रिया संबंधी अशुद्धियाँ

- ❖ क्रिया वाक्य का अनिवार्य अंग है। किसी वाक्य में प्रयुक्त क्रिया के रूप से ही उस वाक्य के सही व्याकरणिक रूप का पता चलता है।
- ❖ क्रिया के लिंग, काल, वचन, रूप आदि विभिन्न कारणों से परिवर्तित होते रहते हैं। इस परिवर्तन के कारण ही क्रिया को विकारी शब्द माना जाता है।
- ❖ क्रिया सम्बन्धी अशुद्धियों से बचने के लिए पहले क्रिया के सम्बन्ध में संक्षिप्त आधारभूत नियमों की जानकारी होना आवश्यक है।

### क्रिया के प्रयोग संबंधी सामान्य नियम

**नियम (1)**—जो शब्द किसी कार्य को करने या उसके होने का भाव देते हैं, उन्हें **क्रिया** कहा जाता है।

- ❖ 'क्रिया' शब्द काल से जुड़ा होता है जिसके अनुसार क्रिया के रूप में परिवर्तन होता रहता है। कई बार असावधानी के कारण इनके रूप में गलती हो जाती है।
- ❖ क्रिया पद में गलती का दूसरा प्रमुख कारण है अकर्मक, सकर्मक और प्रेरणार्थक क्रिया शब्दों का होना। एक ही शब्द के ये तीन रूप हो सकते हैं। जैसे—एक शब्द है 'चलना'। यह अकर्मक क्रिया है।
- ❖ अकर्मक क्रिया वह है जहाँ वाक्य में कर्म अपेक्षित न हो। जब क्रिया का फल कर्ता पर पड़ता है वहाँ क्रिया अकर्मक होती है। ऐसी क्रिया में शब्द का जुड़ाव कर्ता से होगा। लेकिन सकर्मक क्रिया में ऐसा नहीं होता, वहाँ क्रिया के व्यापार का फल कर्म पर पड़ता है, जैसे—चलाना। इसमें वाक्य बनेगा, **तुम्हें वह कार चलानी है।** इस वाक्य में 'चलाना' शब्द कार से जुड़ गया है न कि तुम्हें से। इसलिए यह शब्द सकर्मक क्रिया है।
- ❖ सकर्मक क्रिया के साथ कर्म का प्रयोग अपेक्षित होता है अन्यथा पूर्णार्थ की प्रतीति नहीं होती। प्रेरणार्थक क्रिया उसे कहते हैं, जब स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे को क्रिया हेतु प्रेरित करता है। जैसे—'चलवाना' या 'उठवाना' प्रेरणार्थक क्रिया शब्द हैं।
- ❖ वाक्यों में प्रायः जब क्रिया का कर्ता से संबंध स्पष्ट नहीं होता वहाँ क्रिया सम्बन्धी अशुद्धियाँ हो जाती हैं।
  आदरणीय व्यक्ति के लिए कर्ता एकवचन होने पर भी बहुवचन की क्रिया प्रयुक्त होती है। जैसे—
  - ✧ गुरुजी पढ़ा रहे हैं। (शुद्ध)
  - ✧ गुरुजी पढ़ा रहा है। (अशुद्ध)
  - ✧ श्री नरेन्द्र दामोदरदास मोदी देश के प्रधानमंत्री हैं। (शुद्ध)
  - ✧ कल आप कहाँ गए थे? (शुद्ध)
- ❖ वाक्य में विभिन्न स्थितियों के अनुसार क्रिया का प्रयोग होना चाहिए। जैसे—

**नियम (2)**—विभिन्न लिंग—वचन के युग्म शब्दों का प्रयोग होने पर क्रिया का रूप अंतिम शब्द के अनुसार होगा। जैसे—

- ✧ उसने दाल–भात खाया। (भात–पुल्लिंग)
- ✧ उसने दाल–रोटी खाई। (रोटी–स्त्रीलिंग)
- ✧ मीरा ने समोसा–जलेबी बनाई। (जलेबी–स्त्रीलिंग)
- ✧ मीरा ने जलेबी–समोसा बनाया (समोसा–पुल्लिंग)

**नियम (3)**—जहाँ वाक्य में एक ही लिंग, वचन की विभिन्न संज्ञाएँ विभक्ति रहित कर्म बनकर वाक्य में प्रयुक्त हों तो क्रिया उसी लिंग में बहुवचन रूप में होती है। जैसे—

1. चित्रकार ने बन्दर, शेर और भालू देखे।
2. चोर ने रजाई, साड़ी और चाँदी चुराई।

**नियम (4)**—नित्य बहुवचन शब्दों के साथ बहुवचन क्रिया का प्रयोग होता है। हिन्दी में हस्ताक्षर, **प्राण, दर्शन, आँसू, होश, लोग, ओठ, दाम, अक्षत, बाल, रोंगटे, रोम, नेत्र** आदि नित्य बहुवचन शब्द हैं। जैसे—

**शुद्ध** — यह सौ रुपये का नोट है।
**अशुद्ध**— नवरस में शृंगार को रसराज कहते हैं।
**शुद्ध** — नवरसों में शृंगार को रसराज कहते हैं।

**नियम (4)**—कुछ पुल्लिंग संज्ञाएँ निर्विभक्ति रूप में दोनों वचनों में समान रहती हैं। अतः एकवचन व बहुवचन दोनों रूपों में वह समान ही रहती हैं। जैसे—माया, नाना, चाचा, दाता, युवा, योद्धा, आत्मा, देवता, जमाता।

**अशुद्ध**— वह मामे के घर गया है।
**शुद्ध** — वह मामा के घर गया है।
**अशुद्ध**— पंजाब के लोग अच्छे यौद्धाएँ हैं।
**शुद्ध** — पंजाब के लोग अच्छे यौद्धा हैं।

**नियम (5)**—स्त्रीलिंग संज्ञाओं के आकारान्त, ईकारान्त व अकारान्त शब्दों को बहुवचन बनाते समय उनके अन्त में क्रमशः **एँ, याँ,** व **ओं** शब्द जोड़े जाते हैं तथा अन्त की **ई, इ** में व **ऊ, उ** में बदल जाता है। जैसे—

| | | |
|---|---|---|
| शाखा–शाखाएँ | नदी–नदियाँ | वधू–वधुओं |
| परीक्षा–परीक्षाएँ | नारी–नारियाँ | बहू–बहुओं |
| खबर–खबरें | साड़ी–साड़ियाँ | पर्वत–पर्वतों |

**उपरोक्त नियम की लापरवाही से होने वाले अशुद्ध वाक्य**—

**अशुद्ध**— बी.ए. फाइनल की परीक्षा चल रही है।
**शुद्ध** — बी.ए. फाइनल की परीक्षाएँ चल रही हैं।
**अशुद्ध**— हिमालय पर्वत का राजा है।
**शुद्ध** — हिमालय पर्वतों का राजा है।
**अशुद्ध**— दूरदर्शन पर खबर कितने बजे आती हैं।
**शुद्ध** — दूरदर्शन पर खबरें कितने बजे आती हैं।

**नियम (6)**—जिन शब्दों के अन्त में **गण, वर्ग, जन, लोग, वृन्द, परिषद, मण्डल** होते हैं, वे व्यवहार से बहुवचन ही होते हैं। ऐसे शब्दों को बहुवचन बनाने हेतु किसी परिवर्तन की आवश्यकता नहीं होती।

इस प्रकार के शब्दों के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं—**युवा–मण्डल, गुरुजन, नारिवृन्द, कर्मचारी वर्ग, आपलोग, गरीब लोग, आमजन, नेतागण, नागरिकगण, भक्तगण, कविवृन्द, स्त्रीजन, श्रमिकजन**

इस कारण से अशुद्ध होने वाले वाक्यों के शुद्ध रूप इस प्रकार हैं—

**अशुद्ध**— गुरुजनें आ गए।
**शुद्ध** — गुरुजन आ गए।
**अशुद्ध**— आप लोग कहाँ गया।
**शुद्ध** — आप लोग कहाँ गए।
**अशुद्ध**— नेतागणों जनता से परेशान हैं।
**शुद्ध** — नेतागण जनता से परेशान हैं।

**नियम (7)**—बहुवचन शब्द का प्रयोग करते समय उसे अनावश्यक बहुवचन बनाने से वाक्य अशुद्ध हो जाता है। जैसे—

**अशुद्ध**— वहाँ अनेकों कार खड़ी थी।
**शुद्ध** — वहाँ अनेक कार खड़ी थी।
**अशुद्ध**— हमारे सामानों का ध्यान रखना।
**शुद्ध** — हमारे सामान का ध्यान रखना।

**नियम (8)**—सविभक्ति संज्ञादि शब्दों के अन्त के **अ, आ, ए, उ, ऊ, इ, ई के अन्त में यों जोड़ने से पूर्व ऊ, व ई को क्रमशः उ व ई** में बदलना होता है। जैसे—

**अशुद्ध**— मिताली मैच खेला।
**शुद्ध** — मिताली ने मैच खेला।
**अशुद्ध**— गरीबों के लिए नए आवास का निर्माण होगा।
**शुद्ध** — गरीबों के लिए नए आवासों का निर्माण होगा।
**अशुद्ध**— भारतीय स्त्रीयों ने देश का गौरव बढ़ाया है।
**शुद्ध** — भारतीय स्त्रियों ने देश का गौरव बढ़ाया है।

**नियम (9)**—**भूख, प्यास, जाड़ा, आँख, कान, पाँव** इत्यादि शब्द यदि करण कारक में स विभक्ति हों तो एकवचन तथा निर्विभक्ति हों तो बहुवचन रूप में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

| क्र. | सविभक्ति (सप्रत्यय) | निर्विभक्ति (अप्रत्यय) |
|---|---|---|
| 1. | लड़का भूख से बेचैन है। | लड़का भूखों बेचैन है। |
| 2. | स्त्री जाड़े से काँप रही है। | स्त्री जाड़ों काँप रही है। |
| 3. | घोड़ा प्यास से मर रहा है। | घोड़ा प्यासों मर रहा है। |
| 4. | कान से सुनी बात पर ध्यान मत दो। | कानों सुनी बात पर ध्यान मत दो। |
| 5. | बच्चा अपने पाँव से चलता है। | बच्चा अपने पाँवों चलता है। |

**नियम (10)**—**'प्रत्येक', 'किसी', 'कोई'** आदि शब्दों का प्रयोग सदा एकवचन में होता है। जैसे—

✧ प्रत्येक नेता वोट चाहता है।
✧ उसने अभी तक कोई काम नहीं किया।
✧ उसे किसी ने देख लिया था।

**नियम (11)**—'सब' का प्रयोग समुच्चय रूप में हो तो एकवचन जबकि काम की अधिकता के बोध में हो तो बहुवचन रूप में प्रयुक्त होता है। जैसे—

✧ तुम्हारा सब काम गलत है। (एकवचन)
✧ सब यही कहते हैं। (बहुवचन)

**नियम (12)**—भाववाचक और गुणवाचक संज्ञाओं का प्रयोग एकवचन में होता है। जैसे—हम उनकी सज्जनता पर मुग्ध हैं। लेकिन, जहाँ संख्या के प्रकार का बोध हो वहाँ ये संज्ञाएँ भी बहुवचन हो जाती हैं। जैसे—

✧ मैं उनकी विवशता को समझता हूँ। (एकवचन, शुद्ध वाक्य)
✧ मैं उनकी अनेक विवशताओं को समझता हूँ। (बहुवचन, शुद्ध वाक्य)

**नियम (13)**—द्रव्यवाचक संज्ञाओं का प्रयोग एक वचन में होता है। जैसे—तेल कहाँ मिलता है? लेकिन जब द्रव्य के विभिन्न प्रकारों का बोध हो, तो द्रव्यवाचक संज्ञा बहुवचन में प्रयुक्त होगी।

जैसे—चमेली, गुलाब, तिल, इत्यादि के तेल अच्छे होते हैं।

**वचन संबंधी अशुद्धियों के अन्य महत्वपूर्ण परीक्षोपयोगी उदाहरण**—

**अशुद्ध**— हम दोनों की स्थिति समान है।
**शुद्ध** — हम दोनों की स्थितियाँ समान हैं।
**अशुद्ध**— वह बालक जन्मते ही मर गया।
**शुद्ध** — वह बालक जन्म लेते ही मर गया।
**अशुद्ध**— यह महिला विद्वान है।
**शुद्ध** — यह महिला विदुषी है।
**अशुद्ध**— सुभद्रा कुमारी चौहान बड़ी जीवंत कवि थीं।
**शुद्ध** — सुभद्रा कुमारी चौहान बड़ी जीवंत कवयित्री थीं।
**अशुद्ध**— मेरे घर में केवल मात्र एक चारपाई है।
**शुद्ध** — मेरे घर में केवल एक चारपाई है।
**अशुद्ध**— मनुष्य को संकट में धैर्यता रखनी चाहिए।
**शुद्ध** — मनुष्य को संकट में धैर्य रखना चाहिए।

# 10 वाक्यांश के लिए एक उपयुक्त शब्द

- **'वाक्य खंड के लिए एक शब्द'** की जानकारी रचनात्मक दृष्टि से परीक्षार्थियों के लिए अत्यन्त आवश्यक है। जहाँ वस्तुनिष्ठ परीक्षाओं में यह भाग प्रत्याशियों को पूर्ण अंक दिलाता है वहीं दूसरी ओर यह अपठित गद्यांश को समझने व निबन्ध रचना में विशेष रूप से सहयोगी है।
- इसके प्रयोग द्वारा रचनाकार कम से कम शब्दों में सरल व सुदृढ़ अभिव्यक्ति कर सकता है जिससे रचना की शैली व भाषा दोनों में निखार आता है।
- इसके अंतर्गत परीक्षार्थी को दिए गए वाक्यांश के लिए उपयुक्त शब्द का चयन चार सम्भावित विकल्पों में से करना होता है—

**उदाहरण**—किसी बात के मर्म (गूढ़ रहस्य) को जानने वाला—
(क) विज्ञ (ख) ज्ञाता (ग) मर्मज्ञ (घ) अभिज्ञ **(ग)**

**हल**—स्पष्ट है जो मर्म का जानने वाला हो,वह **मर्मज्ञ** कहा जाता है।

- यहाँ कुछ महत्त्वपूर्ण अनेक शब्द अथवा वाक्यांश देकर उनके लिए उपयुक्त शब्द प्रस्तुत किए जा रहे हैं। ये शब्द परीक्षा के लिए तो उपयोगी हैं ही, इनके सम्यक् अनुशीलन से परीक्षार्थी के पारिभाषिक शब्द-ज्ञान में भी वृद्धि होगी।

| | वाक्यांश | एक शब्द |
|---|---|---|
| ❖ | जिसे जाना न जा सके | **अज्ञेय** |
| ❖ | जिसकी चिंता न की जा सके | **अचिंतनीय** |
| ❖ | जो संभव नहीं हो सकता | **असंभव** |
| ❖ | जो कम बोलता है | **अल्पभाषी/मितभाषी** |
| ❖ | जो घोड़े की सवारी करता हो | **अश्वारोही** |
| ❖ | जिसका नाम न हो | **अनाम** |
| ❖ | जो अनुकरण करने योग्य है | **अनुकरणीय** |
| ❖ | जो खाने योग्य न हो | **अखाद्य** |
| ❖ | जो अपने स्थान से न हिले | **अच्युत** |
| ❖ | जिसका दमन न किया जा सके | **अदम्य** |
| ❖ | जिसका वर्णन न किया जा सके | **अवर्णनीय** |
| ❖ | जिसका कोई शत्रु न हो | **अजातशत्रु** |
| ❖ | जिसका स्पर्श करना वर्जित हो | **अस्पृश्य** |
| ❖ | अवसर का लाभ उठाने वाला | **अवसरवादी** |
| ❖ | जो नियम के विरुद्ध हो | **अनियमित** |
| ❖ | जिसका इलाज न हो सके | **असाध्य** |
| ❖ | जहाँ अनाथ रहते हों | **अनाथालय** |
| ❖ | जो व्यक्ति किसी बालक की देखरेख करता है | **अभिभावक** |
| ❖ | जो बात कही न जा सके | **अकथनीय** |
| ❖ | जिसका जन्म न हो | **अजन्मा** |
| ❖ | जिसके पास कुछ न हो | **अकिंचन** |
| ❖ | जो कभी तृप्त न होता हो | **अतृप्त** |
| ❖ | किसी चीज़ की खोज करने वाला | **अन्वेषक** |
| ❖ | सब राष्ट्रों से सम्बन्धित | **अन्तरराष्ट्रीय** |
| ❖ | जो अपना प्रभाव दिखाने में न चूके | **अचूक** |

| | वाक्यांश | एक शब्द |
|---|---|---|
| ❖ | जिस पर अभियोग लगाया गया हो | **अभियुक्त** |
| ❖ | जो कम व्यय करता हो | **अल्पव्ययी** |
| ❖ | बिना सोचे-समझे किया गया विश्वास | **अन्धविश्वास** |
| ❖ | जिसमें शक्ति न हो | **अशक्त** |
| ❖ | जो पहले न पढ़ा हो | **अपठित** |
| ❖ | जो बात न कही गयी हो | **अनकही** |
| ❖ | जिसकी आशा न की गयी हो | **अप्रत्याशित** |
| ❖ | जो कुछ न करता हो | **अकर्मण्य** |
| ❖ | बिना वेतन के काम करने वाला | **अवैतनिक** |
| ❖ | जिसकी थाह न लगे | **अथाह** |
| ❖ | जिसको देखना संभव नहीं है | **अदृश्य** |
| ❖ | जिसकी कल्पना न की जा सके | **अकल्पनीय** |
| ❖ | जो कभी मरता न हो | **अमर** |
| ❖ | एक-एक अक्षर के अनुसार | **अक्षरशः** |
| ❖ | जिसके माता-पिता न हों | **अनाथ** |
| ❖ | जिसे कभी बुढ़ापा न आये | **अजर** |
| ❖ | जो धन का दुरुपयोग करता हो | **अपव्ययी** |
| ❖ | जहाँ पहुँचा न जा सके | **अगम्य** |
| ❖ | जिसकी कोई उपमा न हो | **अनुपम** |
| ❖ | जिसका जन्म बाद में हुआ हो | **अनुज** |
| ❖ | जो पढ़ा लिखा न हो | **अशिक्षित/निरक्षर** |
| ❖ | जो बीत चुका हो | **अतीत** |
| ❖ | जिसमें कोई विकार न हो | **अविकारी** |
| ❖ | जिसकी बराबरी दूसरा न कर सके | **अद्वितीय** |
| ❖ | कानून के विरुद्ध | **अवैध** |

# 11 पारिभाषिक शब्दावली - प्रशासन से संबंधित अंग्रेजी शब्दों के समकक्ष हिन्दी शब्द

- प्रशासन से सम्बन्धित अंग्रेजी शब्दों के समानार्थक हिन्दी शब्द **'पारिभाषिक शब्द'** होते हैं। इसका अभिधेयार्थ ही ग्रहण किया जाता है। ऐसे शब्दों का लाक्षणिक या व्यंजनात्मक अर्थ में प्रयोग नहीं किया जाता।
- पारिभाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं जो रसायन, भौतिक, दर्शन, राजनीति आदि विभिन्न विज्ञानों के शब्द होते हैं।
- अर्थ और प्रयोग की दृष्टि से निश्चित रूप से पारिभाषित होने के कारण ही ये शब्द पारिभाषिक शब्द कहे जाते हैं।
- पारिभाषिक शब्दों का अर्थ सीमित होता है। किस शब्द का क्या अर्थ है और उसे कहाँ प्रयुक्त किया जाना है यह सब सुनिश्चित हुआ करता है। पारिभाषिक शब्द के स्थान पर किसी पर्याय या समानार्थी शब्द का प्रयोग नहीं किया जा सकता।
- भारतीय संविधान में हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्वीकार किया गया है।
- स्वतन्त्रता से पूर्व तक भारत में प्रशासनिक न्यायालय तथा अन्य सरकारी क्षेत्रों में अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग होता था, परन्तु स्वतन्त्र भारत में अंग्रेजी शब्दों के स्थान पर जो हिन्दी शब्द स्वीकृत और प्रयुक्त किये गये हैं, उन आधिकाधिक शब्दों की सूची दी जा रही है।

## पारिभाषिक शब्दावली (अंग्रेजी शब्दों के समकक्ष हिन्दी शब्द)

| अंग्रेजी शब्द | पारिभाषिक शब्द |
|---|---|
| **'A' से बनने वाले पारिभाषिक शब्द** | |
| Abandonment | परित्याग |
| Abate | कम करना/घटाना उपशमन करना |
| Abbreviation | संक्षेप/संक्षेपण |
| Abeyance | आस्थगन |
| Ability | योग्यता |
| Abnormal | असामान्य |
| Abolish | समाप्त करना/उन्मूलन करना |
| Above cited | उपर्युक्त |
| Above par | औसत से ऊँचा |
| Abridge | संक्षेप करना |
| Abrogate | निराकरण करना |
| Absence | अनुपस्थिति |
| Abstract | सार |
| Absurd | अर्थहीन |
| Abuse | दुरुपयोग |
| Academic | शैक्षणिक |
| Academic Council | विद्या-परिषद् |
| Academic year | शैक्षणिक वर्ष |
| Academy | अकादमी |
| Acceptability | स्वीकार्यता |
| Acceptance | स्वीकृति |
| Accuracy | यथार्थता/शुद्धता |
| Accusation | अभियोग |
| Accuse | अभियोग लगाना |
| Acknowledge | अभिस्वीकार करना/मानना |
| Acting | कार्यवाहक/कार्यकारी |
| Action | कार्यवाही |
| Active | क्रियाशील |
| Activities | कार्यकलाप/गतिविधियाँ |
| Activity | सक्रियता |
| Adhere | दृढ़ रहना |
| Adhesive | आसंजक/चिपकने वाला |
| Adhoc | तदर्थ |
| Adjourn | स्थगित करना/काम रोकना |
| Adjournment motion | स्थगन प्रस्ताव |
| Adjustment | समायोजन |
| Administer Oath | शपथ दिलाना |
| Administration of Justice | न्याय प्रशासन |
| Administration of Ability | प्रशासन योग्यता |
| **'B' से बनने वाले पारिभाषिक शब्द** | |
| Backward classes | पिछड़े वर्ग |
| Bad conduct | दुराचरण |
| Bailable offence | जमानती अपराध |
| Balance | अतिशेष/बाक़ी संतुलन |
| Balance Sheet | तुलन-पत्र |

# 12 मुहावरे
## वाक्य में केवल सार्थक प्रयोग अपेक्षित है

- मुहावरा एक ऐसे पदबन्ध को कहा जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ अर्थात् भावार्थ कुछ और ही निकलता है, जैसे—वह चौकन्ना हो गया। इस वाक्य में 'चौकन्ना' शब्द का अर्थ है 'चार कानों वाला;' परन्तु कोई भी मनुष्य चार कानों वाला नहीं होता है।
- अत: इसका लाक्षणिक अर्थ या भावार्थ लिया जाता है—'बहुत सावधान।' ऐसे ही पदबन्धों या वाक्यांशों को मुहावरा कहा जाता है।
- मुहावरा तो वाक्य का अंग बनकर प्रयुक्त होता है, जबकि लोकोक्ति या कहावत स्वयं में एक वाक्य होती है।
- जब भाषा में सामान्य शब्द या अभिधायुक्त शब्द अपना मन्तव्य सही परिप्रेक्ष्य में प्रकट न कर सकें तो मुहावरों के रूप में व्यक्ति लाक्षणिक शब्दावली का प्रयोग करता है। जैसे—
  - **आँख खुलना**—सावधान होना।
  - **आड़े हाथों लेना**—खरी-खोटी सुनाना, खूब भड़काना।
  - **आसमान टूट पड़ना**—आकस्मिक विपत्तियों का आ जाना।
  - **कमर कसना**—तैयार होना।
  - **चिकना घड़ा होना**—किसी की बात का कुछ असर न होना।
  - **निन्यानवे के फेर में पड़ना**—धन इकट्ठा करने की चिंता में रहना।
  - **लोहा मान लेना**—अधीनता स्वीकार करना।
  - **दिल के फफोले फूटना**—हृदय के उद्‌गार निकालना।

### मुहावरा, लोकोक्ति अथवा कहावत में महत्त्वपूर्ण अन्तर

| मुहावरा | लोकोक्ति |
|---|---|
| मुहावरा एक पूरा वाक्य नहीं होता है। | लोकोक्ति एक पूर्ण वाक्य होता है। |
| मुहावरे छोटे होते हैं। | लोकोक्तियाँ दीर्घ और भावपूर्ण होती हैं। |
| मुहावरे के प्रयोग में किसी कथन में चमत्कार उत्पन्न होता है। | लोकोक्ति का प्रयोग किसी सत्य या नीति के आशय को स्पष्ट करता है। |
| मुहावरे का अस्तित्व स्वतंत्र नहीं होता है। यह किसी वाक्य के अधीन रहकर ही प्रयुक्त हो सकता है। | लोकोक्ति की स्वतंत्र सत्ता होती है और इसके द्वारा किसी कथन की पुष्टि की जाती है। |
| मुहावरे का प्रयोग भाषा में भाव उदीप्त करने-हेतु किया जाता है | लोकोक्ति का प्रभाव पाठक या श्रोता पर अमिट पड़ता है, क्योंकि लोकोक्ति सत्यता पर आधारित और लोक-चलन के शब्दों में होती है। |

### मुहावरे का महत्त्व

- आधुनिक युग में मुहावरों का प्रयोग निरन्तर बढ़ता जा रहा है। वास्तव में इनकी सरल, स्वाभाविक एवं सुन्दर अभिव्यंजना में ऐसी मोहक शक्ति छिपी हुई कि कोई भी लेखक अपने को इनसे अछूता नहीं रख सकता।
- कहानियों और नाटकों की लेखन-शैली में तो ये चार-चाँद लगा ही देते हैं, आजकल निबंध-लेखन में भी इनका प्रयोग बढ़ रहा है। अत: विद्यार्थियों के लिए मुहावरों का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

### मुहावरों के अर्थ और उनके महत्त्वपूर्ण वाक्य प्रयोग

- **अँगारों पर पैर रखना—संकट में पड़ना।**
  **प्रयोग**—डकैतों से दुश्मनी करना आसान नहीं है, अँगारों पर पैर रखना है।
- **अंक भरना—गले लगाना।**
  **प्रयोग**—काली-दह से सकुशल निकले बालक कृष्ण को माँ यशोदा ने अंक में भर लिया।
- **अक्ल के घोड़े दौड़ाना—थोथी कल्पनाएँ करना।**
  **प्रयोग**—अक्ल के घोड़े दौड़ाने से कोई नतीजा नहीं निकलता है, कठोर मेहनत ही काम आती है।
- **अक्ल का दुश्मन—महामूर्ख।**
  **प्रयोग**—कहा जाता है कि कालिदास अक्ल का दुश्मन था क्योंकि, जिस डाली पर बैठा था उसी को काट रहा था।
- **अँगारे उगलना—क्रोध में कटु वचन बोलना।**
  **प्रयोग**—मंथरा की बात सुनकर कैकेयी दशरथ के प्रति अँगारे उगलने लगी।
- **अँगूठा दिखाना—समय पर धोखा देना।**
  **प्रयोग**—महेश ने रुपये देने का वायदा किया था, किन्तु जब मैं माँगने गया तो अँगूठा दिखा दिया।
- **अपना राग अलापना—अपनी ही कहना।**
  **प्रयोग**—तुम्हारी बहुत बुरी आदत है, दूसरों की सुनते ही नहीं, बस अपना ही राग ही अलापते रहते हो।
- **अपना-सा मुँह लेकर रह जाना—लज्जित होना।**
  **प्रयोग**—जब मैंने उसकी असलियत बखान की तो वह अपना-सा मुँह लेकर रह गया।
- **अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारना—अपना नुक़सान आप करना।**
  **प्रयोग**—मेरा घर विखण्डित हो गया। इसमें किसी को दोष नहीं है, मैंने तो अपने पैरों पर स्वयं कुल्हाड़ी मारी है।
- **अँधेरे घर का उजाला—एक मात्र पुत्र।**
  **प्रयोग**—मोहन के तीन बेटे तो पारिवारिक विवाद में मारे गये, अब बंटी ही इस अँधेरे घर का उजाला है।

# 13 लोकोक्तियाँ
## वाक्य में केवल सार्थक प्रयोग अपेक्षित है

- मुहावरा एक ऐसे पदबन्ध को कहा जाता है जिसका शाब्दिक अर्थ अर्थात् भावार्थ कुछ और ही निकलता है, जैसे—वह चौकन्ना हो गया। इस वाक्य में 'चौकन्ना' शब्द का अर्थ है 'चार कानों वाला;' परन्तु कोई भी मनुष्य चार कानों वाला नहीं होता है।
- अत: इसका लाक्षणिक अर्थ या भावार्थ लिया जाता है—'बहुत सावधान।' ऐसे ही पदबन्धों या वाक्यांशों को मुहावरा कहा जाता है।
- मुहावरा तो वाक्य का अंग बनकर प्रयुक्त होता है, जबकि लोकोक्ति या कहावत स्वयं में एक वाक्य होती है।
- जब भाषा में सामान्य शब्द या अभिधायुक्त शब्द अपना मन्तव्य सही परिप्रेक्ष्य में प्रकट न कर सकें तो मुहावरों के रूप में व्यक्ति लाक्षणिक शब्दावली का प्रयोग करता है। जैसे—
  - **आँख खुलना**—सावधान होना।
  - **आड़े हाथों लेना**—खरी-खोटी सुनाना, खूब भड़काना।
  - **आसमान टूट पड़ना**—आकस्मिक विपत्तियों का आ जाना।
  - **कमर कसना**—तैयार होना।
  - **चिकना घड़ा होना**—किसी की बात का कुछ असर न होना।
  - **निन्यानवे के फेर में पड़ना**—धन इकट्ठा करने की चिंता में रहना।
  - **लोहा मान लेना**—अधीनता स्वीकार करना।
  - **दिल के फफोले फूटना**—हृदय के उद्‌गार निकालना।

### मुहावरा, लोकोक्ति अथवा कहावत में महत्त्वपूर्ण अन्तर

| मुहावरा | लोकोक्ति |
|---|---|
| मुहावरा एक पूरा वाक्य नहीं होता है। | लोकोक्ति एक पूर्ण वाक्य होता है। |
| मुहावरे छोटे होते हैं। | लोकोक्तियाँ दीर्घ और भावपूर्ण होती हैं। |
| मुहावरे के प्रयोग में किसी कथन में चमत्कार उत्पन्न होता है। | लोकोक्ति का प्रयोग किसी सत्य या नीति के आशय को स्पष्ट करता है। |
| मुहावरे का अस्तित्व स्वतंत्र नहीं होता है। यह किसी वाक्य के अधीन रहकर ही प्रयुक्त हो सकता है। | लोकोक्ति की स्वतंत्र सत्ता होती है और इसके द्वारा किसी कथन की पुष्टि की जाती है। |
| मुहावरे का प्रयोग भाषा में भाव उदीप्त करने-हेतु किया जाता है | लोकोक्ति का प्रभाव पाठक या श्रोता पर अमिट पड़ता है, क्योंकि लोकोक्ति सत्यता पर आधारित और लोक-चलन के शब्दों में होती है। |

### मुहावरे व लोकोक्तियों का महत्त्व

- आधुनिक युग में मुहावरों का प्रयोग निरन्तर बढ़ता जा रहा है। वास्तव में इनकी सरल, स्वाभाविक एवं सुन्दर अभिव्यंजना में ऐसी मोहक शक्ति छिपी हुई कि कोई भी लेखक अपने को इनसे अछूता नहीं रख सकता।
- कहानियों और नाटकों की लेखन-शैली में तो ये चार-चाँद लगा ही देते हैं, आजकल निबंध-लेखन में भी इनका प्रयोग बढ़ रहा है। अत: विद्यार्थियों के लिए मुहावरों का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

### लोकोक्तियाँ : अर्थ व परिभाषा

- **लोकोक्तियाँ** या कहावतें एक ऐसा वाक्य या उपवाक्य होता है जिसका शाब्दिक अर्थ नहीं लिया जाता, प्रत्युत् लाक्षणिक अर्थ लिया जाता है।
- लोकोक्ति संस्कृत भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है - लोक + उक्ति अर्थात् लोक उक्ति— लोक में प्रचलित और प्रसिद्ध उक्ति। बोलचाल की भाषा में लोकोक्ति को 'कहावत' कहा जाता है।
- व्यापक रूप से 'कहावत' शब्द लोकोक्ति की अपेक्षा अधिक प्रयुक्त होता है।
- लोकोक्ति मानव-समाज के व्यापक अनुभव से जन्म लेती है। 'हिन्दी साहित्य कोश' में लोकोक्ति के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए लिखा गया है कि **'लोकोक्ति गागर में सागर भरने की प्रवृत्ति का काम करती है।'**
- इसमें जीवन के सत्य बड़ी ख़ूबी के साथ प्रकट होते हैं। ग्रामीण परिवेश में प्रचलित कहानियों, जनश्रुतियों, दन्तकथाओं को कम-से-कम शब्दों में तथा अधिक से अधिक रोचक ढंग से प्रस्तुत करने का तरीक़ा लोकोक्ति कहलाता है।
- ग्रामीण परिवेश में प्रचलित होने के कारण लोकोक्तियों की भाषा अव्याकरणिक व गँवारू होती है। वास्तव में लोकोक्तियाँ या कहावतें वे उक्तियाँ हैं जिनके पीछे किसी राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा वैयक्तिक घटना का हाथ होता है।
- सामान्यत: लोकोक्तियाँ से भाषा की व्यंजना-शक्ति में अभिवृद्धि होती है। सभी लोकोक्तियों में व्यंग्यार्थ ही ध्वनित होता है।
- लोकोक्तियों या कहावतों के प्रयोग से भाषा या बोली अधिक युक्तियुक्त, प्रभावोत्पादक और सुस्पष्ट तथा जीवन्त हो जाती है। लोकोक्तियाँ नीति-विषयक होती हैं, फलस्वरूप वे पाठक या श्रोता पर स्थायी प्रभाव डालती हैं।
- किसी लंबी बात को संक्षेप में प्रयोग किया जाता है क्योंकि ये देखने में छोटी भले ही हो, किन्तु इनके भाव गंभीर, तीखे और चुटीले होते हैं।
- सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथ्यों को समझने-समझाने हेतु भी इनका

❖ **अँधेर नगरी, चौपट राजा—कुप्रशासन और अजागरुक जनता।**
**प्रयोग**—सरकार कोई भी आ जाये उसके लिए तो वही अँधेरगर्दी है क्योंकि अँधेर नगरी चौपट राजा। **अथवा**
प्रशासन के नाम पर ग़रीबों और सज्जनों का शोषण-मात्र होता है क्योंकि अँधेर नगरी चौपट राजा।

❖ **आगे नाथ न पीछे पगहा—पूर्ण अनियन्त्रित।**
**प्रयोग**—कहा जाता है कि इंसान ज़िम्मेदारी आने पर ज़्यादा समझदार और विनम्र होता चला जाता है, किंतु जब किसी मनुष्य पर न तो कोई ज़िम्मेदारी हो और न ही उसके कार्यों को जाँचने-परखने वाला कोई व्यक्ति हो तो फिर उसकी जो मर्जी होती है वह उसके अनुरूप कार्य व आचरण करता है। जैसे किसी पशु को नियन्त्रित करने के लिए या तो नाक में नकेल डाली जाती है या पैर में पगहा, इनके अभाव में वह आवारा होता है।

❖ **आये थे हरिभजन को, ओटन लगे कपास—महान उद्देश्य से भटककर गौण उद्देश्य में लग जाना।**
**प्रयोग**—प्रत्येक मनुष्य के जीवन में उतार-चढ़ाव आते ही रहते हैं। कब किसके भाग्य का सितारा गर्दिश में चला जाये और कब बुलंदी से चमक उठे, कुछ पता नहीं चलता। जबकि हर मनुष्य बड़ी-बड़ी आशाओं व उद्देश्यों की पूर्णता का सपना सजाकर जीवन आरम्भ करता है, किंतु परिस्थितियाँ विपरीत हों तो महान् उद्देश्यों को त्यागकर गौण उद्देश्यों में ही सन्तुष्टि प्राप्त कर लेता है। इसी को कहते हैं—आये थे हरिभजन को ओटन लगे कपास।

❖ **खरी मजूरी चोखा दाम—मेहनत के मिले नग़द दाम अच्छे होते हैं।**
**प्रयोग**—मज़दूरी का प्रतिफल कम ही मिले, किंतु तुरन्त मिले, वह तभी होगा—खरी मजूरी चोखा दाम।

❖ **नक्क़ारख़ाने में तूती की आवाज़—बड़ों के सामने छोटों की नहीं सुनी जाती।**
**प्रयोग**—कश्मीर का मुद्दा यू.एन.ओ. में नक्क़ारख़ाने में तूती की आवाज़ बनकर रह गया है।

❖ **सहज पके सो मीठा होय—सहज गति से समय आने पर कार्य का पूर्ण होना।**
**प्रयोग**—राम समय से पहले ही अपनी पदोन्नति की कामना करता है जो कि संभव कैसे हो सकता है? प्रत्येक कार्य सहज गति से ही समय आने पर पूर्ण होता है और फलदायी होता है। अत: सही है—सहज पके सो मीठा होय।

❖ **दूध का दूध पानी का पानी—उचित न्याय।**
**प्रयोग**—अपराधी को उसके अपराध की उचित सज़ा देकर न्यायाधीश महोदय ने वास्तव में दूध का दूध पानी का पानी कर दिया।

❖ **उलटे बाँस बरेली को—उत्पत्ति-क्षेत्र में उत्पादित वस्तु को वहीं वापस भेजना।**
**प्रयोग**—अमेरिका से भारत में चाय का आयात करना एक विपरीत कार्य है, इसको—'उलटे बाँस बरेली को' कहा जायेगा।

❖ **खग जाने खग ही की भाषा—समान बोली का प्रयोग करना होना।**
**प्रयोग**—केरल की नर्सें आपस में क्या बातें करती हैं, यह तो वे ही जानती हैं, क्योंकि—खग जाने खग ही की भाषा।

❖ **अटका बनिया देय उधार—विवशतावश व्यक्ति अनचाहा कार्य करता है।**
**प्रयोग**—बृजकिशोर अपनी बेटी के विवाह के लिए कर्ज़ लेने को मज़बूर है, क्योंकि कर्ज़ लेने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं है। सही है—अटका बनिया देय उधार।

❖ **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता—अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता/संगठन में ही शक्ति है।**
**प्रयोग**—जब विभाग में सभी अधिकारी और कर्मचारी भ्रष्टाचारी हों, तो वहाँ एक ईमानदार व्यक्ति कुछ भी नहीं कर सकता, क्योंकि—अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

❖ **अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम—भाग्य के भरोसे कुछ नहीं करना।**
**प्रयोग**—भारत में अधिकतर व्यक्ति भाग्य के सहारे अकर्मण्य होकर कष्ट भोगते रहते हैं और फिर भी यही कहते हैं—अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम।

❖ **अपना लाल गँवाय के दर-दर माँगे भीख—अपनी वस्तु खोकर दूसरों के सामने हाथ फैलाना।**
**प्रयोग**—कश्मीर-समस्या को यू.एन.ओ. को देने की भूलकर भारत अमेरिका से समस्या का समाधान माँग रहा है जो अभी तक नहीं किया गया है। इसी को कहते हैं—अपना लाल गँवाय के दर-दर माँगे भीख।

❖ **अपना दाम खोटा हो ता परखने वाले का क्या दोष—अपनी वस्तु ख़राब हो तो दूसरों को दोष नहीं दिया जाता।**
**प्रयोग**—कश्मीर-समस्या के समाधान के प्रश्न पर जब भारतीय नेता ही एकमत नहीं हैं तो अमेरिका को दोष देना उचित नहीं है। इसी को कहते हैं—अपना दाम खोटा हो तो परखने वाले का क्या दोष।

❖ **अपनी करनी पार उतरनी—अपने द्वारा किया कार्य ही आनन्दप्रद होता है।**
**प्रयोग**—अपने द्वारा किया गया कार्य चाहे कम ही क्यों न हो, किंतु वह बड़ा फलदायक होता है और आनन्द की अनुभूति कराता है। उसमें ''अपनी करनी पार उतरनी''वाली कहावत चरितार्थ होती है।

❖ **आधी छोड़ पूरी को ध्यावे, पूरी मिले न आधी पावे—अधिक पाने की लालच में प्राप्त थोड़ी वस्तु को भी गँवाना।**
**प्रयोग**—लालची व्यक्ति ब्याज के लालच में मूलधन को भी गँवा बैठता है। इसी को कहते हैं—आधी छोड़ पूरी को ध्यावे, पूरी मिले न आधी पावे।

❖ **आसमान से गिरा खजूर पर अटका—एक विपत्ति के बाद दूसरी विपत्ति का आना।**
**प्रयोग**—रमेश जेल से छूटकर कुछ समय पहले घर आया था कि पत्नी लंबी बीमारी के बाद चल बसी। बेचारा आसमान से गिरा खजूर पर अटक गया।

❖ **आग लगन्ते झोंपड़ा जो निकले सो लाभ—अधिक नुक़सान में से जो बचे वही लाभ।**
**प्रयोग**—सुरेश की फैक्टरी में लगी आग में सब कुछ स्वाहा हो गया, परन्तु कुछ मशीनें सुरक्षित बच गयीं। अत: आग लगन्ते झोंपड़ा जो निकले सो लाभ।

❖ **इतनी सी जान, गज भर की ज़बान—बातूनी बालक।**

# Part-II : राजस्थान का सामान्य ज्ञान, इतिहास एवं संस्कृति

# 1 राजस्थान का भौगोलिक विभाजन, प्रमुख पर्वत [Geographical Division of Rajasthan, Major Mountains]

राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य है। एक ओर जहाँ यह इसके गौरवशाली इतिहास के लिए जाना जाता है, वहीं दूसरी ओर इसका आकार एवं भौतिक स्वरूप अनेक भौगोलिक विशिष्टताओं को समाहित करता है। यहाँ के विशाल मरुस्थल, अरावली की शृंखलाओं, नदियों के मैदानी क्षेत्रों, झीलों, पहाड़ियों, पठारों आदि ने राज्य के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक पर्यावरण को सदैव प्रभावित किया है। अतः राजस्थान की विशिष्टताओं को समझने हेतु यहाँ की भौतिक विशेषताओं, स्थिति, विस्तार एवं आकृति का संपूर्णता में अध्ययन आवश्यक है।

**अध्ययन बिन्दु**

- राजस्थान का निर्माण, आकार, स्थिति एवं विस्तार
- राजस्थान की सीमाएँ एवं जिलेवार विस्तार
- भौतिक विभाजन एवं विभिन्न उच्चावच
  - **पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश**
    - (i) शुष्क रेतीला मरुस्थल
    - (ii) लूनी-जवाई बेसिन
    - (iii) शेखावाटी प्रदेश
    - (iv) घग्घर का मैदान
  - **अरावली पर्वतीय प्रदेश**
    - (i) दक्षिणी अरावली प्रदेश
    - (ii) मध्य अरावली प्रदेश
    - (iii) उत्तरी अरावली प्रदेश
  - **पूर्वी-मैदानी प्रदेश**
    - (i) बनास-बाणगंगा बेसिन
    - (ii) चम्बल बेसिन
    - (iii) छप्पन का मैदान (मध्य माही बेसिन)
  - **दक्षिणी-पूर्वी पठारी प्रदेश**
    - (i) हाड़ौती पठार
    - (ii) विंध्यन कगार
    - (iii) शाहबाद उच्च क्षेत्र
    - (iv) झालावाड़ पठार एवं डग-गंगधार की उच्च भूमि

## राजस्थान का निर्माण

- राजस्थान का मरुस्थलीय भाग एवं उत्तर-पूर्वी मैदानी क्षेत्रों का निर्माण प्राचीन **टेथिस सागर** के अवेशेषों पर हुआ है।
- उक्त क्षेत्रों को कालांतर में हिमालय की नदियों द्वारा गाद व मिट्टी से पाट दिया गया। राजस्थान में सांभर, डीडवाना, पचपद्रा, लूणकरणसर आज भी टेथिस सागर के अवशेष के रूप में मौजूद खारे पानी की झीले हैं।
- राजस्थान की अरावली पर्वतमाला तथा दक्षिणी पठारी भाग प्राचीन **गौंडवाना लैंड** के भू-भाग है।
- अरावली पर्वतमाला राज्य की प्रमुख **जल-विभाजक** है, जो राजस्थान को दो भागों में बाँटती है।
- अरावली पर्वतमाला **प्री-कैम्ब्रियन** युगीन वलित पर्वत शृंखला है, जो वर्तमान में अवशिष्ट पर्वत श्रेणी के रूप में विद्यमान है।
- अरावली के दक्षिण-पूर्व में हाड़ौती का पठार, मालवा के पठार का ही एक भाग है, जो लावा निर्मित है।

## आकार, स्थिति एवं विस्तार

- राजस्थान की आकृति **विषमकोणीय चतुर्भुज (RHOMBUS)** के समान या पतंगाकार है।
- राजस्थान भारत के उत्तर-पश्चिमी भाग में **23°3' से 30°12' उत्तरी अक्षांशों** के मध्य एवं **69°29' से 78°17' पूर्वी देशान्तर** के मध्य स्थित है।
- राजस्थान कुल 7°09' अक्षांशों व 8°47' देशान्तरों के मध्य फैला है, अतः राज्य का देशांतरीय विस्तार ज्यादा है।
- कर्क रेखा (23½° उत्तरी अक्षांश) राजस्थान के **बाँसवाड़ा-डूँगरपुर** जिलों से गुजरती है। कर्क रेखा की राजस्थान में लम्बाई 26 किलोमीटर है। बाँसवाड़ा में इसकी लंबाई सर्वाधिक है। यह रेखा बाँसवाड़ा की **कुशलगढ़ तहसील** एवं डूँगरपुर के **चिखली गाँव** के पास से गुजरती है।

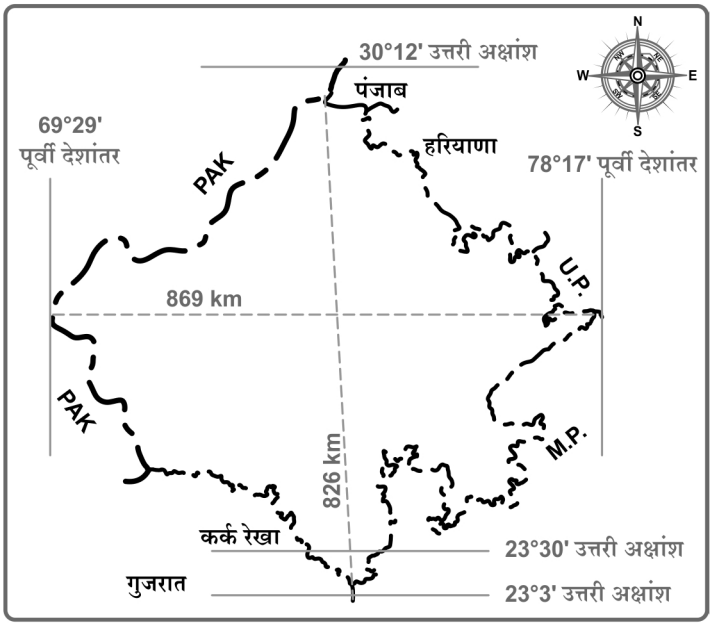


मानचित्रः राजस्थान स्थिति एवं विस्तार

# 2 राजस्थान की जलवायु [Rajasthan's Climate]

जलवायु एक महत्त्वपूर्ण भौगोलिक कारक है, जो न केवल प्राकृतिक तत्त्वों को बल्कि आर्थिक एवं जनसांख्यकीय स्वरूप को भी प्रभावित करता है। राजस्थान की जलवायु **शुष्क** से **उप-आर्द्र मानसूनी** प्रकार की है। राजस्थान में जहाँ अरावली के पश्चिम में उच्च दैनिक एवं वार्षिक तापान्तर, निम्न आर्द्रता तथा तीव्र हवाओं से युक्त **शुष्क जलवायु** (Arid Climate) है। वहीं दूसरी ओर अरावली के पूर्व में **अर्द्धशुष्क** (Semi Arid) एवं **उप-आर्द्र** (Sub-Humid) जलवायु है, जहाँ वर्षा की मात्रा में वृद्धि हो जाती है तथा साथ में वायु की गति में भी कमी रहती है। सम्पूर्ण रूप से राजस्थान की जलवायु भारत की **'मानसूनी जलवायु'** का ही अभिन्न अंग है किन्तु विभिन्न प्राकृतिक कारकों के प्रभाव के कारण राज्य का अधिकांश क्षेत्र शुष्क जलवायु वाला है।

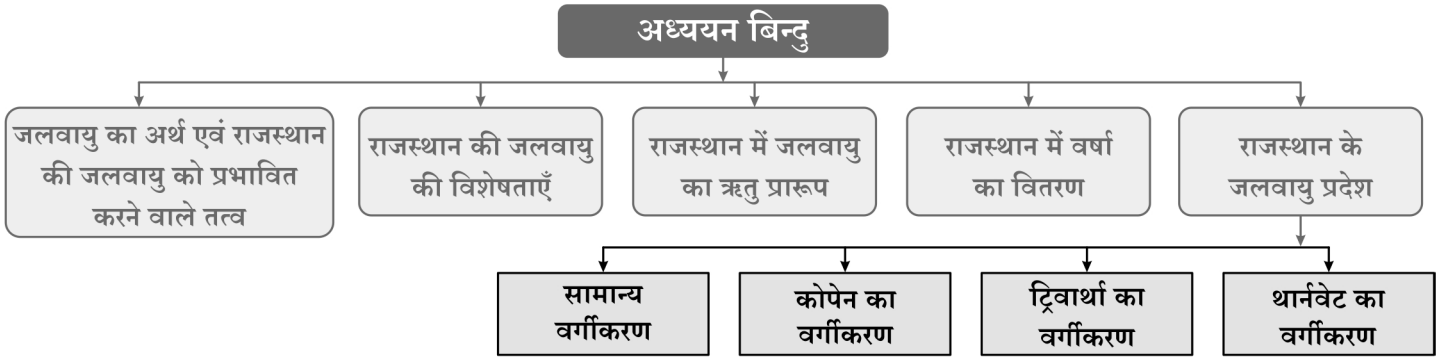


## जलवायु का अर्थ

किसी विस्तृत क्षेत्र की लम्बी अवधि (सामान्यतः 30 वर्ष से अधिक) की औसत मौसमी दशाओं को, उस क्षेत्र की **जलवायु** कहते हैं। जबकि किसी स्थान पर किसी विशेष समय में मौसम के घटकों के संदर्भ में वायुमण्डलीय दशाओं के योग को **मौसम** कहते हैं।

## राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करने वाले तत्व

### (1) स्थिति

❖ अक्षांशीय स्थिति जलवायु का प्रमुख नियंत्रण तत्त्व है। राजस्थान 23°3' से 30°12' उत्तरी अक्षांशों के मध्य स्थित है। 23½° उत्तरी अक्षांश (कर्क रेखा) राज्य के दक्षिणी हिस्सों डूँगरपुर-बाँसवाड़ा जिलों से गुजरती है, अतः राज्य का अधिकांश भाग **शीतोष्ण कटिबन्ध** में स्थित है। लेकिन उत्तर में हिमालय की अवस्थिति के कारण यहाँ ठण्डी हवाओं का प्रभाव नहीं पड़ता और अक्षांशीय दृष्टिकोण से अधिकांश भाग शीतोष्ण कटिबंध में होने के बावजूद जलवायु उष्ण बनी रहती है। उष्ण कटिबंधीय जलवायु के साथ न्यून वर्षा ने यहाँ के अधिकांश भागों में शुष्क एवं अर्द्धशुष्क जलवायु की दशाएँ उत्पन्न की हैं।

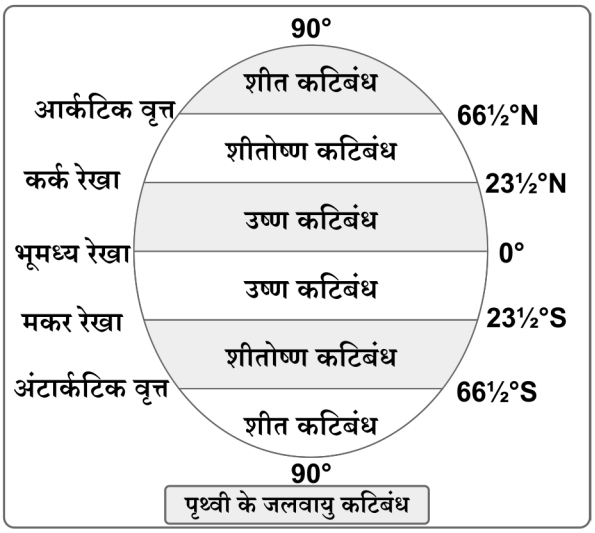

पृथ्वी के जलवायु कटिबंध

### (2) समुद्र से दूरी

❖ अरब सागर का समुद्र तट राजस्थान से लगभग 350 कि.मी. दूर है, अतः यहाँ की जलवायु पर सामुद्रिक प्रभाव नगण्य है और सम्पूर्ण राज्य **महाद्वीपीय जलवायु** (Continental Climate) से युक्त है, जो गर्म और शुष्क होती है एवं नमी अपेक्षाकृत कम होती है।

### (3) उच्चावच

❖ उच्चावचों का जलवायु पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। अरावली पर्वतमाला की दिशा दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व मानसूनी हवाओं के समानान्तर होने के कारण वे उत्तर की ओर निर्बाध निकल जाती हैं यही कारण है कि मानसूनी हवाओं के प्रभाव क्षेत्र में होते हुए भी राज्य न्यूनतम वर्षा प्राप्त करता है।

❖ पश्चिमी मरुस्थल से आने वाली गर्म हवाओं से अरावली पर्वतमाला पूर्वी राजस्थान को बहुत हद तक बचाए रखती है।

❖ दक्षिणी अरावली में **आबू पर्वत** क्षेत्र ऊँचाई के कारण शेष राज्य से कम तापमान रखता है।

❖ पश्चिमी राजस्थान में विशाल थार मरुस्थल है। यहाँ दैनिक तापान्तर अधिक है। दिन में यह क्षेत्र अत्यधिक गर्म एवं रात में अपेक्षाकृत ठण्डा हो जाता है।

# 4 राजस्थान में सूखा, अकाल एवं मरुस्थलीकरण [Drought, Famine and Desertification in Rajasthan]

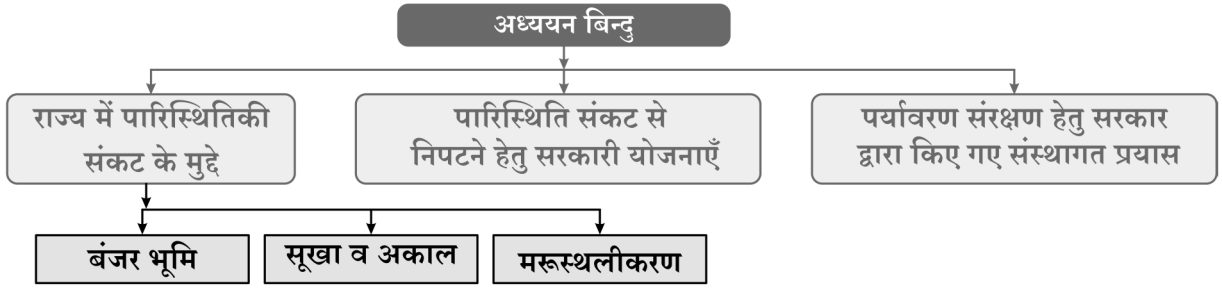


## राज्य में पारिस्थितिकी संकट के मुद्दे

### बंजर भूमि

- राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है लेकिन सूखा व अकाल की बारम्बारता, अल्प वर्षा तथा रेगिस्तानी शुष्क दशाओं के कारण राज्य का बड़ा क्षेत्र बंजर भूमि के अंतर्गत आता है।
- राजस्थान भूमि उपयोग सांख्यिकी 2020-21 के अनुसार राज्य में **37.27 लाख हैक्टेयर** क्षेत्र बंजर भूमि है, जो राज्य के कुल क्षेत्रफल का 10.87% है। **(स्रोत–आर्थिक समीक्षा 2022-23)**
- राज्य में क्षेत्रफल की दृष्टि से सर्वाधिक बंजर भूमि **जैसलमेर** में तथा प्रतिशत की दृष्टि से सर्वाधिक बंजर भूमि **राजसमंद** जिले में है।
- राजस्थान में **'बंजर भूमि विकास विभाग'** की स्थापना 1982 में की गई।
- 1985 में केन्द्र सरकार द्वारा बंजर भूमि की समस्या हेतु **बंजर भूमि विकास निगम** की स्थापना की गई।

### सूखा व अकाल

- सूखा राजस्थान में एक प्रमुख पर्यावरणीय समस्या एवं प्राकृतिक आपदा है। सामान्यतः वर्षा की कमी के कारण किसी क्षेत्र में जब जल की कमी हो जाती है तो उसे **सूखा** कहते हैं।
- इसकी प्रभावशीलता निरन्तर रहने पर यह अकाल का रूप ले लेता है। राजस्थान में अकाल के अनेक उदाहरण हैं, जिन्हें निम्नलिखित तालिका से समझा जा सकता है—

| नाम | विशेष विवरण |
|---|---|
| **छप्पनियाँ अकाल** | वि.सं. 1956 में (सन् 1899 में) पड़ा अकाल। |
| **पंचकाल** | राज्य में 1812-13 में पड़ा अकाल। |
| **सहसा भूदुसा अकाल** | सन् 1842-43 (वि.सं. 1899-1900) में पड़ा अकाल। |
| **चालीसा अकाल** | राज्य में 1983 में पड़ा अकाल। |
| **मेक्रो–ड्रॉउट अकाल** | वर्ष 2002-03 में पड़ा अकाल, जिसे वृहत अकाल भी कहते हैं। |
| **त्रिकाल** | 1987-88 एवं 2002-03 में पड़ा अकाल। (त्रिकाल में अन्न, जल व चारे का भयंकर संकट उत्पन्न हो जाता है।) |

**Note :–** राजस्थान के निर्माण के पश्चात् केवल वर्ष 1959-60, 1973-74, 1975-76, 1976-77, 1990-91 व 1994-95 को छोड़कर अन्य वर्षों में अकाल की स्थिति राज्य के किसी न किसी भाग में कमोबेश लगातार विद्यमान रही है, इसलिए राजस्थान में एक कहावत प्रसिद्ध है— **'तीजो कुरियो आठों काल'** अर्थात् प्रत्येक तीसरे वर्ष **कुरिया** (अर्द्ध अकाल) और प्रत्येक आठवें साल भयंकर अकाल पड़ता है।

### मरुस्थलीकरण

- उपजाऊ एवं अमरूस्थलीय भूमि का क्रमिक रूप से शुष्क प्रदेश अथवा मरुस्थल में परिवर्तित हो जाना, मरुस्थलीकरण कहलाता है। राष्ट्रीय कृषि आयोग ने पश्चिमी राजस्थान के **12 जिलों** को मरुस्थलीय माना है किन्तु वर्तमान में 5 नए जिले (जयपुर, अलवर, अजमेर, राजसमंद, सिरोही) इसमें शामिल हो गए हैं। अतः अब राज्य का भाग 67% भाग मरुस्थलीकरण की चपेट में आ चुका है।
- देश के 142 डेजर्ट ब्लॉक में से अकेले राजस्थान के **85 ब्लॉक** हैं।

#### मरुस्थलीकरण के कारण

| मानवजन्य कारण | प्राकृतिक कारण |
|---|---|
| ✧ अनियंत्रित पशुचारण। | ✧ अल्पवर्षा, अकाल व सूखे की स्थिति। |
| ✧ अंधाधुंध वृक्षों की कटाई। | ✧ धूलभरी आँधियों का चलना। |
| ✧ भू–जल का अतिदोहन। | ✧ अत्यधिक मृदा अपरदन। |
| ✧ भू–उपयोग में परिवर्तन। | ✧ जलवायु परिवर्तन का प्रभाव। |
| ✧ जनसंख्या दबाव एवं नगरीकरण। | ✧ भूमि में नमी की न्यूनता। |

**Note :–** उपर्युक्त कारणों का बेहतर प्रबंधन, वायुरोधी वृक्षारोपण पट्टी लगाकर एवं बालुका स्तूपों के स्थिरीकरण के उपाय करके तथा सिंचाई साधनों के विकास के साथ शुष्क कृषि तकनीकों को बढ़ावा देकर मरुस्थलीकरण को प्रभावी तरीके से रोका जा सकता है।

## पारिस्थितिकी संकट से निपटने हेतु सरकारी योजनाएँ

- **समेकित बंजर भूमि विकास कार्यक्रम (IWDP)**—
  - ✧ 1989-90 में केन्द्र प्रवर्तित योजना के रूप में शुरू हुआ।

# 6 राजस्थान के इतिहास के महत्त्वपूर्ण स्रोत [Important Sources of History of Rajasthan]

- ❖ राजस्थान के इतिहास की जानकारी हेतु पुरातात्विक, साहित्यिक एवं पुरालेखीय सामग्री सभी प्रकार के स्रोत उपलब्ध है।
- ❖ राजस्थान में सर्वप्रथम पुरातात्विक सर्वेक्षण कार्य 1871 ई. में **ए.सी.एल.कार्लाइल** के निर्देशन में प्रारम्भ हुआ।
- ❖ राजस्थान में अरावली की कंदराओं जैसे—बूँदी में छाजा नदी एवं कोटा में चम्बल नदी क्षेत्र, विराटनगर (जयपुर), सोहनपुरा (सीकर), हरसौरा (अलवर) आदि स्थानों से प्रागैतिहासिक मानव के चित्रित शैलाश्रय प्राप्त हुए है।
- ❖ राज्य में प्राप्त विभिन्न शिलालेखों, पाषाण पट्टिकाओं, स्तम्भों, तामपत्रों आदि से तिथियुक्त समसामयिक जानकारी मिलती है।
- ❖ जिन शिलालेखों में किसी शासक की उपलब्धियों की यशोगाथा होती है, उसे **'प्रशस्ति'** कहा जाता है।

## राजस्थान के महत्त्वपूर्ण शिलालेख

| क्र.सं. | अभिलेख | स्थापना वर्ष | विशेष विवरण |
|---|---|---|---|
| 1. | **बड़ली का शिलालेख** | 443 ई.पू. | • बड़ली (**अजमेर** ) से प्राप्त यह **राजस्थान का सबसे प्राचीन शिलालेख** है। अजमेर संग्रहालय में रखा यह शिलालेख **ब्राह्मी लिपि** में उत्कीर्ण है। |
| 2. | **घोसुण्डी शिलालेख** (वर्तमान में उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित) | द्वितीय शताब्दी ई.पू. | • यह अभिलेख **घोसुण्डी गाँव (नगरी, चित्तौड़गढ़)** से प्राप्त हुआ है। यह शिलालेख कई टुकड़ों में विभाजित है। इसकी भाषा **संस्कृत** एवं लिपि **ब्राह्मी** है यह सर्वप्रथम डी.आर. भण्डारकर द्वारा पढ़ा गया।<br>• भागवत धर्म से सम्बन्धित इस शिलालेख में संकर्षण और वासुदेव की पूजा तथा गजवंश के **सर्वतात** द्वारा **अश्वमेघ यज्ञ** करने का उल्लेख है। |
| 3. | **बसंतगढ़ शिलालेख** | 625 ई. | • सिरोही के बसतंगढ़ से प्राप्त इस शिलालेख में 'राजस्थानीयदित्य' शब्द का प्रयोग मिलता है। |
| 4. | **अपराजित का शिलालेख** | 661 ई. | • **दामोदर** द्वारा रचित इस शिलालेख में गुहिल शासक अपराजित की उपलब्धियों का वर्णन है। (नागदा मेवाड़ से प्राप्त) |
| 5. | **मानमोरी शिलालेख** | 713 ई. | • यह **चित्तौड़गढ़** में **मानसरोवर झील** के किनारे **कर्नड टॉड** को प्राप्त हुआ था। इसमें चित्तौड़ की प्राचीन स्थिति एवं **मोरीवंश** के महेश्वर, भीम, भोज व राजा मान का उल्लेख है। |
| 6. | **कणसवा शिलालेख** | 738 ई. | • कोटा के कंसुआ गाँव के शिवालय में उत्कीर्ण इस लेख में **धवल** नामक **मौर्यवंशी राजा** का उल्लेख मिलता है। जो यह प्रमाणित करता है कि **मौर्यवंश का राजस्थान से सम्बन्ध** था। |
| 7. | **घटियाला शिलालेख** | 861 ई. | • **घटियाला** (जोधपुर) से प्राप्त इस अभिलेख में मण्डोर के प्रतिहार शासक कक्कुक का वर्णन है। इसमें **संस्कृत भाषा** में शिलालेख के लेखक **मग** और उत्कीर्णकर्ता **कृष्णेश्वर** का उल्लेख है। |
| 8. | **सारणेश्वर प्रशस्ति** | 953 ई. | • **उदयपुर के सारणेश्वर मन्दिर** से प्राप्त इस प्रशस्ति से वराह मंदिर की व्यवस्था, स्थानीय व्यापार, कर, शासकीय पदाधिकारियों आदि विषय में पता चलता है। |
| 9. | **हर्षनाथ प्रशस्ति** | 973 ई. | • **सीकर के हर्षनाथ पहाड़ी** से प्राप्त इस प्रशस्ति में **चौहानों का वंशक्रम** एवं **उपलब्धियों** का वर्णन है। |
| 10. | **किराड़ू शिलालेख** | 1161 ई. | • **बाड़मेर** के किराडू शिवमंदिर से प्राप्त इस लेख में **संस्कृत भाषा** में **परमारों की उत्पत्ति** ऋषि वशिष्ट के **आबू यज्ञ** से बताई गई है। |
| 11. | **बिजौलिया शिलालेख** (रचयिता गुणभद्र माने जाते हैं।) | 1170 ई. | • यह लेख बिजौलिया कस्बे (भीलवाड़ा) के पार्श्वनाथ मंदिर की बड़ी चट्टान पर **संस्कृत भाषा** में उत्कीर्ण है। इसमें **93 पद्य** है जिनसे **चौहानों के इतिहास** की जानकारी मिलती है। इसमें चौहानों को **वत्सगोत्रीय ब्राह्मण** बताया गया है तथा तत्कालीन कृषि, धर्म, शिक्षण व्यवस्था व प्राचीन स्थलों की जानकारी मिलती है। |

# 8 राजस्थान के राजवंशों के प्रमुख राजनीतिक व्यक्तित्व
# [Prominent Political Personalities of the Dynasties of Rajasthan]

हमारे प्रदेश के लिए 'राजपूताना' नाम का प्रयोग सर्वप्रथम 1800 ई. में **जार्ज थॉमस** द्वारा किया गया। **कर्नल जेम्स टॉड** द्वारा 1829 ई. में प्रकाशित अपनी पुस्तक **'एनॉल्स एण्ड एण्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान'** में सर्वप्रथम **'राजस्थान'** शब्द का प्रयोग किया। इससे पूर्व यह प्रदेश भिन्न-भिन्न नामों से जाना जाता था। आर्यों के आगमन से लेकर राजपूतों के उदय से पूर्व यहाँ विभिन्न जनपदों का शासन रहा। 7वीं शताब्दी से यहाँ अनेक क्षेत्रीय राजपूत राजवंशों का उदय हुआ, जिसका प्रमुख कारण हर्षवर्धन की मृत्यु (747 ई.) के बाद भारत की राजनीतिक एकता का समाप्त होना था।

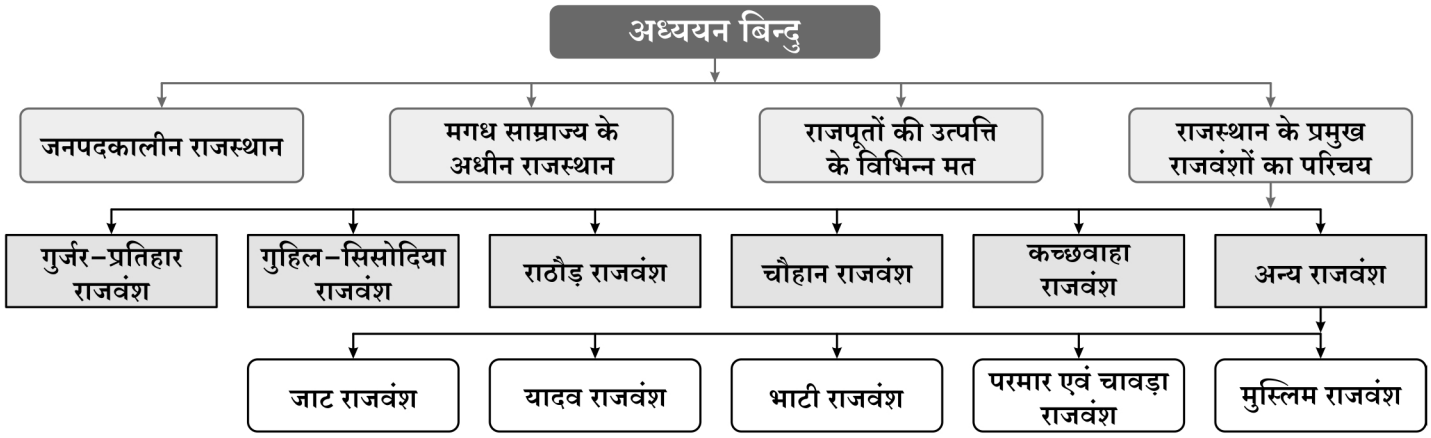


## जनपदकालीन राजस्थान

- आर्यों के प्रसार के अंतर्गत एवं उसके पश्चात् भारत के अन्य राज्यों की भाँति राजस्थान में भी जनपदों का उदय, विकास एवं पतन हुआ।
- बौद्ध ग्रंथ **'अंगुत्तर निकाय'** में भारत के 16 महाजनपदों की सूची दी हुई है, इनमें से मत्स्य महाजनपद राजस्थान में स्थित था।
- सिकन्दर के आक्रमण के फलस्वरूप पंजाब की मालव, शिवि, अर्जुनायन, यौद्येय आदि जातियाँ राजस्थान में आईं और यहाँ अपने जनपद स्थापित कर लिए।

### मत्स्य जनपद

- आर्य जन के रूप में मत्स्य जाति का उल्लेख सर्वप्रथम ऋग्वेद में हुआ है। शतपथ ब्राह्मण और कौषीतकी उपनिषद् में भी मत्स्य जन का उल्लेख मिलता है।
- महाभारत में भी मत्स्य जनपद की गणना भारत के प्रमुख जनपदों में की है। महाभारतकाल में **राजा विराट** यहाँ का शासक था जिसकी राजधानी **विराटनगर** (बैराठ) थी, जो आधुनिक जयपुर जिले में स्थित है।
- मत्स्य जनपद कुरु जनपद के दक्षिण में एवं शूरसेन जनपद के पश्चिम में स्थित था। पश्चिम में सरस्वती तथा दक्षिण में चम्बल नदी इसकी सीमाएँ बनाती थीं।
- यद्यपि महाभारत काल के बाद मत्स्य जनपद के संबंध में अधिक जानकारी नहीं मिलती तथापि **डॉ. गोपीनाथ शर्मा** के अनुसार महाभारत के बाद कुरु व यादव जनपद निर्बल हो गए, जिनकी निर्बलता का लाभ उठाकर मत्स्य जनपद शक्तिशाली हो गया।
- मत्स्य जनपद का अपने पड़ोसी **शाल्व जनपद** एवं **चेदी जनपद** से संघर्ष चलता रहता था।
- वर्तमान राजस्थान के अलवर, भरतपुर, जयपुर, दौसा एवं करौली जिलों के कुछ क्षेत्र मत्स्य जनपद के अंतर्गत शामिल थे।

### शिवि जनपद

- मेवाड़ राज्य का प्राचीन नाम शिवि था। यह पंजाब की शिवि जाति द्वारा स्थापित किया गया था। इसकी राजधानी **मज्झमिका/मध्यमिका/नगरी** (चित्तौड़गढ़) थी। पतंजली के महाभाष्य एवं महाभारत दोनों ग्रंथों में 'नगरी' का उल्लेख मिलता है।
- शिवि क्षेत्र को कालांतर में **मेदपाट, प्राग्वाट** और बाद में **मेवाड़** कहा जाने लगा।

### मालव जनपद

- मालव जाति का मूल स्थान रावी-चिनाब नदियों का संगम क्षेत्र था। पाणिनी के अनुसार यह एक आयुद्ध जीवि जाति थी जो सिकन्दर के आक्रमण के कारण प्रारम्भ में मालवनगर (कार्कोट नगर, जयपुर) के आस-पास बस गये, बाद में ये लोग राजपूताने के **टोंक, अजमेर** एवं **मेवाड़** क्षेत्रों में आकर बस गये।
- यहाँ पर उन्होंने अपनी शक्ति संगठित कर मालव जनपद की नींव रखी, जिसकी **राजधानी नगर** (टोंक) थी।
- प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार मालव जनपद ने समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार कर ली थी।

# 11 1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान
## [Contribution of Rajasthan in the Revolution of 1857]

10 मई, 1857 को मेरठ से शुरू हुई 1857 की क्रांति ने शीघ्र ही राष्ट्रीय स्वरूप ले लिया। राजस्थान भी इससे अछूता नहीं रहा। राजस्थान में छः सैनिक छावनियाँ मौजूद थीं जिनमें सर्वप्रथम नसीराबाद छावनी से सैनिक विद्रोह की शुरुआत हुई। इसको राजस्थान के असन्तुष्ट जमींदारों, अधिकारियों ने नेतृत्व प्रदान किया तथा जगह-जगह पर जनता ने क्रांतिकारियों का नैतिक समर्थन किया।

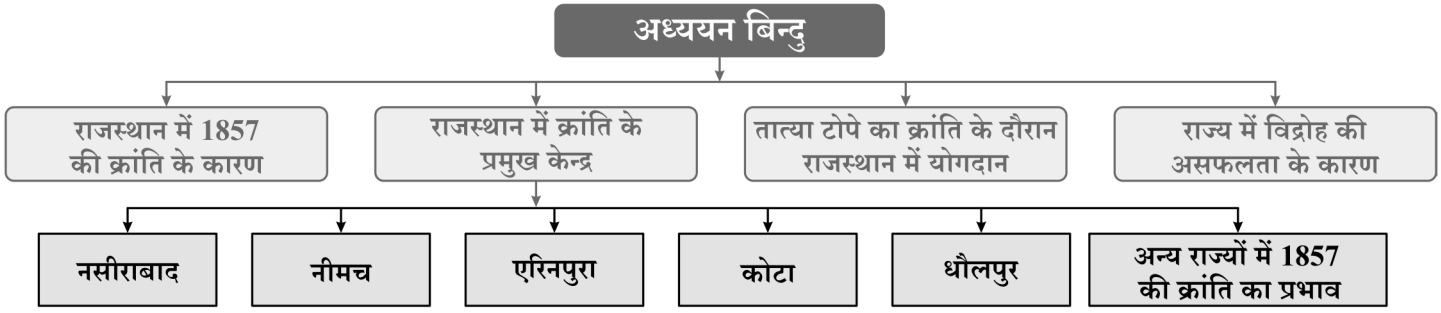


### राजस्थान में 1857 की क्रांति के कारण

- राजस्थान के शासकों ने अंग्रेज कंपनी के साथ **सहायक संधियाँ** (1817-18 ई.) करके मराठों द्वारा उत्पन्न अराजकता से मुक्ति प्राप्त कर ली, किन्तु कम्पनी ने राज्यों के **आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप** करके देशी राजाओं की प्रभुसत्ता पर चोट की। जैसे-भरतपुर व अलवर के उत्तराधिकार मामलों में हस्तक्षेप जयपुर व जोधपुर के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप आदि ने जनसाधारण को भी रोष से भर दिया।
- कम्पनी की नीतियों से सामन्तों की पद मर्यादा व अधिकारों को भी आघात लगा। शासकों ने अंग्रेजी संरक्षण प्राप्त कर **सामन्तों के विशेषाधिकारों का अंत** कर उन पर नियंत्रण स्थापित किया।
- कम्पनी द्वारा अपनाई गई शोषणकारी आर्थिक नीतियों के परिणामस्वरूप राजा, सामंत, किसान, व्यापारी, शिल्पी एवं मजदूर सभी वर्ग पीड़ित हुए।
- प्रशासन में व्याप्त **भ्रष्टाचार** भी एक प्रमुख कारण था।
- अंग्रेजों के द्वारा किये गये **सामाजिक सुधारों** यथा - कन्यावध, डाकन प्रथा, गुलामी प्रथा, समाधि, सतीप्रथा आदि को राजस्थान की तत्कालीन रूढ़िवादी जनता ने पसंद नहीं किया।
- कम्पनी के संरक्षण के परिणामस्वरूप शासक वर्ग अकर्मण्यः निरंकुश और अनुत्तरदायी हो गया, जिसके लिए जनता ने अंग्रेजी राज को जिम्मेदार माना।
- लोगों पर पाश्चात्य विचार एवं संस्थाएँ थोपने तथा उनके परम्परागत रीति-रिवाजों को समाप्त करने एवं **ईसाई धर्म प्रचार नीति** एवं उनके सामाजिक सुधारों आदि को जनता ने अपने धर्म व जीवन में घोर हस्तक्षेप माना।
- इस प्रकार सम्पूर्ण राजस्थान में और सभी वर्गों में ब्रिटिश विरोधी भावना व्याप्त थी, इसलिए यहाँ भी विद्रोह प्रारंभ हुआ।
- 1857 ई. की क्रांति के समय राजस्थान का ए.जी.जी. (एजेन्ट टू द गवर्नर जनरल) **जार्ज पैट्रिक लॉरेन्स** था, जिसका कार्यालय अजमेर था एवं भारत का गवर्नर जनरल **लार्ड कैनिंग** था।
- विद्रोह के समय राजस्थान में 6 ब्रिटिश छावनियाँ थी, जो इस प्रकार थीं—

| क्र.सं. | सैनिक बटालियन | छावनी स्थान | जिला/राज्य |
|---|---|---|---|
| 1. | बंगाल नेटिव इन्फेंट्री | नसीराबाद | अजमेर |
| 2. | मेरवाड़ा बटालियन | ब्यावर | अजमेर |
| 3. | कोटा कन्टिलजेन्ट | देवली | टोंक |
| 4. | मेवाड़ भीलकोर | खैरवाड़ा | उदयपुर |
| 5. | जोधपुर लीजियन | एरिनपुरा | सिरोही |
| 6. | नीमच छावनी | नीमच | मध्यप्रदेश |

**Note :-** भारत में 10 मई, 1857 को मेरठ छावनी से क्रांति की शुरुआत हुई, जिसका तात्कालिक कारण चर्बी वाले कारतूस के प्रयोग से इंकार करना था। क्रांतिकारियों द्वारा क्रांति के प्रतीक के रूप में **'कमल'** व **'रोटी'** को चुना गया। जिसे संदेश बनाकर सभी छावनियों में भेजा गया। मेरठ विप्लव की सूचना पैट्रिक लॉरैन्स को माउंट आबू में 19 मई को मिली। **23 मई** को उसने राजस्थान के सभी शासकों को शांति बनाये रखने एवं विद्रोहियों को अपने राज्य में प्रविष्ट न होने देने का पत्र प्रसारित किया।

- 1857 की क्रांति के दौरान राजपूताना में नियुक्त पॉलिटिकल एजेन्ट निम्नलिखित हैं—

| क्र.सं. | पॉलिटिकल एजेंट | एजेन्ट रियासत |
|---|---|---|
| 1. | विलियम ईडन | जयपुर |
| 2. | मेजर बर्टन | कोटा |
| 3. | मॉक मेसन | मारवाड़ (जोधपुर) |

# 15 राजस्थान का एकीकरण [Integration of Rajasthan]

15 अगस्त, 1947 ई. को देश आजाद हुआ, तब हमारे सामने तीन प्रमुख चुनौतियाँ थीं—1. देश का राजनीतिक एकीकरण करना, 2. लोकतंत्रात्मक शासन की नई पद्धति को स्थायी बनाना, 3. देश का आर्थिक विकास करना। तत्कालीन परिस्थितियों में एकीकरण प्रमुख चुनौती थी, जिससे निपटने हेतु **5 जुलाई 1947 ई.** को सरदार वल्लभ भाई पटेल की अध्यक्षता में **रियासती विभाग** का गठन हुआ। श्री **वी.पी. मेनन** इसके सचिव थे। पटेल के नेतृत्व में एकीकरण का कार्य शुरू किया गया। पटेल ने एक वक्तव्य प्रसारित करते हुए देशी राजाओं से 15 अगस्त 1947 तक भारतीय संघ में शामिल होने का आह्वान किया।

**अध्ययन बिन्दु**

- एकीकरण से पूर्व राजस्थान की स्थिति एवं रियासतों द्वारा संघ बनाने का प्रयास
  - मेवाड़ महाराणा द्वारा संघ बनाने का प्रयास
  - जयपुर के मानसिंह द्वारा संघ बनाने का प्रयास
  - हाडौती संघ बनाने का प्रयास
  - बागड़ संघ निर्माण का प्रयास
  - रियासतों की समस्याएं
- राजस्थान के एकीकरण के विभिन्न चरण एवं उनका क्रमबद्ध घटनाक्रम
  - I चरण – मत्स्य संघ
  - II चरण – संयुक्त राजस्थान
  - III चरण – मेवाड़ का विलय
  - IV चरण – वृहत राजस्थान
  - V चरण – संयुक्त वृहत राजस्थान
  - VI चरण – सिरोही का विनय
  - VII चरण – वर्तमान राजस्थान

## एकीकरण से पूर्व राजस्थान की स्थिति एवं रियासतों द्वारा संघ बनाने का प्रयास

❖ स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में **4 श्रेणी** के राज्य थे—

**A.** **श्रेणी** – ऐसे राज्य जो पूर्णतः ब्रिटिश नियंत्रण में थे।

**B.** **श्रेणी** – वे राज्य जो स्वतंत्रता के बाद देशी रियासतों के एकीकरण से बने थे जैसे—**राजस्थान।**

**C.** **श्रेणी** – चीफ कमिश्नर के प्रान्त जैसे—**अजमेर, दिल्ली।**

**D.** **श्रेणी** – स्वतंत्र उपनिवेशों को इस श्रेणी में रखा गया था।

**Note :–** 7वें संविधान संशोधन (1956) के द्वारा इन श्रेणियों को भंग कर राज्य व केन्द्र शासित बनाए गए।

❖ स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय राजस्थान 19 रियासतें (अलवर, भरतपुर, करौली, धौलपुर, कोटा, बूँदी, झालावाड़, टोंक, किशनगढ़, डूँगरपुर, बाँसवाड़ा, शाहपुरा, प्रतापगढ़, मेवाड़, जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, सिरोही) 3 ठिकाने [नीमराणा (अलवर), लावा (टोंक), कुशलगढ़ (बाँसवाड़ा)] एवं '**अजमेर मेरवाड़ा**' का केन्द्र शासित प्रदेश था।

**Note :–** उपर्युक्त रियासतों को अंग्रेजों ने दो श्रेणियों में बाँट रखा था— **1. सेल्यूट स्टेट्स** (जिनको तोपों की सलामी दी जाती थी) **2. नॉन सेल्यूट स्टेट्स। मेवाड़ रियासत** को सर्वाधिक 19 तोपों की सलामी दी जाती थी तथा जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, भरतपुर, कोटा, बूँदी, टोंक व करौली रियासतों को 17 तोपों की सलामी दी जाती थी। ठिकानों को सलामी का अधिकार नहीं था साथ ही अपवाद स्वरूप **शाहपुरा** व **किशनगढ़** ऐसी रियासतें थीं जिन्हें तोप सलामी का अधिकार नहीं था।

❖ भारत सरकार के रियासती सचिवालय के निर्णयानुसार केवल वे रियासतें अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रख सकती थीं, जिनकी आय 1 करोड़ रूपये वार्षिक एवं जनसंख्या 10 लाख या अधिक हो।

❖ इस मापदण्डानुसार राजस्थान में केवल **जोधपुर, जयपुर, उदयपुर एवं बीकानेर** रियासतें ही इस शर्त को पूरा कर सकती थीं। अतः छोटी रियासतों के पास या तो भारतीय संघ में शामिल होने या फिर आपस

# 17 कृषि व पशुपालन की राजस्थानी एवं व्यावसायिक शब्दावली
## [Rajasthani & Professional Vocabulary of Agriculture and Animal Husbandry]

| क्र. | शब्दावली | | अर्थ |
|---|---|---|---|
| 1. | **सींव/सीम/सीमाड़ौ** | : | गांव की राजस्व सीमा, कांकड़, सरहद। |
| 2. | **सूड़** | : | वर्षा आने से पहले खेत के झाड़-झंकाड़ साफ करना। इस हेतु कुल्हाड़ी, मूठ एवं कुदाली इत्यादि उपकरण काम में आते हैं। |
| 3. | **पड़त** | : | बिना जुता हुआ खेत। |
| 4. | **मेर/मेढ़/लोर** | : | खेत की पाली अथवा मेढ़। |
| 5. | **बीड़, दड़** | : | घास भूमि, जो अनाज उगाने में असमर्थ हो। |
| 6. | **गोरम्यां** | : | गांव के सीमावर्ती घरों से लगे हुए खेत। |
| 7. | **सरण्या** | : | सारणों से सिंचित क्षेत्र। |
| 8. | **पणो, खड़ा** | : | तालाब या नाड़ी में पानी सूखने के बाद बची हुई सूखी मिट्टी। |
| 9. | **डांग, रूद, कांकड़,रखत** | : | उबड़-खाबड़ बीहड़ भूमि, जहाँ पर कृषि कार्य संभव नहीं है। |
| 10. | **खाड़ी, खड़ीन** | : | खेत का वह निचला भाग जहाँ पर वर्षाकाल में पानी एकत्र हो जाता है। |
| 11. | **खारच** | : | कृषि कार्य के लिये अनुपयुक्त लवणीय भूमि। |
| 12. | **हल, सीर** | : | खेत जोतने में प्रयुक्त उपकरण जो बैलों या ऊँट के द्वारा खींचा जाता है। |
| 13. | **निंनाणी, नेदाण** | : | फसल उगने के महीने भार में की जाने वाली खरपतवार की सफाई। इस हेतु कोंदाली, दंताली, कसी, कई, पावड़ो, कुदाली, पावड़ी, कुनी इत्यादि उपकरण काम में लिये जाते हैं। |
| 14. | **खरकटा, खरड़ा** | : | जेठ महीने में वर्षा के उपरान्त खेतों की बुवाई करना। |
| 15. | **हलोतरा, वावोतरा** | : | अच्छी वर्षा होने पर खेत जोतना। |
| 16. | **रोडला** | : | खेत बीजणे के कुछ ही दिन बाद भारी वर्षा हो जाने पर बीज का नष्ट हो जाना, फलस्वरूप दुबारा बीजणी (बुवाई) करनी पड़ती है। |
| 17. | **ऊरणा, ओरणा, बावणा** | : | फसल की बुवाई करना। |
| 18. | **बरसालू** | : | खरीफ की फसल जो जून-जुलाई में बोकर सितम्बर-अक्टूबर में काटी जाती है। |
| 19. | **ऊनालू** | : | रबी की फसल, जो अक्टूबर-नवम्बर में बोकर फरवरी-मार्च में काटी जाती है। |
| 20. | **सांठा** | : | सेलड़ी (गन्ना) का राजस्थानी भाषा में नाम |
| 21. | **जुड़ा,जुआ,जुहड़ा,जुहटा** | : | हल का खींचने के लिये बैलों के कंधे पर रखने हेतु लकड़ी का बना हुआ। |
| 22. | **केरण,पाटा, सावर,चावर** | : | लकड़ी का समतल पट्टा जो कि जमीन या खेत को समतल करने के काम में आता है। |
| 23. | **दंतालियो** | : | छः या आठ दाँतों वाला लकड़ी से बना उपकरण जोडोली या थोरा बनाने के काम में आता है। |
| 24. | **पावड़ा,पावड़ी, फावड़ा** | : | मिट्टी इकट्ठी करने के काम में आने वाला लोहे का उपकरण। |
| 25. | **कसी, कई, कोदाली** | : | लोहे की लगभग तीन इंच चौड़ी |
| | **कोंदाली** | | पट्टी, मोटी चद्दर से निर्मित जो खेत में खोदने के काम में आती है। |
| 26. | **हींसू** | : | कठोर या पथरीली जमीन को खोदने के लिये काम में आने वाला उपकरण, जो आगे से नुकीला होता है। |
| 27. | **नाँई** | : | हल का एक प्रकार जो बुवाई में काम आता है। |

# 19 राजस्थान के प्रमुख संत एवं सम्प्रदाय [Major Saints and Sects of Rajasthan]

- राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन के उदय के निम्नलिखित कारण थे—
  - मध्यकालीन राजनीतिक संक्रमण की स्थिति।
  - उत्तर भारत में भक्ति आन्दोलन का प्रसार।
  - इस्लाम का प्रवेश एवं सूफीवाद का विस्तार।
- राजस्थान में भी धार्मिक/भक्ति आन्दोलन की दो धाराओं का उदय हुआ—
  - **(1) सगुण परम्परा**—इसके अंतर्गत ईश्वर को **साकार रूप** मानकर, उसके गुणों का महत्त्व दिया जाता है। ये मूर्तिपूजा, संगीत, नृत्य, कीर्तन, भजन आदि द्वारा ईश्वर की उपासना करते हैं।
  - **(2) निर्गुण परम्परा**—इसके अंतर्गत ईश्वर के **निराकार रूप** की भक्ति होती है। इस परम्परा के संत ध्यान, साधना, निर्गुण ईश्वर के भजन आदि के द्वारा उपासना करते हैं तथा मूर्तिपूजा का निषेध करते हैं।

## राजस्थान के धार्मिक (भक्ति) आन्दोलन की मुख्य विशेषताएँ

- भक्ति संतों ने मोक्ष प्राप्ति के लिए ईश्वर के प्रेम व भक्ति पर बल दिया।
- विभिन्न धार्मिक कर्मकाण्डों एवं अनुष्ठानों आदि को अस्वीकार किया तथा परमेश्वर की एकता (सार्वभौमिकता) पर बल दिया।
- मोक्ष की प्राप्ति में जातिगत एवं लैंगिक भेदभाव को नकार कर **सामाजिक समानता** को बढावा दिया गया।
- सबसे महत्त्वपूर्ण बात-भक्ति संतों ने अपने संदेशो का प्रचार करने के लिए **स्थानीय/क्षेत्रीय भाषाओं** का प्रयोग किया है ताकि जन-साधारण को धर्म का वास्तविक रूप समझा सकें।
- ईश्वर से साक्षात्कार करने के लिए **गुरु-शिष्य परम्परा** को आवश्यक माना है।
- भक्ति संतों ने **ईश्वर से व्यक्तिगत संबंध** स्थापित करने की शिक्षा दी है।

## राजस्थान में निर्गुण परम्परा के संत/सम्प्रदाय

### संत धन्ना जी

- राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन का **श्रीगणेश** करने का श्रेय धन्ना को ही है। धन्ना का जन्म टोंक जिले के **धुवन गाँव** में 1415 ई. में एक जाट परिवार में हुआ।
- धन्ना उत्तर भारत के प्रसिद्ध भक्ति संत **रामानन्द** के शिष्य थे। ये **निर्गुण ब्रह्म** के उपासक थे। इन्होंने अपने पैतृक व्यवसाय कृषि कार्य में लीन रहते हुए ही आत्म शुद्धि का प्रयास किया।
- धन्ना गुरु भक्ति में बड़ी आस्था रखते थे। इन्होंने समाज में प्रचलित औपचारिकताओं व बाह्य आडम्बरों का विरोध किया।
- सिक्खों के 'आदि ग्रन्थ' में धन्ना द्वारा रचित 4 पद संग्रहित हैं।
- धुवन गाँव में धन्ना जी पैनोरमा बनाया गया है।

### संत पीपा जी

- खींचीवंशी राजपूत 'पीपा' (प्रतापसिंह) गागरोण (झालावाड़) के शासक थे।
- ये भी **रामानन्द के शिष्य** थे, इन्हें भी धन्ना के समान गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए भक्ति का आदेश प्राप्त हुआ।
- बाड़मेर के **समदड़ी गाँव** में पीपा का भव्य मंदिर है। यहाँ प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को इनके अनुयायी **दर्जी-समाज** का विशाल मेला लगता है।
- शिवदास गाडण कृत अचलदास खीची री वचनिका के अनुसार इन्होंने दिल्ली के तुगलक शासक **फिरोजशाह तुगलक** को हराया था।
- पीपा **टोड़ा रायसिंह** (टोंक) आए और यहाँ के शासक शूरसेन को अपना शिष्य बनाया। टोड़ा में ही पीपा ने तपस्या की थी। यहीं पर पीपा की गुफा स्थित है।
- पीपा से संबंधित साहित्य में पीपा की कथा, पीपा-परची, पीपा की वाणी, साखियाँ पद आदि मुख्य हैं।
- **'चितावनी जोग'** पीपा द्वारा रचित प्रमुख ग्रंथ है।
- पीपा ने मूर्ति-पूजा का विरोध करते हुए **नाम स्मरण** पर जोर दिया है तथा **प्राणि-मात्र की समानता** का समर्थन किया है।
- गागरोन दुर्ग में पीपा का निधन हुआ, जहाँ इनकी छतरी स्थापित है।

### संत जाम्भोजी

- **विश्नोई संप्रदाय** के प्रवर्तक जाम्भोजी का जन्म 1451 ई. की भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को पीपासर (नागौर) के पंवार वंशीय राजपूत परिवार में हुआ।
- इनके पिता **'लोहटजी'** एवं माता **'हंसा देवी'** थीं। अपने माता-पिता के देहान्त के बाद वे गृहत्याग कर **सम्भराथल** (बीकानेर) में रहने लगे, यहीं उन्होंने **विश्नोई संप्रदाय** (1485 ई.) की स्थापना की।
- इन्होंने अपने अनुयायियों हेतु **29 नियम** बनाए।
- जीव कल्याण तथा वृक्षों की रक्षार्थ प्राणोत्सर्ग करना, इस संप्रदाय का इतिहास रहा है।
- पर्यावरण के प्रति लगाव के कारण जांभोजी को **'पर्यावरण वैज्ञानिक'** भी कहा जाता है।
- 1536 ई. में बीकानेर की नोखा तहसील के **मुकाम तालवा** गाँव में इन्होंने समाधि ली।
- विश्नोई संप्रदाय का मंत्र था- **''विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणी।''**
- जांभोजी द्वारा रचित प्रमुख ग्रंथ- **जम्भ संहिता, जम्भसागर शब्दावली, विश्नोई धर्मप्रकाश** तथा **जम्भसागर** हैं।

# 20 राजस्थान के प्रमुख लोकपर्व, त्योहार एवं मेले (पशुमेले)
# [Major Folk Festivals, Festivals and Fairs (Animal Fairs) of Rajasthan]

सम्पूर्ण भारतवर्ष में राजस्थान अपनी बहुरंगी संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है, जो यहाँ के मेलें व त्योहारों, में प्रतिबिम्बित होती है। यहाँ वर्षभर मेलों का आयोजन होता है, जो सामाजिक समरसता, लोककला एवं पर्यटन को बढ़ावा देते हैं। यहाँ एक कहावत प्रचलित है-''**सात वार नौ त्योहार**'', ये पर्व व त्योहार लोगों के जीवन में खुशी और उमंग के परिचायक हैं।

## राजस्थान के प्रमुख मेले

### पुष्कर मेला

- अजमेर का पुष्कर हिन्दुओं की आस्था का एक प्रमुख केन्द्र है।
- **कार्तिक माह की पूर्णिमा** को लगने वाला यह मेला संभवतः राजस्थान का सबसे बड़ा मेला है।
- यह मेला देशी-विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केन्द्र है, यहाँ लाखों की संख्या में लोग इकट्ठा होते हैं, इसलिए इसे '**लक्खी मेला**' कहते हैं।
- यहाँ **ब्रह्मा जी का मंदिर**, **सावित्री माता का मंदिर**, पुष्कर सरोवर आदि का धार्मिक महत्त्व है। पुष्कर सरोवर में कार्तिक माह में दीपदान की परम्परा पौराणिक है।
- नागौरी बैल, जैसलमेरी-बीकानेरी ऊँट, घोड़े व अन्य मवेशियों का क्रय-विक्रय भी इस मेले की मुख्य विशेषता है।

### जीणमाता मेला

- सीकर जिले के **रैवासा गाँव** में **हर्ष की पहाड़ी** पर जीण माता का मंदिर स्थित है, जिसमें जीणमाता की **अष्टभुजी प्रतिमा** है, जिसके सामने घी और तेल के दो दीपक अखण्ड रूप से कई वर्षों से प्रज्ज्वलित हैं।
- यहाँ वर्ष में दो बार चैत्र और आश्विन मास के नवरात्रों में मेला लगता है, जिसमें राजस्थान के अतिरिक्त अन्य राज्यों के श्रद्धालु भी मनोकामना पूर्ति हेतु आते हैं।
- मुख्यतः राजपूत व मीणा जाति के लोग इस देवी की आराधना करते हैं।

### खाटूश्याम जी मेला

- सीकर जिले में शीश के दानी के रूप में विख्यात खाटूश्याम जी के मंदिर में **फाल्गुन माह** के शुक्ल पक्ष की **दशमी से द्वादशी** तक '**लक्खी मेला**' लगता है। यहाँ श्याम बगीचा व कुण्ड दर्शनीय हैं।

### भर्तृहरि का मेला

- अलवर से 40 कि.मी. दूर सरिस्का के जंगलों में उज्जैन के राजा भर्तृहरि की तपोस्थली पर वर्ष में दो बार **वैशाख** और **भाद्रपद** में 'लक्खी मेला' लगता है।
- शरीर पर भस्म मले, चिमटा व कमण्डल धारी साधुओं और लंबी दाढ़ी व बालों वाले सैकड़ों कनफटे बाबाओं से यह मेला'**लघु कुंभ**' का आभास कराता है।
- **कालबेलिया नृत्य** इस मेले का मुख्य आकर्षण है।

### डिग्गी के कल्याण का मेला

- टोंक जिले की मालपुरा तहसील में डिग्गीपुरी में भगवान विष्णु के स्वरूप राजा कल्याणजी का मेला **श्रावण मास की अमावस्या** को लगता है।
- इस मेले से राजा डिग्व व उर्वशी की कथा जुड़ी हुई है।
- कहा जाता है कि भगवान विष्णु की प्रतिमा के दर्शन से राजा डिग्व का कुष्ट रोग से कल्याण हुआ, इसलिए उन्होंने कल्याण जी का मंदिर बनवाया।
- इस मेले में राजस्थान के अतिरिक्त बंगाल, बिहार, असम से भी श्रद्धालु आते हैं।

### श्री महावीर जी मेला

- करौली जिले की हिण्डौन तहसील में गंभीर नदी तट पर स्थित चांदनगाँव में 24वें जैन तीर्थंकर महावीर स्वामी की स्मृति में प्रतिवर्ष '**चैत्र शुक्ल त्रयोदशी से वैशाख कृष्ण प्रतिपदा**' तक लक्खी मेला भरता है।
- यह जैनों का सबसे बड़ा मेला है, इसमें जैनियों के साथ-साथ मीणा, गुर्जर, जाट, अहीर, चर्मकार आदि जातियों के लोग भी शामिल होते हैं, अतः यह मेला अनूठी सर्वधर्म की मिसाल पेश करता है।
- '**किरपादास**' नामक चर्मकार की कथा इसी मेले से जुड़ी हुई है।

### करणी माता का मेला

- 'चूहों के मंदिर' के नाम से विख्यात करणीमाता का मंदिर बीकानेर की नोखा तहसील के **देशनोक** में स्थित है, जहाँ प्रतिवर्ष चैत्र व आश्विन नवरात्रों में मेला लगता है।
- करणी माता बीकानेर के राठौड़ों की कुल देवी हैं।
- यहाँ विदेशी पर्यटक भी बड़ी संख्या में आते हैं।

### शीतला माता मेला

- जयपुर जिले की **चाकसू तहसील** में शील की डूंगरी गाँव में **चैत्र कृष्ण सप्तमी-अष्टमी** को शीतला माता (सेढ़माता) का मेला भरता है।
- शीतला माता के मंदिर का निर्माण जयपुर के महाराजा **माधोसिंह** ने करवाया था। शीतला माता की खण्डित मूर्ति की पूजा की जाती है।
- यह मेला '**बैलगाड़ी मेले**' के नाम से प्रसिद्ध है।
- शीतला माता **मातृरक्षिका देवी** (चेचक से रक्षा) के रूप में पूजी जाती हैं।
- इन्हें उत्तर भारत में '**महामाई**', पश्चिमी भारत में '**माईअनामा**' तथा राजस्थान में **सेढ़/शीतला** व **सैढ़ल माता** के रूप में जाना जाता है।

# 21 राजस्थानी लोक कथाएँ [Rajasthani Folk Tales]

राजस्थानी लोक कथाएँ एवं गाथाएँ लोकमानस के लिए अभिव्यक्ति का माध्यम रहा है। ये सैकड़ों वर्षों से मौखिक परम्परा के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होती आयी हैं। इनके माध्यम से लोक की आध्यात्मिक भावना के साथ-साथ श्रृंगार रस, वीर रस आदि भी तुष्ट होते हैं। लोक गाथाओं के कथानकों में विषयगत विविधता है जिसे निम्न बिन्दुओं के अन्तर्गत समझा जा सकता है—

## राजस्थानी लोक गाथाएँ

### पौराणिक लोक गाथाएँ

- जिन गाथाओं के कथानक पौराणिक प्रसंगों पर आधारित हैं वे पौराणिक लोक कथाएँ कहलाती हैं। जैसे—
  - ✧ काला गोरां रो भारत।
  - ✧ लोक भारत स्यावकरण घोड़ो।
  - ✧ रामदला री पड़।
  - ✧ कृष्ण दला री पड़।
- पौराणिक घटनाओं को राजस्थानी लोक गाथाओं में तोड़-मरोड़कर पेश किया गया है। पौराणिक लोक गाथाओं के पात्र ईश्वरीय शक्ति से सम्पन्न होते हैं।
- पौराणिक लोक गाथाओं में **उपदेशात्मक प्रवृत्ति** दृष्टिगोचर होती है। इनमें धर्म-अधर्म, पाप-पुण्य, सुख-दुःख, कर्म-फल आदि का भी विवेचन मिलता है। 'रामदला री पड़' में सांसारिकता के झूठे मोह को नकारा गया है तथा कलयुग का चित्रण भी किया गया है। इसमें धर्मपथ पर चलने वालों के लिए कहा गया है—

**''धरमी बंदा धरम करे,**
**पकड़-पकड़ गऊ री पूंछ गंगा तरै।''**

### भक्तिपरक लोक गाथाएँ

- धर्म में अत्यधिक आस्था एवं लोक देवताओं के प्रति श्रद्धा व भक्ति के प्रसंगों पर आधारित लोक गाथाएँ जो लोक मानस में दैविक गुणों का आरोपण करती हैं, भक्तिपरक लोक गाथाएँ कहलाती हैं। जैसे — **रूपांदे, ब्यांवलौ, गोपीचन्द-भर्तृहरि, बगड़ावत, रामदेवजी, गोगागाथा, तेजाजी, पाबूजी री फड़** आदि।
- राजस्थान में लोकप्रिय **'ब्यांवलौ'** नामक लोकगाथा में पात्र का विवाह के बाद सांसारिक जीवन से मोहभंग हो जाता है और वह वैराग्य धारण कर लेता है।

### प्रेम प्रधान लोक गाथाएँ

- प्रेम प्रसंगों पर आधारित लोक गाथाएँ जैसे - **ढोला-मारू, मूमल-महेन्द्र, नागाजी-नागवन्ती, जसमा-ओडण, रामू-चनणा** आदि।
- प्रेम गाथाओं में **'बाळ पणों री प्रीत'** को अत्यधिक महत्व दिया गया है। जैसे - रामू और चनणा बालपन में ही एक-दूसरे के साथी बन गए थे। नागजी और नागवन्ती की प्रेमगाथा में भी एक स्थान पर कहा गया है कि बालपन के प्रेम को तोड़ना असंभव है।
- राजस्थानी प्रेमगाथाओं में **विरह भावना** को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। ढोला-मारू, नागजी-नागवंती, रामू-चनणा आदि दुखांत प्रेम गाथाएँ हैं।

### वीरता प्रधान लोक गाथाएँ

- इन गाथाओं में लोक वीरों की वीरता का चित्रण किया गया है। वीर गाथाओं में बगड़ावत, रामदेवजी, तेजाजी, गोगाजी, पाबूजी, निहालदे-सुल्तान आदि प्रमुख हैं।
- 'निहालदे-सुल्तान' नामक लोक गाथा में अमर रहने वाले कीर्ति के उपासक के लिए कौन-कौन सी विशेषताएँ होनी चाहिए इसका वर्णन किया गया है—

**''सदा रहै काँछ रो दृढ़, जुद सूं पीठ न मोड़े।**
**रण में रहै निसंक, सीस सत्रुवांरा तोड़े।**
**बोले नहीं बड़बोल, काठ नहीं मन का।**
**विपत देख न संचरे, गरब होय न धन का।**
**सिरणागत री रिच्छा करै, दया धर्म और चातुरी।**
**दस लच्छण रजपूत रां, नाम धरावै छातरी।।**

उक्त दस गुणों से सम्पन्न होने वाला व्यक्ति वीर कहलाने का अधिकारी है। राजस्थानी लोक गाथाओं के नायक इन सभी गुणों से विभूषित हैं।

- वीरता प्रधान ये गाथाएँ तत्कालीन समाज की अवस्थाओं, मान्यताओं और धारणाओं का भी उल्लेख करती हैं।
- राजस्थानी वीर गाथाओं में इन वीरों को सत्य और धर्म का रक्षक बताया गया है साथ ही उनकी दानवीरता की प्रशंसा की गई है।

**Note :-** राजस्थान में लोक गाथाओं के नामों के साथ कुछ विशिष्ट पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग भी मिलता है। जैसे—

- ✧ **पड़/फड़**—पट्ट पर अंकित चित्रों का लोक गाथा में प्रयोग करना, उदाहरण - पाबूजी री फड़, देवनारायणजी री फड़।
- ✧ **भारत**—भारत नाम से मिलने वाली गाथाओं में युद्धों की प्रधानता होती है। उदाहरण - 'माताजी रो भारत' और 'काला-गोरां रो भारत'
- ✧ **ब्यांवलो**—कथानायक के जन्म से लेकर विवाह तक के कार्यों का वर्णन करना, गरासिया जाति में 'ब्यांवलो' का अधिक प्रचलन है। उदाहरण - 'रामसापीर रो ब्यांवलो', मीरां बाई रो ब्यांवलो, अणची बाई रो ब्यांवलो, दयालु बाई रो ब्यांवलो, शंकर रो ब्यांबलो आदि।

## राजस्थानी लोक कथाएँ (वार्ताएँ)

- राजस्थानी संस्कृति एवं लोक जीवन में बहुत-सी **लोकवार्ताएँ** प्रचलित हैं। इनसे संबंधित **लोकगीत, कथागीत, वार्ताएँ, प्रबन्ध गीत, पवाड़े** आदि राजस्थानी लोक-साहित्य की अमूल्य निधि हैं।
- **पवाड़े** वीरता, वैराग्य, प्रेम, साहस आदि अनेक विषयों से संबंधित छंद हैं।
- हीर रांझा जो पंजाब की प्रसिद्ध प्रेमकथा है, राजस्थान में भी गायी जाती है। इस पर आधारित **नानूराणा का ख्याल** मिलता है।

# 24 राजस्थान की विभिन्न जनजातियाँ [Different Tribes of Rajasthan]

सामान्यतः सामाजिक एवं शैक्षणिक रूप से पिछड़े, दुर्गम स्थानों पर निवास करने, स्वच्छन्द वातावरण एवं विशिष्ट संस्कृति रखने वाले तथा अपनी मूल पहचान को सदियों से कायम रखने वाले समुदाय जनजाति या आदिवासी नाम से जाने जाते हैं। राजस्थान की जनजातियों भील, मीणा, गरासिया, सहरिया, साँसी, डामोर, कंजर प्रमुख हैं, जिनके सामाजिक संगठन, आर्थिक क्रियाकलाप एवं रीति-रिवाजों का उल्लेख किए बिना राजस्थान को संपूर्णता में नहीं जाना जा सकता है।

- राजस्थान भारत के सर्वाधिक जनजाति जनसंख्या वाले राज्यों में **चौथे स्थान** पर है। राज्य में 2011 की जनगणना के अनुसार 9,238534 अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या निवास करती है।
- 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में अनुसूचित जनजाति राज्य की कुल जनसंख्या का **13.48 प्रतिशत** है। कुल जनजाति जनसंख्या का **94.6%** भाग ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है।
- संविधान के **अनुच्छेद 342** के अनुसार राष्ट्रपति जनजातियों को अधिसूचित करते हैं। राजस्थान में वर्तमान में कुल **12 जनजातियाँ** अधिसूचित हैं।

| | | |
|---|---|---|
| 1. मीणा | 2. भील | 3. गरासिया |
| 4. सहरिया | 5. डामोर | 6. भीलमीणा |
| 7. कोलीढोर | 8. पटेलिया | 9. नायकड़ा |
| 10. कथौड़ी | 11. कोकना | 12. धानका |

**Note :–**

(1) राज्य में **मीणा** जनजाति सर्वाधिक संख्या में, जबकि **कोलीढ़ोर** सबसे कम संख्या में निवास करती है।

(2) **सांसी** एवं **कंजर** को जनजातियों में अधिसूचित नहीं किया गया है। यद्यपि इनकी विशिष्ट संस्कृति के कारण इन्हें जनजातियों की श्रेणी में ही पढ़ा जाता है।

- राजस्थान में सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति प्रतिशत वाले जिले क्रमशः **बाँसवाड़ा** (76.38%), **डूँगरपुर** (70.82%), **प्रतापगढ़** (63.42%) एवं **उदयपुर** (49.71%) (कुल जनसंख्या के हिसाब से उदयपुर में सर्वाधिक जनजातीय जनसंख्या (15,25,289) निवास करती है)।
- राज्य में न्यूनतम जनजातीय जनसंख्या वाला जिला **बीकानेर** है। यहाँ मात्र 0.33% जनजातीय जनसंख्या निवास करती है।
- राजस्थान के **बाँसवाड़ा, डूँगरपुर** एवं **प्रतापगढ़** जिले जनजातीय विस्तार के दृष्टिकोण से **पूर्णतः अनुसूचित जिले** बन गए हैं। इसके अतिरिक्त उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, पाली एवं सिरोही पाँच जिले के कुछ क्षेत्रों को भी अनुसूचित क्षेत्र में शामिल किया गया है।

**राजस्थान में जनजातियों का भौगोलिक वितरण**

| जनजाति | सर्वाधिक केन्द्रीकरण वाले क्षेत्र |
|---|---|
| **मीणा** | **जयपुर**, सवाईमाधोपुर, उदयपुर, अलवर, कोटा, बूंदी आदि जिलों में। |
| **भील** | **बाँसवाड़ा**, डूँगरपुर, चित्तौड़गढ़, सिरोही एवं उदयपुर जिलों में। |
| **गरासिया** | **सिरोही**, उदयपुर और पाली में ही निवास करते हैं। |
| **सहरिया** | सर्वाधिक केन्द्रीकरण बारां जिले की **शाहबाद** एवं **किशनगंज** तहसीलों में। |
| **डामोर** | सर्वाधिक डूँगरपुर जिले की **सिमलवाड़ा पंचायत समिति** में केन्द्रीकरण है |
| **कथौड़ी** | मुख्यतः **उदयपुर जिले** में इनका केन्द्रीकरण है। |
| **कंजर जाति** | राज्य के **हाड़ौती क्षेत्र** में सर्वाधिक केन्द्रीकरण है |
| **सांसी जाति** | मुख्यतः **भरतपुर**, धौलपुर एवं करौली जिलों में निवास करती है। |

# 27 राजस्थानी हस्तशिल्पकला [Rajasthani Handicraft]

हाथ से कलात्मक व आकर्षक वस्तुएँ बनाना हस्तशिल्प कहलाता है। राजस्थान को **'हस्तशिल्प कलाओं का खजाना'** कहा जाता है क्योंकि यहाँ के गाँवों व शहरों में निर्मित हस्तशिल्प न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी प्रसिद्धि पा रहे हैं। राज्य की राजधानी जयपुर को हस्तकलाओं का तीर्थ कहा जाता है।

## ब्ल्यू पॉटरी (जयपुर)

- जयपुर में **महाराजा रामसिंह** (1835-1880 ई.) के काल में ब्ल्यू पॉटरी निर्माण की शुरुआत हुई।
- यह मूल रूप से चीन व फारस की कला है, जो मुगलों के समय भारत आयी। यह कला पहले **'काम चीनी'** नाम से जानी जाती थी।
- दिल्ली के 'भोला' नामक कलाकार से जयपुर के **'कालू कुम्हार'** एवं **'चूड़ामन'** नामक व्यक्तियों ने यह कला सीखी।
- इसके अन्तर्गत चीनी मिट्टी के बर्तनों पर देवी-देवताओं, फूल-पत्तियों आदि की चित्रकारी की जाती है एवं तैयार बर्तनों को **800° सेन्टीग्रेड** ताप में पकाया जाता है।
- ब्ल्यू पॉटरी के रंगों में मुख्यतः नीला, हरा, मटियाला व ताम्बाई रंग काम में लिए जाते हैं।
- ब्लू पॉटरी के **उत्पाद** को 2009 में तथा **लोगों** के लिए 2017 में अलग-अलग ज्योग्राफिकल इंडिकेशन (G.I.) प्राप्त हो चुका है।
- **पद्मश्री** एवं **शिल्प गुरु** अवार्ड से सम्मानित जयपुर के **कृपालसिंह शेखावत** ने इस कला को अन्तरराष्ट्रीय पहचान दिलाई थी। जयपुर की **नाथीबाई** भी इसकी मुख्य कलाकार थी।

**Note :- ब्लेक पॉटरी** कोटा की, **सुनहरी पॉटरी** बीकानेर की, **कागजी पॉटरी** अलवर की तथा **पोकरण पॉटरी** जैसलमेर की प्रसिद्ध हैं। पोकरण पॉटरी के 2018 में ज्योग्राफिकल इंडिकेशन (G.I.) मिल चुका है।

## मीनाकारी (जयपुर)

- महाराजा मानसिंह प्रथम (1589-1614 ई.) द्वारा यह कला लाहौर से जयपुर लाई गई। (मूलतः फारसी कला है)
- आभूषणों पर मीनाकारी के लिए जयपुर की अन्तरराष्ट्रीय पहचान बन चुकी है। यहाँ सोने, चाँदी एवं ताँबे पर मीनाकारी की जाती है।
- जयपुर के अतिरिक्त **नाथद्वारा** एवं **बीकानेर** में भी मीनाकारी का काम होता है।
- परम्परागत रूप से सोने पर मीनाकारी के लिए काले, नीले, गरहेपीले, नांरगी एवं गुलाबी रंगों का प्रयोग होता है।
- इस कला के अन्तर्गत आभूषणों पर तरज की टिपाई करके रेखाओं को औजारों से गहरा किया जाता है और गहराई में काँच का रंग पीसकर भरा जाता है। जयपुर के कलाकार लाल रंग बनाने में कुशल हैं।
- जयपुर के **कुदरत सिंह** को मीनाकारी के लिए 'पद्मश्री' से सम्मानित किया जा चुका है। इनके अलावा काशीनाथ, दुर्गासिंह व कैलाशचन्द्र मीनाकारी के श्रेष्ठ कारीगर है।

## कुट्टी का काम (जयपुर)

- महाराजा रामसिंह के समय (1835-1880 ई.) से ही जयपुर कुट्टी के काम हेतु प्रसिद्ध है।
- इसके अन्तर्गत कागज, चाक, मिट्टी, गोंद आदि की लुगदी को साँचों में दबाकर चौपाये पशु, पक्षी इत्यादि आकृतियाँ बनाई जाती हैं, जिनको सूखने पर खड़िया मिट्टी से फिनिशिंग देकर इच्छित रंग से रंगा जाता है।

## गलीचे व दरियाँ (जयपुर)

- जयपुर गलीचा उद्योग हेतु प्रसिद्ध है। यहाँ के गलीचे बारीक धागे की बुनाई, गहरे रंग, डिजाइन और शिल्प कौशल के लिए जाने जाते हैं।
- गलीचा महंगा होने के कारण आजकल दरियों का प्रचलन बढ़ गया है। **जयपुर** व **बीकानेर** की जेलों में दरियाँ बनाई जाती है।

## सांगानेरी हैण्डब्लॉक प्रिंट (जयपुर)

- जयपुर का सांगानेर छपाई कला हेतु प्रसिद्ध है। सांगानेरी प्रिंट में **काला** व **लाल** दो रंग ही ज्यादा प्रयुक्त होते हैं।
- सांगानेरी छपाई लट्ठा या मलमल पर की जाती है तथा तैयार कपड़े पर धनिया, बैबून्दी, चक्र, अशर्फी आदि के छापे बनाए जाते हैं।
- इन छापे वस्त्रों को नदी में धोया जाता है।
- **मुन्नालाल गोयल** ने सांगानेरी प्रिंट को देश-विदेश में लोकप्रिय बनाया है।
- सांगानेरी हैंडब्लॉक प्रिंट को 2010 में G.I. टैग प्राप्त हो चुका है।

## थेवा कला (प्रतापगढ़)

- काँच पर सोने की अत्यंत बारीक, कमनीय एवं कलात्मक कारीगरी को 'थेवा' कहा जाता है। इसके लिए रंगीन बेल्जियम काँच का प्रयोग किया जाता है।
- थेवा कला में आभूषणों, सजावटी गुलदस्तों, फोटो फ्रेम, कंघा, इत्रदानी, दर्पण, ऐश ट्रे, गिलास, सिगरेट केस आदि को कलात्मक रूप दिया जाता है।
- विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्तियाँ भी थेवाकला से अलंकृत की जाती है।

# 29 राजस्थानी संस्कार एवं रीति-रिवाज [Rajasthani Rituals and Customs]

## राजस्थानी संस्कार-व्यवस्था

भारतीय ऋषियों की मान्यता है कि व्यक्ति- **''जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्चयते''** अर्थात् व्यक्ति जन्म से शूद्र होता है परन्तु संस्कार से वह विद्वता (द्विजत्व) को प्राप्त करता है। हिन्दू समाज में व्यक्ति के जीवन को शुद्ध एवं पवित्र बनाने हेतु तथा उसके सामाजिक, आध्यात्मिक, शारीरिक एवं बौद्धिक परिष्कार हेतु जिन धार्मिक अनुष्ठानों को अपनाया जाता है उन्हें संस्कार कहते हैं।

- ❖ संस्कारों का विभिन्न स्मृति ग्रंथों व सूत्र ग्रथों में उल्लेख मिलता है यथा- वैखानस सूत्र में 18 संस्कार, मनुस्मृति में 13 संस्कार, गौतमसूत्र में 40 संस्कारों का उल्लेख है।
- ❖ वर्तमान में **दयानन्द सरस्वती** के अनुसार संस्कारों की संख्या 16 है जो निम्नानुसार है—

**(1) गर्भाधान संस्कार**—धर्मानुकूल आचरण करते हुए गर्भ संधारण करना। चतुर्थी, अष्टमी, चर्तुदशी, पूर्णिमा व अमावस्या को गर्भाधान निषिद्ध माना गया है।

**(2) पुंसवन संस्कार**—गर्भाधान के दूसरे-तीसरे माह में भ्रूण की स्वास्थ्य वृद्धि एवं पुत्र संतान की कामना से संपादित किया जाता था। स्त्री के दाँए नाक में वटवृक्ष का रस डाला जाता था ताकि गर्भपात न हो।

**(3) सीमन्तोनयन संस्कार**—दुष्ट अप्राकृतिक शक्तियों से गर्भ की सुरक्षा हेतु चौथे से आठवें मास के दौरान यह संस्कार किया जाता था। इसमें मातृपूजन एवं नन्दी श्राद्व करते हुए पति अपनी पत्नी के केश संवारता है तथा तेजस्वी पुत्र की कामना करता है।

**(4) जातकर्म संस्कार**—बच्चे के जन्म के समय नाभिवर्धन से पूर्व पिता द्वारा आर्शीवाद युक्त मंत्रों का उच्चारण करते हुए शिशु को शहद या घी चटाया जाता है। ऐसा विनिष्टकारी शक्तियों से बचाव हेतु किया जाता है।

**(5) नामकरण संस्कार**—बच्चे के जन्म के 12वें दिन वर्ण को ध्यान में रखते हुए पुरोहित द्वारा राशि देखकर नामकरण किया जाता है।

**(6) निष्क्रमण संस्कार**—जन्म के चौथे मास में पिता द्वारा बच्चे को पहली बार जच्चाग्रह से बाहर लाया जाता है। ताकि वह सूर्यदर्शन करे और बाह्य वातावरण के अनुकूल हो सके।

**(7) अन्नप्राशन संस्कार**—जन्म के छठे मास में बच्चे को पहली बार अन्न का सेवन कराया जाता है।

**(8) चूड़ाकर्म (मुण्डन) संस्कार**—बालक का पहली बार मुण्डन किया जाता है। ताकि बच्चा दीर्घायु बने। पवित्र सार्वजनिक स्थल पर यह संस्कार 1, 2, 5 या 5 वर्ष की आयु पर किया जाता है। राजस्थान में इसे 'जडूला' कहते हैं।

**(9) कर्णछेदन संस्कार**—रोगों से बचाव हेतु प्राचीन एक्यूपंचर चिकित्सा विधि के अनुसार कानों को छेदा जाता है।

**(10) विद्यारम्भ संस्कार**—जन्म के 5 या 7 वर्ष में बच्चे को माता-पिता द्वारा अक्षर ज्ञान दिया जाता है।

**(11) उपनयन संस्कार (यज्ञोपवीत संस्कार)**—

- ❖ उपनयन का शब्दिक अर्थ है- 'गुरु के समीप ले जाना'
- ❖ इस संस्कार में बालक को यज्ञोपवीत पहनाया जाता था एवं दण्ड धारण किया जाता था। यज्ञोपवीत के तीन धागे पितृऋण, देवऋण व ऋषि ऋण के प्रतीक होते हैं।
- ❖ इस संस्कार के पश्चात् ही बालक गुरुकुल में अध्ययन हेतु भेजा जाता था।
- ❖ शूद्रों हेतु उपनयन संस्कार की व्यवस्था नहीं थी।

### द्विजों के लिए उपनयन संस्कार की व्यवस्था

| वर्ण | आयु | ऋतु | यज्ञोपवीत | छन्द | दण्ड |
|---|---|---|---|---|---|
| ब्राह्मण | 8 वर्ष | बसंत | रूई (सूत) का | गायत्री छन्द | पलास व बैल्व का दंड |
| क्षत्रिय | 11 वर्ष | ग्रीष्म | सन का | त्रिष्टुप छन्द | वट व खदिर का दंड |
| वैश्य | 12 वर्ष | शरद | ऊन का | जगती छन्द | पैल व उदुम्बर का दंड |

**(12) वेदारम्भ संस्कार**—उपनयन के बाद 1 वर्ष के भीतर गुरू के आश्रम में वेदों का अध्ययन आरम्भ करते समय होता था।

**(13) केशान्त (गोदान) संस्कार'**—इसके अन्तर्गत गुरुकुल में ब्रह्मचारी की दाढ़ी-मूँछ एवं केशों को काटा जाता था। शिष्य द्वारा यथाशक्ति आचार्य को गोदान भी किया जाता था।

**(14) समावर्तन संस्कार**—वेदाध्ययन के बाद होने वाला दीक्षांत समारोह, इसके बाद ब्रह्मचारी गुरुकुल से घर वापस जाता था। समावर्तन करके स्नान किया हुआ व्यक्ति ही **स्नातक** कहलाता था। ये तीन प्रकार के होते थे—

- **(i) व्रतस्नातक**—ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला किन्तु विद्याध्ययन न कर सकने वाला।
- **(ii) विद्यास्नातक**—विद्याध्ययन पूरा किया हो किन्तु ब्रह्मचर्य का पालन न करने वाला।
- **(iii) विद्याव्रत**—दोनों का पालन करने वाला। यह श्रेष्ठ स्नातक होता था।

**(15) विवाह संस्कार**—इसका उद्देश्य धर्मपालन एवं ग्रहस्थाश्रम में प्रवेश करना है। इसमें होम, पाणिग्रहण, सप्तपदी आदि धार्मिक अनुष्ठान किए जाते हैं।

# 31 राजस्थान के ऐतिहासिक पर्यटन स्थल [Historical Tourist Places of Rajasthan]

## उदयपुर संभाग के ऐतिहासिक पर्यटन स्थल

### उदयपुर

- महाराणा उदयसिंह ने 16वीं शताब्दी में इस शहर की स्थापना की थी। यहाँ के महल विशाल परिसर में अपनी कलात्मकता के लिए प्रसिद्ध हैं। राजमहलों के पास ही 17वीं शताब्दी का निर्मित जगदीश मन्दिर है। यहाँ की **पिछोला झील** एवं **फतेह सागर झील** मध्यकालीन जल प्रबन्धन के प्रशंसनीय प्रमाण है। उदयपुर को **झीलों की नगरी** कहा जाता है।
- आधुनिक काल की **मोती मगरी** पर महाराणा प्रताप की भव्य मूर्ति है, जिसने स्मारक का रूप ग्रहण कर लिया है।
- महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय द्वारा निर्मित **सहेलियों की बाड़ी** तथा महाराणा सज्जनसिंह द्वारा बनवाया **गुलाब बाग** शहर की शोभा बढ़ाने के लिए पर्याप्त है।

### ऋषभदेव (केसरियाजी)

- उदयपुर की खेरवाड़ा तहसील में स्थित यह स्थान **ऋषभदेव मंदिर** के लिए प्रसिद्ध है।
- जैन एवं आदिवासी भील अनुयायी इसे समान रूप से पूजते हैं। भील इन्हें कालाजी कहते हैं, क्योंकि ऋषभदेव की प्रतिमा काले पत्थर की बनी हुई है। मूर्ति पर श्रद्धालु केसर चढ़ाते हैं और इसका लेप करते हैं, इसलिए इसे केसरियानाथ जी का मंदिर भी कहते हैं। यहाँ प्रतिवर्ष मेला भरता है।

### गलियाकोट

- डूंगरपुर जिले में माही नदी के किनारे स्थित गलियाकोट वर्तमान में **दाऊदी बोहरा सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र** है। यहाँ **संत सैय्यद फखरुद्दीन की दरगाह** स्थित है, जहाँ प्रतिवर्ष इनकी याद में उर्स का मेला भरता है।

### चावण्ड

- उदयपुर से ऋषभदेव जाने वाली सड़क पर अरावली पहाड़ियों के मध्य 'चावण्ड' गाँव बसा हुआ है। महाराणा प्रताप ने हल्दीघाटी के युद्ध के पश्चात् चावण्ड को अपनी राजधानी बनाया था। प्रताप की मृत्यु भी 1597 में चावण्ड में हुई थी।

### चित्तौड़गढ़

- यह नगर अपने दुर्ग के नाम से अधिक जाना जाता है। ऐसा माना जाता है कि चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण चित्रांगद मौर्य ने करवाया था। समय-समय पर चित्तौड़ दुर्ग का विस्तार होता रहा है।
- **चित्तौड़ दुर्ग** को **दुर्गों का सिरमौर** कहा गया है। इसके बारे में कहावत है- **'गढ़ को चित्तौड़गढ़ बाकी सब गढ़ैया'**। चित्तौड़ के शासकों ने तुर्कों एवं मुगलों से इतिहास प्रसिद्ध संघर्ष किया।

सतबीस देवरी मंदिर, चित्तौड़गढ़

- चित्तौड़गढ़ दुर्ग में राणा कुम्भा द्वारा बनवाये अनेक स्मारक हैं, जिनमें नौ मंजिला प्रसिद्ध **कीर्ति (विजय स्तम्भ)** स्तम्भ, कुम्भश्याम मन्दिर, **शृंगार चँवरी**, कुम्भा का महल आदि शामिल हैं। दुर्ग में रानी पद्मिनी का महल, जैन तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित सात मंजिला जैन कीर्ति स्तम्भ, **जयमल-पत्ता के महल**, मीरा मन्दिर, **रैदास की छतरी**, तुलजा भवानी मन्दिर, सतबीस देवरी मंदिर आदि अपने कलात्मक एवं ऐतिहासिक महत्त्व के कारण प्रसिद्ध हैं।

### डूँगरपुर

- रावल वीर सिंह ने 14वीं शताब्दी में डूँगरपुर की स्थापना की थी। डूँगरपुर को **वॉगड़ राज्य की राजधानी** होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।
- डूँगरपुर अपने मध्यकालीन मन्दिरों, हरें रंग के पत्थर की मूर्तियों आदि के कारण प्रसिद्ध रहा है।
- यहाँ का गैप सागर जलाशय अपने स्थापत्य के कारण आकर्षित करता है। यहाँ का उदयविलास पैलेस सफेद संगमरमर एवं नीले पत्थरों से बना है, जो नक्काशी तथा झरोखों से सुसज्जित है।
- आदिवासियों से बाहुल्य डूँगरपुर में परम्परागत जन-जीवन की झांकी देखने को मिलती है।

### नाथद्वारा

- राजसमंद जिले में बनास नदी के किनारे बसे नाथद्वारा पूरे देश में **श्रीनाथजी के वैष्णव मन्दिर के लिए प्रसिद्ध** है। पुष्टिमार्गीय वैष्णवों का यह प्रमुख तीर्थस्थल है। यहाँ कृष्ण की उपासना उसके बालरूप में की जाती है।
- औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीति के कारण श्रीनाथजी की मूर्ति मथुरा

❖ दुर्ग में **त्रिनेत्र गणेशजी का मंदिर** स्थित है। रणथम्भौर दुर्ग की प्रमुख विशेषता है कि इस किले में बैठकर दूर-दूर तक देखा जा सकता है परन्तु शत्रु किले को निकट आने पर ही देख सकता है।

❖ यहाँ का **रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान** (बाघ अभयारण्य) पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र है।

## महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

**1. सोनीजी की नसियाँ जैन मंदिर स्थित है—**
(A) अलवर (B) अजमेर (C) बाड़मेर (D) जोधपुर

**2. अनूप पुस्तकालय स्थित है—**
(A) बाड़मेर (B) जैसलमेर (C) बीकानेर (D) नागौर

**3. केसरियानाथ जी का मंदिर स्थित है—**
(A) उदयपुर (B) डूँगरपुर
(C) करौली (D) सवाई माधोपुर

**4. कौलवी की गुफाएँ जो बौद्ध विहारों हेतु प्रसिद्ध हैं, किस जिले में स्थित हैं?**
(A) कोटा (B) बारां
(C) झालावाड़ (D) चित्तौड़गढ़

**5. निम्नलिखित में कौनसा सही सुमेलित नहीं है?**
(A) खानवा — भरतपुर
(B) गलियाकोट — प्रतापगढ़
(C) गोगामेढ़ी — हनुमानगढ़
(D) ऋषभदेव — उदयपुर

**6. राजस्थान पुलिस के प्रतीक के रूप में प्रयुक्त नौ मंजिला विजयस्तम्भ किस दुर्ग में स्थित है?**
(A) अजमेर दुर्ग (B) मेहरानगढ़ दुर्ग
(C) जैसलमेर दुर्ग (D) चित्तौड़ दुर्ग

**7. महाराणा प्रताप की मृत्यु किस ऐतिहासिक स्थल पर हुई थी?**
(A) गोगुन्दा (B) चावण्ड
(C) राजसमंद (D) उदयपुर

**8. निम्नलिखित को सुमेलित कीजिए—**

| सूची-I | सूची-II |
|---|---|
| (a) गुलाब बाग | (i) जोधपुर |
| (b) ओसियाँ | (ii) उदयपुर |
| (c) किराडू | (iii) कोटा |
| (d) क्षारबाग | (iv) बाड़मेर |

| कूट : | (a) | (b) | (c) | (d) |
|---|---|---|---|---|
| (A) | (i) | (ii) | (iii) | (iv) |
| (B) | (ii) | (i) | (iii) | (iv) |
| (C) | (ii) | (i) | (iv) | (iii) |
| (D) | (iii) | (i) | (ii) | (iv) |

**9. विश्व की सबसे बड़ी सौर घड़ी 'सम्राट यंत्र' कहाँ स्थित है?**
(A) जंतर-मंतर—दिल्ली (B) जंतर-मंतर—जयपुर
(C) जंतर-मंतर—वाराणसी (D) जंतर-मंतर—भोपाल

**10. मध्यकाल में जो स्थल नील की खेती हेतु प्रसिद्ध था—**
(A) बाड़ोली — चित्तौड़गढ़
(B) बयाना — भरतपुर
(C) पुष्कर — अजमेर
(D) नाथद्वारा — राजसमन्द

**11. अरबी-फारसी शोध संस्थान स्थित है—**
(A) जयपुर (B) टोंक (C) डूँगरपुर (D) भरतपुर

**12. प्राचीन ताड़पत्रों एवं पांडुलिपियों हेतु प्रसिद्ध जिनभद्र ज्ञान भण्डार कहाँ स्थित है?**
(A) जैसलमेर (B) बीकानेर (C) हनुमानगढ़(D) सीकर

**13. ऐतिहासिक झंडा तालाब किस जिले में स्थित है?**
(A) जोधपुर (B) पाली (C) नागौर (D) करौली

**14. चौरासी खंभों की छतरी स्थित है—**
(A) बूँदी (B) कोटा (C) बीकानेर (D) अलवर

**15. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए?**

| सूची-I | सूची-II |
|---|---|
| (a) जूनागढ़ दुर्ग | (i) जोधपुर |
| (b) सावित्री मंदिर | (ii) पुष्कर |
| (c) सिहाड़ग्राम | (iii) नाथद्वारा |
| (d) छीतर पैलेस | (iv) बीकानेर |

| कूट : | (a) | (b) | (c) | (d) |
|---|---|---|---|---|
| (A) | (i) | (ii) | (iv) | (iii) |
| (B) | (iv) | (ii) | (iii) | (i) |
| (C) | (ii) | (iv) | (i) | (iii) |
| (D) | (i) | (ii) | (iii) | (iv) |

**16. अलवर का बाला किला किसने बनवाया था?**
(A) प्रतापसिंह (B) जयसिंह
(C) विनयसिंह (D) हसन खां मेवाती

**17. जैन तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ का प्रसिद्ध मंदिर है—**
(A) बाड़ोली, बारां (B) केशोरायपाटन, बूँदी
(C) किराडू, बाड़मेर (D) नाकोड़ा, बाड़मेर

**18. अपने कलात्मक प्रवेश द्वार एवं छतरियों के लिए प्रसिद्ध 'गढ़सीसर सरोवर' स्थित है—**
(A) झालावाड़ (B) नागौर (C) जैसलमेर (D) जालौर

**19. 'तोलाराम जी का कमरा' जिसकी सुन्दरता का वर्णन शेखावाटी लोकगीतों में मिलता है, स्थित है—**
(A) चूरू (B) नागौर (C) सीकर (D) झुन्झुनूँ

**20. रणकपुर के जैन मंदिर (चौमुखा मंदिर) का शिल्पी था—**
(A) देपाक (B) मण्डन (C) विद्याधर (D) पूंजा

## उत्तरमाला

| | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **1.**(B) | **2.**(C) | **3.**(A) | **4.**(C) | **5.**(B) | **6.**(D) | **7.**(B) | **8.**(C) | **9.**(B) | **10.**(B) |
| **11.**(B) | **12.**(A) | **13.**(C) | **14.**(A) | **15.**(B) | **16.**(D) | **17.**(B) | **18.**(C) | **19.**(C) | **20.**(A) |

दक्ष की पुस्तकें Online Order करने के लिए www.dakshbooks.com पर जायें

दक्ष प्रकाशन
(A Unit of College Book Centre)
A-19 सेठी कॉलोनी, जयपुर (राज.)
फोन नं. 0141-2604302
Code No. D-708 | ₹ 680/-

इस पुस्तक को ONLINE खरीदने हेतु
WWW.DAKSHBOOKS.COM
पर ORDER करें
★ SPECIAL DISCOUNT + FREE DELIVERY ★